अष्टांगहृदयम् भाग – द्वितीय

(ऋषि वाग्भट्ट द्वारा रचित)

ज्वर चिकित्सा
रक्तपित्त चिकित्सा
कास चिकित्सा
श्वास चिकित्सा
राजयक्ष्मा चिकित्सा
हृदय रोग
मद्यपान चिकित्सा

अष्टांगहृदय

भाग – द्वितीय

ऋषि बाग्भट्ट द्वारा लिखित

संकलन एवं संपादन

श्री राजीव दीक्षित

प्रथम अध्याय

ज्वर चिकित्सा

अथाड्तोज्वरचिकित्सितं व्याक्ष्यास्यामः।

इति ह समाहुरात्रेयादयो महर्षयः।

अर्थः- निदान स्थान निरूपण के बाद ज्वर चिकित्सा का व्याख्यान करेंगें। ऐसा आत्रेयादि महर्षियों ने कहा था ।

अमाशय में स्थित वातादि दोष आमरस के साथ मिल कर तथा रसवाही स्त्रोतसों के मार्ग को अवरूद्ध कर ज्वर उत्पन्न करते हैं। ज्वर में या ज्वर के पूर्वरूप में प्रयत्न पूर्वक बल की रक्षा करते हुए लघंन करें। क्योंकि बल के अधीन आरोग्य की प्राप्ति होती हैं और आरोग्य के लिए चिकित्सा क्रम बताया गया हैं। लघंन के द्वारा दोषों के क्षय होने पर तथा अग्नि के प्रदीप्त होने पर और शरीर में लघुत होने पर आरोग्य, भूख, प्यास, भोजन में रूचि, भोजन का परिपाक, बल तथा ओज की वृद्धि होती हं।

विश्लेषण – ज्वर की समाप्ति बताते हुए ज्वर किस प्रकार उत्पन्न होता हैं इसका निर्देष किया गया हैं। आम दोष या त्रिदोषज जब आमरस के साथ होकर आमाशय में स्थित होते हैं तब अग्नि की उष्णता को बाहर त्वचा में फैला देते हैं। रसवाही स्त्रोतसों के बंद होने से पसीना नहीं निकल पाता। जिसकें कारण त्वचा उष्ण हो जाती हैं। दोष अग्नि के उष्मा को निकाल देते हैं। अतः जठरग्नि दुर्बल हो जाती हैं। दोष से आवृत अग्नि दोषों को पचाने में पूर्ण समर्थ नहीं होती हैं। यदि ऐसी अवस्था में अन्न दिया जाये तो उसका परिपाक समुचित न होकर आम दोष की अधिकता हो जायेगी। जब भोजन नहीं करेंगे तो अग्नि आमदोष को धीरे -धीरे पकाने लगेगी। इससे दोषों की क्षमता नष्ट हो जायेंगी और रसवाही स्त्रोत सों का मुख खुल जायेगा और पसीना निकलने लगेगा जिससे शरीर में हल्कापन, भूख, प्यास, भोजन में रूचि तथा मन में प्रसन्नता होगी। जब दोषों की क्षमता अधिक होती हैं तो दोषों का पाचन बहुत विलम्ब से होता हैं। लघंन यदि अधिक दिन तक किया जाये तो अधिक दुर्बलता हो जाती हैं। बल के घट जाने से शीघ्र स्वास्थ्य लाभ नहीं होता हैं। अतः आहार का प्रयोग करना चाहिए जिससे बल कम न हो।

सूत्र – ज्वर में दोष उभरे हुए हों या अधिक उभरे हुए हों, कफ बढ़ा हो, दोष चलायमान हों, उबकाई, मुख से स्राव, अन्न से द्वेष, कास तथा अतिसार वमन होता हो, भोजन करने के बाद तत्काल ज्वर हुआ हो और विशेष कर साम ज्वर हो तब वमन करने योग्य व्यक्ति को वमन

कराना प्रशस्त हैं। यदि इनसे विपरीत अवस्था हो तो वमन कराने से श्वास, अतिसार, सम्मोह, मूर्च्छा, हृदयरोग तथा विषम ज्वर होता हैं।

सूत्र – वमन के लिए मदन फल का चूर्ण पीपल के चूर्ण के साथ मिलाकर या मदन फल का चूर्ण इन्द्र जव(कटु इन्द्र जव) के साथ मिलाकर या मुलेठी चूर्ण के साथ मिलाक र मधु के साथ गर्म जल से या लवण के साथ गर्म जल से पान करें। अथवा पठोल पत्र, निम्बपत्र, कडुआ, खेखसा या बेलपत्र के स्वरस या क्वाथ से मदन फल का चूर्ण पान करें। गन्ने के रस अधिक मात्रा में पीकर कल्प स्थान में बताये हुए वमन कारण औषधि को पीकर बल तथा समय(जाड़ा, ब रसात, गर्मी) का विचार कर वमन का प्रयोग करें।

विश्लेषण – जाड़ा बरसात, गर्मी के अनुसार वमन द्रव्यों का विभाग कल्प स्थान में किया गया हैं। उसे विचार कर रोगी का बल और कोष्ठ की क्रूरता तथा मृदुता तथा मध्यता का विचारकर तीक्ष्ण, मृदु तथा मध्य द्रव्यों का विचार कर प्रयोग करें।

सूत्र – ज्वर पीडित व्यक्ति ज्वर में वमन करने पर या न करने पर बढ़े हुए दोषों के पाचन तथा शमन के लिए लघंन करें।

सूत्र – राख से ढका हुआ अग्नि जैसे पकाने में असमर्थ होता हैं, उसी प्रकार आमदोष से घिरा हुआ जठराग्नि अन्न को पचाने में असमर्थ होता हैं। अतः जब तक आमदोष का पाचन न हो जाए तब तक ज्वर के रोगी को उपवास करायें।

विश्लेषण – जब तक आमदोष का पाचन न हो तब तक उपवास कराने का निर्देष किया गया हैं। किन्तु आमदोष का पाचन देर से हो तो रोगी का बल घट जायेगा। अतः देर से आमदोष को पचाने में हल्का तथा हितकर भो जन देना चाहिए। ऐसा भी होता हैं कि आमदोष की प्रबलता से रोगी को खाने की इच्छा या रूचि नहीं होती हैं। ऐसी अवस्था में उसके मन के अनुकूल आहार देना चाहिए वह आहार हितकर हो या अहितकर हो। न खाने से शरीर क्षीण हो जायेगा अथवा रोगी की मृत्यु हो जायेगी। क्योंकि पहले क ह आये हैं कि बल के अधीन आरोग्य होता हैं। अतः बल की रक्षा आहार देकर करनी चाहिए।

सूत्र – वात-कफ ज्वर में प्यास लगने पर थोड़ा-थोड़ा उष्ण जल पिलाना चाहिए। यह उष्ण जल पान कफ को ढीला कर शीघ्र ही प्यास को दूर करता हैं और अग्नि को तीव्र कर तथा स्त्रोतेसों को मृदुकर दोषों का संशोधन करता हैं। इसके अतिरिक्त शरीर में छिपे हुए पित्त, वात, स्वर, मल तथा मूत्र का अनुलोमन करता हैं। उष्ण जल, निद्रा, शरीर की जड़ता तथा अरूचि को दूर करता हैं और प्राणों को धारण करता हैं। इसके विपरीत शीतल जलपान दोषों के समूह को बढ़ाता हैं।

विश्लेषण – ज्वर की अवस्था में कभी भी शीतल जल का प्रयोग नहीं करना चाहिए। कफ ज्वर में उक्त अष्टमांश, वात ज्वर में चतुर्थांष तथा पित्त ज्वर में अर्द्धांश शेष जल पीने को देना चाहिए। यदि ज्वर की प्रथम अवस्था में केवल उष्ण जल का सेवन किया जाए तो बिना किसी औषधि के ज्वर समाप्त हो जाता हैं।

सूत्र – पूर्वोक्त प्रकार से उष्ण जल का उत्तम गुण होने पर भी केवल पित्त के प्रकोप में तथा पित्त की प्रधानता होने पर और अन्तर्दाह, दाह, विष तथा मद्यपान, ग्रीष्म ऋतु, उरक्षत से क्षीण तथा रक्त पित्त में उष्ण जल पान का निषेध हैं।

विश्लेषण – उष्ण जलपान का रोग विशेष एवं अवस्था विशेष में निषेध किया गया हैं। इसका तात्पर्य यह हैं कि गर्म रहते हुए जल का पान उपरोक्त अवस्थाओं में नही करना चाहिए। किन्तु उष्ण जल जब शीतल हो जाए तब उसे पान कराने में कोई हानि नहीं हैं। क्योंकि उष्ण किया हुआ जल शीघ्र पचता हैं और शीतल जल का परिपाक देर से होता हैं। शीतल जल पान करने पर 6 घंटे में पचता हैं और गरम जल शीतल हो तो तीन घंटे में पचता हैं। इसके अतिरिक्त गर्म किया हुआ गुनगुना जल पीने से डेढ़ घंटे में परिपक्व होता हैं।

सूत्र – नागर मोथा, लालचंदन, सोंठ, सुगन्धवाला पित्त पापड़ा तथा खस इन द्रव्यों के साथ पकाया हुआ जल पीने के लिए ऊपर बताये हुए रोगों में देना हितकर तथा पाचक हैं और प्यास तथा ज्वर को दूर करने वाला हैं।

विश्लेषण – इन द्रव्यों के साथ जल पकाने के लिए इन सब द्रव्यों को मिलाकर एक वर्ष (10 ग्राम) को चौसठ गुना (640 ग्राम) जल में पकावे। जब 320 ग्राम जल शेष रहे तो छान कर पीने को दें। दिन में पकाये हुए जल को और सूर्यास्त के बाद पकाए हुए जल को रात में पिलाए तथा यदि पेया विलेपी देना हो तो उसी जल में देना चाहिए।

सूत्र – पित्त के बिना शरीर में गर्मी नहीं होती हैं और ज्वर बिना गर्मी के नहीं होता हैं। अतः सभी प्रकार के ज्वर में पित्त विरोधी वस्तुओं का सेवन नहीं करना चाहिए। यदि ज्वर में पित्त की प्रधानता हैं तो पित्त विरोधी वस्तुओं का अधिक रूप में सेवन नहीं करना चाहिए।

सूत्र – ज्वर में स्नान, मालिश , उबटन, परिषेक तथा लघंन का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

विश्लेषण – लघंन का तात्पर्य शरीर को लघु बनाने से हैं। जिन क्रियाओं से शरीर की लघुता होती हैं वे क्रियाएं व्यायाम, मैथुन, पाचन द्रव्य, उपवास, वमन, विरेचन, स्वेदन आदि हैं। उनमें उपवास स्वरूप लघंन ज्वर में करना चाहिए। शेष व्यायाम आदि लघंन क्रिया नहीं करनी चाहिए।

सूत्र – जिस प्रकार अजीर्ण जन्य उदर शूल में शूल नाशक औषधि नहीं दी जाती हैं, पाचन के अभाव में शूल नाशक औषधि न पचने के कारण शूल अधिक बढ़ा देता हैं, इसी प्रकार साम ज्वर में तीव्र पीड़ा होने पर भी ज्वर नाशक औषधि नहीं देना चा हिए। क्योंकि आमदोष से किए हुए अग्नि के ऊपर पुनः आमदोष की अधिकता हो जाती हैं। आमदोष से युक्त आमाशय के होने पर यदि दूध पिलाया जाये तो साँप को दूध पिलाने से जैसे विष की वृद्धि होती हैं वैसे ही शरीर में आमदोष से विष की वृद्धि हो जाती हैं।

विश्लेषण – आम ज्वर में औषधि तथा दूध देना निषिद्ध किया गया हैं। किन्तु शमन तथा संशोधन औषध का निषेध तथा पाचन और पाचन औषधि का प्रयोग करना चाहिए। जैसा कि "साम पाचनदीपनम्" कहा गया हैं। उदाहरण में शूल रोग दिया गया हैं। यदि अजीर्ण जन्य शूल होता हैं तो शूल नाशक औषधि का पाचन न होने से शूल बढ़ जाता हैं। उसमें पाचन औषधि का प्रयोग लाभकर होता हैं। इसी प्रकार ज्वर नाशक औषध का प्रयोग निषेध तथा पाचन औषध का विधान किया गया हैं। ज्वर आमदोष सके होता हैं। दूध पीने से आमदोष की वृद्धि होती हैं। इससे ज्वर का वेग बढ़ जाता हैं। अतः आम ज्वर में दूध का निषेध किया गया हैं किन्तु आजकल इस चिकित्सा के युग में विषैले वत्सनाभ आदि द्रव्यों से निर्मित ज्वर नाशक तथा विषाक्त होते हैं। इन औषधियों के प्रयोग होने पर दूध का प्रयोग लाभदायक होता हैं तथा वातज्वर, पित्त-ज्वर एवं जीर्ण ज्वर में दूध लाभकारी होता हैं। केवल क फ ज्वर में दूध हानिकारक हैं।

सूत्र – उदर्द, पीनस तथा श्वास रोग, जंघा, गाँठ तथा अस्थि शूल और वात -कफ ज्वर में स्वेदन करना उत्तम होता हैं। वह स्वेदन पसीना, मूत्र, पुरीष तथा वायु को निकालता हैं और अग्नि को प्रदीप्त करता हैं।

विश्लेषण – उदर्द आदि रोग में अनाग्नि स्वेदन जैसे गर्म घर में निवास, गरम पहनना, कपड़ा ओढ़ना तथा उपवास कराना चाहिए और इससे लाभ न हो तो गर्म बालू की पोटली बनाकर जंघा, पर्व तथा अस्थियों पर स्वदेन करना चाहिए।

सूत्र – सभी प्रकार के ज्वरों में स्नेह पान विधि अध्याय में स्नेहपान के बाद रोगी को आचारों का सेवन करना बताया हैं उन सभी आचारों का पालन करना चाहिए। जैसे गर्म जल पीना, अधिक हवा में न बैठना, दिन में न सोना, मल-मूत्रों का वेग न रोकना आदि।

सूत्र – ज्वर की आम, पच्यमान, पक्व - इन अवस्थाओं में लघंन स्वेदन काल (समय सात दिन पर्यन्त) यावगू तथा तिक्त रस का प्रयोग दोषों को पाचन करने वाले होते हैं।

विश्लेषण – ज्वर की आमावस्था में लघंन तथा स्वेदन दोषों का पाचन करते हैं, और सात दिन में सात धातुगत आमदोष का पाचन होता हैं। यदि इनमें पाचन हुआ तो पाचन द्रव्य से बनाया हुआ यवागू या तिक्तरस प्रधान द्रव्य का प्रयोग करना चाहिए। इनमें दोषों का अच्छी तरह पाचन हो जाता हैं। यह क्रम कुछ दिन ज्वर के बने रहने पर किया जाता हैं और अन्य एक दो दिन रहने वाले ज्वर में केवल लघंन किया जाता हैं।

सूत्र – शुद्ध वातज, क्षयज, आगन्तुक जीर्ण ज्वर वाले रोगियों को लंघन नही कराना चाहिए और इनमें शमन कराना हितकर होता हैं किन्तु वह शमन शरीर का कृश करने वाला नहीं। उन ज्वरों में यदि साम ज्वर का लक्षण हो तो लंघन द्वारा दोषों शोषण नहीं हुआ हैं ऐसा समझना चाहिए। द्विविधाय क्रम अध्याय में सम्यक लंघन, अति लंघन तथा अलंघन के लक्षण बताये गये हैं और लंघन के दोष तथा गुण बताये गये हैं। लंघन विधि को वहाँ देखना चाहिए।

सूत्र – सम्यक् लंघन के लक्षण जब रोगी में दिखाई पड़े तब मण्डपूर्वक पेया विलेपी आदि से रोगी की परिचर्या करें। जो ज्वर जिस दोष से उत्पन्न हो उसकी दोष शामक तथा औषधों के जल से मन्द पेय विलेपी तथा यूष को क्रमशः खाने को दे। जिस प्रकार पतली लकड़ी से अग्नि प्रदीप्त होता हैं उस प्रकार मण्ड आधि से जठराग्नि प्रदीप्त होता हैं। यह क्राम छः दिन तक या जब तक ज्वर मृदु न हो जाये तब तक कराना चाहिए।

विश्लेषण – आमदोष से अग्नि के अधिक मन्द हो जाने से ज्वर उत्पन्न होता हैं। लंघन करने से अग्नि और अधिक मन्द हो जाता हैं अतः हल्का मण्ड, पेया, विलेपी तथा दूध का प्रयोग करने से धीरे-धीरे अग्नि दीप्त होते हुए प्रदीप्त होकर सभी आहारों को पकाने में समर्थ हो जाता हैं। जिस प्रकार थोड़ा अग्नि पतली -पतली लकड़ियों से दीप्त होता हैं । यदि थोड़ा अग्नि पर मोटी लकड़ी रख दिया जाये तो वह अग्नि बुझ जाता हैं। उसी प्रकार लंघन के तत्काल बाद यदि सामान्य भोजन लिया जाये तो जठराग्नि अत्याधिक मन्द हो जाता हैं। यह औषध से बनाई गई पेया लघु होती हैं और ज्वर नाशक औषध के संसर्ग से ज्वर नाशक भी होती हैं।आहार होने से प्राणों का अवलम्बन करती हैं।

सूत्र – सोंठे, धनियाँ, पीपर तथा सेन्धानमक इन सब के साथ सिद्ध धान की लावा की (छः गुने पानी में पकाई हुई) लाजपेया जो पचने में शीघ्रकारी होती हैं उसको पहले पीने को दो। यदि रोगी खट्टी वस्तु चाहने वाला हो तो खट्टा अनार के दाना का रस मिलाकर पीने को दें।

सूत्र – यदि ज्वर में अतिसार या पित्त की अधिकता हो तो लाजपेया में सोंठ का चूर्ण तथा शहद मिलाकर शीतल होने पर प्रयोग करें। यदि ज्वर में बस्ति, पार्श्व तथा शिरः शूल हो तो भटकटैया तथा गोखरू के जल से सिद्ध लाज पेया पीने को दे। यदि ज्वरातिसार हो तो पिठवन, बरियार बेल का गुदा, सोंठ, नील कमल तथा धनिया के पकाये हुए जल से सिद्ध दीपन पाचन करने वाली पेया में खट्टे अनार का रस मिलाकर पीने को दें। जिस ज्वर में हिचकी, वेदना, श्वास तथा कास हो तो लघुपंच मूल (सरिवन, पिठवन, छोटी कटेरी, बड़ी कटे री तथा गोखरू) के पकाये हुए जल से सिद्ध लाजपेया पान कराये। यदि ज्वर का रोगी कफ से पीड़ित हो तो बृहत् पंच मूल के (बेल का गुदा, अरणी, गम्भारी, सोनापाठा तथा पाढ़ल) पकाये हुए जल से सिद्ध यव की पेया देना चाहिए। यदि ज्वर में मल विबन्ध हो तो पीपर तथा आँवला के पका ये हुए जल से सिद्ध यव की यवागू को घी में भूनकर मल दोष को अनुलोमन करने के लिए प्रयोग करें। यदि ज्वर में शूल के साथ कोष्ठ बद्धता हो और गुदा में कैंची से काटने जैसी पीड़ा हो तो चव्य, पीपरमूल, मुनक्का, आँवला तथा सोंठ इन सबों के साथ पकाये जल से सिद्ध लाजपेया का पान कराये। यदि ज्वर में पसीना तथा निद्रा आती हो और रोगी प्यास से पीड़ित हो तो खट्टी वैर, वृषाविल, शालपर्णी, पृश्निपणि तथा बेल का गुदा के पकाये जल से सिद्ध लाजपेया मिश्री, आँवला तथा सोंठ का चूर्ण मिलाकर पान कराये। यदि ज्वर में प्यास, वमन तथा परीदाह हो तो ज्व र नाशक लाजपेया को मधु मिलाकर पान कराये। इसी प्रकार पेया के लिए बताई गई औषधियों से ही रस, यूष आदि का निर्माण कर प्रयोग करें।

विश्लेषण – ज्वर में विभिन्न उपद्रवों के होने पर मण्ड, पेया, यवागू, रस तथा यूष देने का विधान हैं। मण्ड, पेया, विलेपी, तथा यवागू ये सब यव, चावल तथा धान की लावा से बनाये जाते हैं। यूष दाल वाले अन्न, मूँग, मसूर, अरहर आदि से बनाया जाता हैं। जिन औषधियों से पेया आदि बनाये जाते हैं, उन्हें मिलित 10 ग्राम लेकर 640 ग्राम जल में पकाने के बाद आधा शेष, चौदह गुना जल से मण्ड, आठ गुना जल से पेया, छः गुना जल से यवागू, तथा यूष बनाया जाता हैं। यह पीने योग्य होने पर पेया, और गाढ़ा होने पर जिसमें धान का लावा का चावल या जव की आटा पका हुआ दिखाई देता हैं यवागू जिसे चावल, धान की लावा, जब पकने पर ऊपर से जल को छान लेते हैं उसे मण्ड, जिस पकते हुए जल में दाल न दि खाई पड़े केवल जल दिखाई पड़े उसे यूष बनाया जाता हैं।

सूत्र – मद्य से उत्पन्न विकार में, नित्य मद्य पीने वाले पित्त के स्थान में कफ के जाने पर, ग्रीष्म ऋतु में, पित्त-कफ की अधिकता में, प्यास, वमन तथा दाह से पीड़ित होने पर और ऊर्ध्वग रक्त पित्त में पेया का प्रयोग न करें।

सूत्र – ऊपर बताये हुए व्यक्तियों को तथा ग्रीष्म काल में ज्वर को दूर करने वाले फलों के रस या जल के साथ सिद्ध धान की लावा में मिश्री मिलाकर तर्पण के लिए पान कराये। जब तर्पण पच जाये तब भूख लगने पर यवागू तथा भूजे हुए चावल के भात भक्षण करे। अथवा जल तथा नमक मिलाकर मूँग तथा यवागू या भात खाय। इस प्रकार ज्वर ल गने पर छः दिन तक बल तथा दोषों की रक्षा करते हुए व्यतीत करें।

विश्लेषण – तर्पण का अर्थ शरीर को तृप्त करना हैं। जिन आहारों से शरीर या मन प्रसन्न होता हैं उसे तर्पण कहा जाता हैं। फलों के रस या यूष देने से शरीर तृप्त हो जाता हैं। इनका जब पाचन हो जाये तब भूख लग ने पर यवागू या भात या प्रकृति के अनुसार हल्का भोजन रोगी की इच्छा के अनुसार दें।

सूत्र – लंघन आदि क्रियाओं से ज्वरकारी दोषों के पक जाने पर शेष दोषों को पचाने के लिए तथा शान्त करने के लिए कषाय प्रशस्त होता हैं। विशेषकर तिक्त रसवाले द्रव्य पित्त ज्वर में और कटु रस वाले द्रव्य कफ ज्वर में प्रयोग करें। कषाय रस के पित्त तथा कफ को दूर करने वाले होने पर भी नवीन ज्वर में प्रशस्त नही हैं। क्योंकि कषाय रस प्रधान द्रव्य मलों का अवरोध करने से विषम ज्वर उत्पन्न करता हैं और भोजन में अरूचि, उबकाई, हिचकी, तथा आध्मान आदि को भी उत्पन्न करता हैं।

विश्लेषण – नव ज्वर में कषाय के साथ दिन में सोना, स्नान, उबटन लगाना, मैथून, क्रोध, अधिक हवा में बैठना तथा व्यायाा नहीं करना चाहिए।

सूत्र – ज्वर नाशक कषाय हैं। उन्हें बचाने के लिए दिया जाता हैं किन्तु कषाय रसवाले द्रव्य का क्वाथ नहीं दिया जाता हैं। क्योंकि मलों की रूकावट कर चिकारी विषम ज्वर को उत्पन्न करता हैं और दोष धातुओं में प्रविष्ट हो जाते हैं।

सूत्र – कूछ आचार्यों का मत हैं कि ज्वर लग ने के सात दिन के बाद ज्वर नाशक औषध देना चाहिए और कुछ आचार्यों का मत हैं कि दस दिन के बाद औषध देना चाहिए। कुछ आचार्यों का सिद्धान्त हैं कि हल्का अन्न खाने के बाद औषध देना चाहिए किन्तु तीनों सिद्धान्त में आम दोष की प्रधानता रहने पर ज्वर नाशक औषध नहीं देना चा हिए। क्योंकि तीव्र ज्वर होने पर दोषों के वेग उभर जाते हैं। अथवा दोषों के अधिक रूप में संचित होने पर तन्द्रा तथा स्वमित्य करने वाले दोष होते हैं। उस समय यदि ज्वरनाशक औषध दिया जाये तो औषध अपक्व होकर पुनः ज्वर के वेग को बढ़ा देता हैं।

विश्लेषण – सात दिन में सप्त धातुगत मल का पाचन हो जाता हैं। इस सिंद्धान्त वाले सात दिन के बाद लघु अन्न खिलाकर आठवें दिन तथा पित्त का पाचन दश दिन में होता हैं। अथ - हल्का अन्न खिलाकर ग्यारहवें दिन और कफ का पाचन ग्यारहवें दिन होता हैं किन्तु कफ में आमता अधिक होती हैं। अतः जब कभी उसका पाचन हो जाये तो हल्का अन्न खिलाकर ज्वरनाशक औषध देना चाहिए।

सूत्र – जब ज्वर मृदु हो जाये, देह हल्का हो जाये और मल चलायमान हो तो शीघ्र ज्वर लगने पर भी ज्वरनाशक औषध देना चाहिए।

सूत्र – नागरमोथा व पित्त पापड़ा या सोंठ तथा पित्त पापड़ा या यवासा तथा पित्त पा पड़ा, अथवा पाठा, खस तथा सुगन्ध बाल या चिरायता, गुडुची, नागरमोथा तथा सोंठ इन सभी का विधि-पूर्वक शीत कषाय अथवा पकाया हुआ क्वाथ पान कराये इन पाँच कषायों को देश काल तथा रूचि के अनुसार प्रयोग करें। ये कषाय दोषों को पचाने वाले तथा ज्वर, अरोचक, प्यास, मुख का फीकापन और अपचन को नाश करने वाले हैं।

सूत्र – 1. कलिड़क(इन्द्र यव), परवल का पत्ता तथा कुटकी, (संतत ज्वर में), 2. परवल का पत्ता, सारिवा, नागरमोथा, पाठा तथा कुटकी (सतत ज्वर में), 3. परवल का पत्ता, नीम की छाल, त्रिफला (हर्रे, बहड़ा, आँवला) मुनक्का, नागरमोथा तथा इन्द्र यव, 4. चिरायता, गुडुची, रक्त चन्दन तथा सोंठ, और 5. आँवला, नागरमोथा, गुडुची तथा शहद (चातुर्थक ज्वर में) ये पाँचों योग क्रमशः सन्तत आदि पाँचों ज्वरों को शांत करते हैं।

विश्लेषण – इन क्वाथ द्रव्यों को 25 ग्राम लेकर तथा कूटकर 400 ग्राम जल में पकावे। पकाते समय पात्र का मुख खुला रखें। जब 50 ग्राम जल बच जाये तब छानकर मधु मिलाकर सुबह तथा सायंकाल सूर्य के डूबने के पहले पिलायें।

सूत्र – वात ज्वर में यवासा, गुडुची तथा नागर मोथा सम भाग को क्वाथ अथवा पिपरामूल, गुडुची तथा सोंठ समभाग इन सभी को क्वाथ देना चाहिए। अथवा लघु पंचमूल (सरिवन, पिठवन, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, गोखरू) इन्द्रयव का क्वाथ दें। पित्त ज्वर में नागरमोथा तथा कुटकी समभाग इन सभी को क्वाथ शहद मिलाकर पान कराये। अथवा नागरमोथा, पित्त पापड़ा, यवासा, चिरायता समभाग इन सबों का क्वाथ पान करायें। कफ ज्वर में वस्तकादि गण (इन्द्र जव, मूर्वा, वमनेटी, कुटकी, मरिच, अतवीस, मुण्डी, इलायची, बड़ी पाठा, जीरा, जायफल, अजवायन, सरसो, वच, स्याह-जीरा, हींग, बायविडंग, पशुगन्द, अजमोद) तथा पच्कील पीपर, पिपरामूल , चब्य, चत्रकसोंठ इन सभी का क्वाथ पिलाना चाहिए। वातकफ ज्वर में हर्रे, पिपरामूल, अमलतास, कफअकी तथा नागरमोथा समभाग इन सभी को क्वाथ पीड़ा विबन्ध युक्त वात तथा कफ ज्वर में दीपन-पाचन होता हैं।

सूत्र – वात-पित्त ज्वर में मुनक्का, महुआ, मुलेठी, लोघ, गम्भारी, सारि वा, नागरमोथा, आँवला, हाडबेर, कमल का फूल, नागकेशर, कमलनाल, लालचन्दन, खस नीलकमल तथा फालसा समभाग इन सभी का चूर्ण 25 ग्राम का फाण्ठ या हिम में द्राक्षादिगण के द्रव्य तथा चमेली के फूल से सुगन्धित कर मधु मिश्री तथा धान का लावा मिलाकर पान कराये। यह वात -पित्त ज्वर को जीत लेता हैं और यह योग ज्वर, मदात्यय, वमन, मूर्च्छा, दाह, थकावट, चक्कर आना ऊर्ध्वग रक्तपित्त, प्यास तथा कामला रोग को भी दूर करता हैं।

सूत्र – कुटकी को जल के साथ पीसकर पवित्र तथा नवीन मिट्टी के पात्र में पकावें और कपड़ा में रख तथा निचोड़ कर रस निकाल लें और घृत के साथ पान कराये। यह ज्वर तथा दाह को शान्त करता हैं।

सूत्र – वात-कफ जन्म ज्वर में वच, कुटकी, पाटा, अमल तास तथ कुरैया का छाल समभाग इन सभी के क्वाथ में पीपर का चूर्ण मिलाकर या गुडूची के क्वाथ में पीपल चूर्ण मिलाकर पान कराये।

सूत्र – वात-कफ जन्य ज्वर में कण्ठकारी, सोंठ तथा गुडूची समभाग इन सभी के क्वाथ में पीपल का चूर्ण मिलाकर पान कराये। यह वात -कफ जन्य ज्वर श्वास रोग, कास -रोग पीनस तथा शूल को दूर करता हैं।

सूत्र – हर्रे, धनियाँ, नागरमोथा, सोंठ, कट्तृण (गन्ध तृण), पित्त पापड़ा, जायफल, मीठावच, वमनैठी तथा देवदारू, समभाग इन सभी के क्वाथ में घृतभृष्ठ हींग तथा मधु मिलाकर, वातकफ ज्वर में पान कराये। यह वात -कफ ज्वर में ही उदरशूल, हृदयशूल तथा पार्श्व वेदना और कण्ठ रोग, मुखरोग शोथ, कास एवं श्वास रोग को दूर करता हैं।

सूत्र – आरग्वधादिगण के क्वाथ में मधु मिलाकर पान कराने से अथवा कुटकी, अडूसा, खस, त्रायमाणा, त्रिफला(हर्रे, बहेड़, आँवला) तथा गुडूची समभाग इन सभी के क्वाथ में मधु मिलाकर पान कराये। यह पित्त-कफ ज्वर को दूर करता हैं।

सूत्र – कण्टकारी, देवदारू, हल्दी, नागर मोथा, परवल का पत्ता, नीम का छाल, त्रिफला (हर्रे , बहेड़ा आँवला) तथा कुटकी समभाग इन सभी का क्वाथ में मधु सन्निपात ज्वर में पान कराये।

सूत्र – सोंठ, पुष्करमूल, गुडूची तथा कण्टकारी समभाग इन सभी का क्वाथ वात -कफ प्रधान सन्निपात ज्वर के श्वास, कास तथा पार्श्व पीड़ा में पान कराये।

सूत्र – महुआ का फूल, मुनक्का, त्रायमीणा, फालसा, खस, कुटकी, त्रिफला तथा गम्भारी का छाल समभाग इन सभी का हिम या क्वाथ बनायें। यह समय पर (सात या दस दिन के बाद) पिलाने से सभी ज्वरों को दूर करता हैं। इसी प्रकार चमेली का पत्ता, आँवला, नागरमोथा तथा यवासा समभाग इनका हिम अ थवा क्वाथ सभी ज्वरों को दूर करता हैं और यदि सभी ज्वरों में मलावरोध हो तो कुटकी, मुनक्का, त्रायमाणा तथा त्रिफला का हिम या क्वाथ गुड़ मिलाकर पान कराये।

सूत्र- औषध के पच जाने पर अन्न -पेया आदि को दे, किन्तु कफ प्रधान व्यक्ति को पेया न दें। क्योंकि कफ से व्याप्त शरीर वाले व्यक्तियों को पेया देने से जिस प्रकार धूली में वर्षा होने से पंक बढ़ जाता हैं, उसी प्रकार कफ बढ़ जाता हैं। अतः कफ से व्याप्त शरीर वाले को कुरथी तथा चना के यूष में अनार का रस मिलाकर हल्का, रूक्ष, तिक्तरस से युक्त, हृदय के अनुकूल, रूचिकारक तथा नमकीन यूष पान कराये।

विश्लेषण – कफ से व्याप्त शरीर वाले व्यक्तियों के कफ सूखा हुआ होता हैं जिससे श्वास, कांस उपद्रव होते हैं। पेया कफवर्द्धक हैं और जलीय हैं अतः कफ ढीला, कीचड़ के समान कर देती हैं। इसलिए मसूर, मूँग, चना तथा कुरबी इनमें किसी एक के दाल में खट्टे अनार दाना का बीज, नमक मिलाकर पकावें। इसमें घी आदि स्नेह आदि वस्तु न छोड़े, नमकीन स्वादु होने पर यह हृदय के अनुकूल और रूचिकर हो जाता हैं। इसके देने से कफ का नाश हो जाता हैं।

सूत्र – लालधान आदि तथा साठी का पुराना चावल, ज्वर में हितकरी हैं। कफ प्रधान ज्वर में भूसी रहित तथा आग में भूना हुआ यव का भात दिन में दो-तीन बार थोड़ी मात्रा ज्वर तथा रूचि के अनुसार प्रयोग करना चाहिए। इस यव को दोष, दूष्य तथा बल आदि के अनुसार ज्वरघ्न औषधों से सिद्ध किया हुआ अन्न प्रयोग करें। हल्के मूँग आदि मसूर, चना तथा कुलत्थ का हल्का यूष ज्वर को नाश करने वाले हैं।

सूत्र – करेला, खरबूजा, कच्ची मूली, पापड़ा, बैंगन, नीम का फूल, परवल का फल तथा कोमल पत्ती कण्टकारी, फालसा, जयन्ती, मुनक्का, आँवला तथा अनार के पकाये जल से सिद्ध रस में पीपर, सोंठ, धनियाँ, जीरा तथा सेंधा नमक का चूर्ण मिलाकर मिश्री तथा मधु मिलाकर संस्कार किया हुआ अथवा न किया हुआ ज्वर में खाने को दें।

सूत्र – अम्ल तथा मट्ट के संयोग के बिना बनाये हुए व्यंजनों को दे और ऊपर से पीने के लिए गरम किया हुआ स्वच्छ जल पान कराये। उबाल कर ठंडा किया हुआ जल अथवा रोगी की प्रकृति के अनुसार पीने को दें।

विश्लेषण – करेला, परवल आदि व्यंजन को पकाकर देना चाहिए किन्तु पकाते समय खाद्य वस्तु तथा मट्टा आदि नहीं मिलाना चाहिए। खाने के बाद गरम किया हुआ जल पिलाना चाहिए।

सूत्र – ज्वर के रोगी या ज्वरमुक्त रोगी को दिन के अन्त में हल्का भोजन दें। क्यों कि दिन के अन्त में कफ के क्षय हो जाने से जठराग्नि की उष्मा बलवान होती हैं। अथवा उचित समय पर देश, काल तथा रोगी के प्रकृति के अनुकूल पहले अल्प जठराग्नि वाले व्यक्ति भोजन करने पर अजीर्ण से पीड़ित नहीं होता हैं।

विश्लेषण – ज्वर वाले या ज्वरमुक्त व्यक्ति को पथ्य देने का समय दिन के अन्तिम भाग का विधान हैं। क्योंकि भोजन के बाद अन्न की गर्मी से निद्रा आ जाती हैं और निद्रा आने से ज्वर बढ़ने का भय रहता हैं। किन्तु यदि रोगी को प्रातः मध्याह में ही भूख लग जाये तो उसे देश अर्थात् जिस देश में जिस अन्न की प्रधानता हो अथवा जो अन्न प्रकृति के अनुकूल हो वह पथ्य देना चाहिए। जैसे बंगाल प्रदेश में पुराना चाल, पंजाब में गेहूँ की रोटी तथा साधारण देश में जिस चावल या गेहूँ या जव का अभ्यासी रोगी हो तो उसी समय उसे पथ्य देना चाहिए। यदि न दिया जाये तो शरीर क्षीण, बल की हानि और क्षुधा का नाश हो जाता हैं।

सूत्र- कषाय पान तथा पथ्य अन्न के सेवन करते हुए दस दिन बीत जाये, कफ मन्द हो तथा वात-पित्त प्रधान हो तो घृत पान कराये। दोषों के परिपक्व होने पर घी अमृत के समान हैं और दोषों के परिपक्व न रहने पर विष के समान हैं। दस दिन बीत जाने के बाद भी यदि ज्वर उपद्रव करने वाला हो तो नवीन ज्वर में लंघन आदि जो उपक्रम बताये गये हैं उन्हे कफ के क्षीण होने तक करना चाहिए।

विश्लेषण – जीर्णज्वर दस दिन के बाद होता हैं। ऐसा वाग्भट्ट का मत हैं। किन्तु दस दिन के बाद भी कफ की शान्ति न हो तो घृतपान नहीं करना चाहिए। दस दिन बीतने पर दोषों की साम्यता के कारण उपद्रवों की वृद्धि हो तो घी का प्रयोग रोककर लंघन, पाचन आदि उपक्रम करना चाहिए। किसी का मत हैं कि जीर्णज्वर दस दिन, पंन्द्रह दिन तथा एक्कीस दिन बाद होता हैं। उस अवस्था में औषध से सिद्ध घृतपान कफ के क्षीण होने पर कराना चाहिए।

सूत्र – देह तथा धातु के दुर्बल होने से जीर्ण ज्वर सदा बढ़ता रहता हैं।

तेजश्र(पित्त) से रूक्षित शरीर में रूक्ष तेज ज्वर को उत्पन्न करता हैं। वमन, स्वेदन, काल(सात दिन), उष्ण जल, कषाय तथा हल्का भोजन से जो सदा चलने वाला सहकारी अत्याधिक बलवान (वायु) हैं उस वायु को घृत वात -पित्त के जीतने में श्रेष्ठ हैं और संस्कार के अनुसार कार्य करना वाला होता हैं। अतः दोषानुसार औषधों से सिद्ध घृत का प्रयोग करना चाहिए। घृत ज्वर की गर्मी के विपरीत(शीतल) हैं। घृत शीतलता के कारण पित्त को स्निग्ध होने से वायु को तथा कफ के तुल्य घृत कफ नाशक औषधों से संस्कारित होने पर कफ को नाश करता हैं। पहले ज्वर नाशक जो कषाय दोषानुसार बताये गये हैं। उन कषायों में घृत मिलाकर पीने को देना चाहिए।

सूत्र- त्रिफला(हर्रे, बहेड़, आँवला), नीम का छाल, मुलेठी, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी तथा मसूर की दाल समभाग के विधिवत् क्वाथ में घृत मिलाकर प्रयोग करें। यह जीर्णज्वर का ज्वर तथा कास को नष्ट करता हैं।

सूत्र – पीपर, इन्द्र यव, मद्गषर्णी, कुंठकी, सारिवा, आँवला, भुई आँवला, बेलगिरी, नागरमोथा, चन्दन, त्रायमाणा, खस, मुनक्का, अती स तथा शालपर्णी समभाग इन सभी के क्वाथ तथा कल्क (घृत के चौथाई कल्क तथा चौगुना क्वाथ) से विधिवत् सिद्ध किया हुआ घृत प्रयोग करने से जीर्णज्वर विषमाग्नि, हलीमक, अरूचि, अंधसप्रदेश के अत्याधिक ताप, वमन, पार्श्व तथा सिर की पीड़ा और क्षयरोग को शीघ्र ही दूर करता हैं ।

सूत्र – वातज जीर्ण ज्वर में तौल्वक घृत का प्रयोग करे किन्तु तौलवक घृत सिद्ध करने वाले औषधों से निशोथ को निकालकर घृत सिद्ध करें। पित्तज जीर्ण ज्वर में तिक्तक घृत या वृष घृत का प्रयोग करे या त्रायमाणा से सिद्ध घृत का प्रयोग करें।

सूत्र – वायविंडग, सोंचर नमक, चव्य, पाठा, व्योष(सोंठ, पीपर, मरिच), सेंधा नमक तथा यवक्षारसम्भाग एक-एक पल (50 ग्राम) कल्क के साथ एक प्रस्थ (1 किलो) दूध तथा चार प्रस्थ (4 किलो) जल मिलाकर एकप्रस्थ (1 किलो) घृत निर्माण विधि के अनुसार घृत सिद्ध करें। यह घृत जीर्ण कफ ज्वर को नाश करता हैं।

सूत्र – 1. गुडूची के कल्क -क्वाथ, 2. त्रिफला के कल्क क्वाथ, 3. अडुसा के कल्क क्वाथ, 4. मुनक्का के कल्क क्वाथ या 5. बरियार केक कल्क क्वाथ से विधिपूर्वक बनाया हुआ घृत सेवन करने से ज्वर को नाश करते हैं।

सूत्र - घृत के पच जाने के बाद भात भक्षण करे। यह बल को बढ़ाने में तथा दोषों को दूर करने में पूर्ण समर्थ हैं और उत्तम बल को बढ़ाने वाला हैं।

सूत्र – मूँग तथा करेला आदि का रस प्रायः कफ -पित्त को दूर करने वाला हैं। इसलिए जीर्ण वातप्रधानज्वर में हितकर नहीं हैं। क्योंकि शूल, उदावर्त तथा कब्जियत को उत्पन्न करने वाला हैं और ज्वर को बढ़ाने वाला हैं।

सूत्र – यदि इन उपायों से ज्वर शान्त न हो तो संशोधन(वमन) करें। शोधन करने के योग्य पहले वमन की विधि जो बताई गई हैं उसके अनुसार वमन का प्रयोग करें। बलवान् रोगी के आमाशयगत दोष होने पर बल की रक्षा करते हुए वमन, पक्वाशयगत दोषों के शिथिल होने पर अथवा विषपान तथा मद्यपान जन्य ज्वर में त्रिफला, कालानिशोथ, पीपर तथा नागकेशर इन सभी का चूर्ण बनाकर मिश्री तथा मद्य के साथ मोदक बनाकर दे। अथवा व्योषाद्य विरेचन का प्रयोग करें। अथवा अमलतास की गुदी गर्म दूध के साथ अथवा मुनक्का के रस के साथ या त्रिफला का चूर्ण दूध से, या त्रायमाण का चूर्ण दूध से जीर्ण ज्वर का रोगी विरेचनार्थ पान करें। सम्यक् वमन विरेचन होने पर मण्डपूर्वक पेया, विलेपी, अकृत यूष, कृत यूष, संसर्गी क्रम का सेवन करें।

सूत्र – ज्वर रोग के उभार से निकलते हुए मल को नहीं रोकना चाहिए अर्थात् उपेक्षा करनी चाहिए। दोषों के परिपक्व हो जाने पर भी कोष्ठ में स्थित दोष विकार उत्पन्न करते हैं। यदि अधिक मात्रा में मल निकलता हो तो उसे पाचन तथा संग्राही औषधों से रोके। आम दोष को रोकने पर जो उपद्रव होता हैं उनका वर्णन दोषापक्रमणीय अध्याय में किया गया हैं। जो व्यक्ति अज्ञानतावश आम ज्वर में दोष निस्सारक औषध देता हैं तो वह चिकित्सक सोते हुए काले साँप को हाथ की अंगुलियों से स्पर्श करता हैं।

विश्लेषण – यहाँ तीन संकेत किया गया हैं। आम ज्वर में सामान्य वमन या विरेचन होता हो तो उसे नहीं रोकना चाहिए। क्योंकि रूके हुए दोष अपना स्थान आशयों में बनाकर बहुत दिन तक

उपद्रव करने वाले होते हैं। 2. यदि आम ज्वर में अधिक मात्रा में वमन विरेचन होता हो तो पाचन औषध के साथ संग्राहक औषध से दोषों का पाचन करते हुए वमन -विरेचन को रोकना चाहिए। 3. आम ज्वर में दोष बढ़कर उपद्रव करते हैं। तो भी दोष निःसारक वमन या विरेचन नहीं देना चाहिए, क्योंकि जैसे कच्चे फल से रस निकालने के समय उसका सम्पूर्ण अंग नष्ट -भ्रष्ट हो जाता हैं। उसी प्रकार जि स कोष्ट में आमदोष संचित रहता हैं उसे निःसारक दवा कोष्ठ को क्षतिग्रस्त करते हुए कोष्ठ से निकलती हैं। यह साँप को हाथ से छूने पर काटता हैं और मर जाता है। उसी प्रकार आमदोष को निकालने से उपद्रव की वृद्धि होती हैं, और रोगी की मृत्यु हो जाती हैं।

सूत्र- ज्वर से क्षीण व्यक्ति को वमन तथा विरेचन नहीं देना चाहिए। यदि मल संचित हो तो पूर्ण मात्रा में दूध पिलाकर अथवा निरूहवस्ति के द्वारा मल को निकाले।

सूत्र – जो व्यक्ति दूध पीने का अभ्यासी हैं और जिसका कफ क्षीण हो गया है, जो दाह तथा प्यास से पीड़ित हैं और पित्त तथा वा यु से ग्रस्त हैं तथा जो अतिसार का रोगी हैं उसके लिए दूध पथ्य हैं। अतः लंघन से क्लिष्ट शरीर तथा ज्वर को दूध जैसे ही शान्त करता हैं तथा जीवन प्रदान करता हैं जैसे दावाग्नि को वर्षा जल शान्त करता हैं और वृक्षों को जीवन प्रदान करता हैं। अतः औषधों के द्वारा संस्का र किया हुआ शीत या उष्ण अथवा धारोष्ण दूध देशकाल के अनुसार विभाग कर समय पर प्रयोग करना चाहिए। अन्यथा (आम ज्वर में) दूध ज्वर के रोगी को मार डालता हैं।

सूत्र – सोंठ, खजूर तथा मुनक्का के साथ दूध को पकाकर तथा शीतलकर उसमें शक्कर, घृत तथा मधु मिलाकर प्यास, दाह तथा ज्वर को नाश करने के लिए रोगी को पिलाये।

उसी प्रकार मुनक्का, बरियार, मुलेठी, सारिवा, पीपर तथा चन्दन के साथ पकाया हुआ दूध या चौगुने जल के साथ पकाया हुआ दूध अथवा पीपर के साथ पकाया हुआ दूध ज्वर रोगी को पिलाये।

ज्वर का रोगी को वायु तथा मल का विबन्ध होने पर एरण्ड के मूल की छाल से अथवा कच्चे बेल की गूर्दी से सिद्ध दूध अथवा धारोष्ण दूध पीने से रोगी जीर्ण ज्वर से मुक्त हो जाता हैं।

सोंठ, वरियार, भटकटैया तथा गोखरू के साथ विधिवत् सिद्ध दूध, गुड़ मिलाकर पीने से जीर्ण ज्वर का रोगी रक्त तथा भकदार अतिसार और प्यास तथा शूलयुक्त प्रवाहिका से मुक्त हो

जाता हैं और यह दूध, शोथ, मूत्राघात, मल के साथ विधिवत् विबन्ध तथा वात विबन्ध, ज्वर तथा कांस को दूर करता हैं।

रक्त पुनर्नवा, बेल की गुदी तथा सफेद पुनर्नवा सिद्ध दूध पिलाने से ज्वर तथा शोथ को दूर करता हैं। अथवा शीशम के सार(भीतर की लकड़ी) से विधिवत् सिद्ध दूध शीघ्र ही ज्वर को नाश करता हैं।

विश्लेषण – जीर्ण ज्वर की विभिन्न अवस्थाओं में औषध के साथ विधिवत् सिद्ध दूध का प्रयोग बताया गया हैं। जितना दूध पकाना हो उसके अष्टमांश औषध द्रव्य का कल्क मिलाकर तथा दूध से चौगुना जल मिलाकर पका ना चाहिए। जब दूध मात्र शेष रह जाये तो छान कर रोग के अनुसार उष्ण अथवा शीत बल के अनुसार मात्रा पूर्वक दूध पिलाना चाहिए।

सूत्र- पक्वाशय में जाकर दोषों के पक्व होने पर निरूह वस्ति देने से शीघ्र ही बल की वृद्धि, जठराग्नि प्रदीप्त, ज्वर का नाश, प्रसन्नता तथा भोजन में रूचि को उत्पन्न करती हैं। पक्वाश्य में स्थित पित्त या पित्त -कफ को निरूह वस्ति से निकाले। निरूहवस्ति पक्वाशय में आश्रित तीनों मलों (वात-पित्त-कफ) को निकालती हैं।

सूत्र - ज्वर में जिस व्यक्ति का कफ तथा पित्त क्षीण हो गया हो, अग्नि प्रदीप्त हो मल रूका हो उसको त्रिकप्रदेश, पृष्ठ प्रदेश तथा कटिप्रदेश में गड़गड़ाहट होने पर अनुवासवस्ति का प्रयोग करें।

सूत्र – परवल, नीम का पत्ता, कुटकी, अमलतास, शालपणी, बरियार, गोखरू, मदनफल, खस, सुगन्धवाला समभाग इन सभी को आधा पानी तथा आधा दूध मिलाकर (क्वाथ विधि के अनुसार) दूध अवशिष्ट रहने तक पकावे और छानकर इसमें नागरमोथा, मदनफल, पीपर, मुलेठी तथा इन्द्रयव समभाग इन सभी का कल्क, मधु तथा घृत मिलाकर निरुहवस्ति का प्रयोग करें। यह ज्वर को नाश करता हैं।

विश्लेषण – ज्वर के रोगी की अवस्था के अनुसार मात्रा पूर्वक कल्क, घृत तथा पकाये हुए दूध में मिलाकर तथा मथकर वस्तियन्त्र में भरकर विधिपूर्वक गुदा मं अवपीड़न करना चाहिए।

सूत्र – चारो पर्णी(सरि वन, पिठवन, वनमूंग तथा वन उड़द) मुलेठी, मदनफल खस तथा अमलतास इन सभी को विधिपूर्वक तैयार करें और उसमें मुलेठी सौफ, प्रियड़्गुफल तथा नागर मोथा का कल्क, गुड़, मधु तथा घृत मात्रापूर्वक मिलाकर निरूहवसित का प्रयोग करें। यह योग ज्वर को नाश करता हैं।

सूत्र – जीवन्ती, मदनफल, मेदा, पीपर, मुलेठी, वच, ऋद्धि, रास्ना, बरिया बेल की गुदी, सौंफ तथा शतावरी समभाग इन सभी को पीसकर इनको कल्क, दूध, जल, घृत या तैल एकत्र मिलाकर स्नेहनिर्माण विधि के अनुस स्नेह(वात, कफ में तैल और पित्त में घृत) का प्रयोग करे, और जो ज्वर नाश वस्तियाँ सिद्धि स्थान में कही जायेगी दोषानुसार उनका भी प्रयोग करें।

सूत्र – जीर्ण स्वर में सिर में वेदना तथा भारीपन हो तो कफ नाशक तथा इन्द्रियां को प्रबृद्ध करने वाला रूचिकर विरेचन नस्य देना चाहिए। सिर में सूनापन, दाह तथा वेदना हो तो पित्तनाशक स्नेह का नस्य दें।

सूत्र – प्रतिश्याय, मुख की विरसता, शिराशूल तथा गले के रोग को दूर करने वाले दोषों के अनुसार धूम, गण्डूष तथा कवलधारण का प्रयोग करें।

सूत्र - त्वचा के आश्रित जीर्ण ज्वर होने पर शीत तथा उष्ण द्रव्यों से सिद्ध रोगी की प्रकृति के अनुसार अभयंग लेप तथा सेक आदि का प्रयोग करें। इसी प्रकार का अन्जन तथा धूप का प्रयोग आगन्तुक ज्वर में भी करें।

सूत्र – शरीर में दाह होने पर जल में हजार बार धोये हुए घृत का अभ्यगं(मालिश) करें। सूत्र स्थान में कहे गये मधुगण, अम्लगण तथा कषायगण अथवा दूर्वादिगण और पित्तनाशक तथा शोधनादिगण अन्य शीत वीर्य एवं शीत स्पर्शवाले द्रव्यों के क्काथ तथा कल्क और दूध के साथ विधिपूर्वक तेल पकावे। यह तेल अभ्यंग करने से या मालिश करने से शीघ्र ही दाह तथा ज्वर को दूर करता हैं। उन्हीं द्रव्यों के पीसकर हल्का लेप शिर तथा शरीर में दाह होने पर लगावे और उन्हीं द्रव्यों के क्काथ से परिषेक तथा अवगाहन कराये। और आरनाल(कांज्जी), शीतल जल, दूध, शुक्त तथा घृत आदि एक में मिलाकर परिषेक, कौथ, विजौरा, निम्बू, इमली, विदारीकन्द लोध

तथा अनार के क्वाथ से परिषेक या अवगाहन तथा बैर के ताजे पत्तों के कल्क का लेप या रीठा के फेन का लेप करने से दाह, वेदना, मोह, वमन तथा प्यास शान्त होते हैं।

विश्लेषण – ज्वर जन्य दाह में इन औषधों का विधान किया गया हैं किन्तु किसी भी कारण शरीर में या अंगों में दाह होने पर इनका प्रयोग लाभकर सिद्ध होता हैं।

सूत्र – उष्णवीर्य तथा उष्णस्पर्श वाले द्रव्यों तगर, अगरू, केशर, कूट, थुनेर छड़ीला, धूप, देवदारू, नख(सुगंधित द्रव्य) रास्ना, मुरू वच, नकछिकनी, बड़ी इलायची, छोटी इलायची, चोरपुष्पी, मंगरैला, संहिजन, तुलसी, हैस ध्यामकर(सुगन्धित तृण), सरसों, दशमूल, गुडची, लाल एरण्ड, सफेद एरण्ड, पत्तुर रोहिततृण, तमालपत्र, चि रायता, सलई, धनियाँ, अजवायन, सौफं, उड़द, कुरथी, लिलकु, करंज, नाकुली, गन्धानाकुली तथा अन्य इसी प्रकार के द्रव्यों के कल्क तथा क्वाथ के साथ और सुरा सोवीर आदि के साथ विधिवत् तेल पकावे और थोड़ा गरम -गरम इसी तेल से शीत ज्वर में मालिश करें। इन्ही द्रव्यों को अच्छी तरह पीसकर शरीर में लेप लगाये। अथवा इन्ही द्रव्यों के थोड़ा उष्म क्वाथ से अगवाहन करें। उसी प्रकार किसी एक शुक्त, गौमूत्र या मस्तु से अभिषेक करें। इसके अतिरिक्त आरग्व -धादिगण के द्रव्यों के क्वाथ या कल्क का क्रमश पान अभ्यज्जन तथा तेल के द्वारा उपचार करें। अग रू आदि धूप जो विषम ज्वर के उपचार में कहेंगे उनका भी शीत ज्वर में प्रयोग करें। अग्नि स्वेद या अनाग्नि स्वेद लाने वाले औषध तथा भोजन का प्रयोग करे। गर्भगृह तथा भूघरा(तहखाना) में श्यन करें और कथरी कंबल तथा रेशमी वस्त्र बिछाकर तथा ओढकर शयन करें। निर्धूम जलते हुए अंगारों से भरी हुई बोरसी (अंगीठी) का सेवन करें। सोंठ, पीपर, मरिच से युक्त मट्ठा तथा कुरथी, व्रीहिधान तथा कोदो का सेवन शीत से कांपता हुआ व्यक्ति सेवन करे और जो पित्तकारक पदार्थ हो उनका सेवन करें।

सूत्र - क्षीण दोषों के वर्द्धन तथा बढ़े दोषों के क्षय और समकक्ष दोषों को आमाशय आदि कफ स्थानों की आनुपर्वी से शान्त करे।

विश्लेषण – सन्निपात ज्वर में दोष वृद्ध, वृद्धतर तथा वृद्धतम होते हैं। वृद्ध को बढ़ाकर वृद्धतर और वृद्धतम को घटाकर वृद्धतर हो जाने पर उसे कफनाशक औषध दे देना चाहिए । जो स्नतिपात ज्वर समवृद्ध त्रि दोष से उत्पन्न हैं उसे भी कफनाशक औषधी देना चाहिए। जब दोष बराबर पर आ जाते हैं तो सन्निपात ज्वर में आम और कफ को दूर करने वाले औषध का प्रयोग किया जाता हैं।

सूत्र – सन्निपात ज्वर में कर्ण मूल में भयंकर शोथ होता हैं। उससे कोई -कोई व्यक्ति छुटकारा पाता हैं। इसकी चिकित्सा रक्तवसेचन(जोंक लगाकर रक्त निकालना) घृतपान, कफपित्त नाशक स्नेह का लेप, नस्य तथा कवल धारण के द्वारा शीघ्र करें।

विश्लेषण – सन्निपात ज्वर के अन्त अर्थात् बीच में यदि शोथ हो जाए तो कष्टकारी होता हैं। जैसे सन्निपात ज्वर के पहले शोथ हो तो असाध्य, मध्य में हो कष्टसाध्य और अन्त में हो तो सुखसाध्य होता हैं। अतः अन्त से सन्निपात ज्वर के विषय में शोथ समझना चाहिए।

सूत्र – शीत, उष्ण, स्निग्धता तथा रूक्ष आदि उपचारों से जिस व्यक्ति का शाखानुसारी ज्वर शान्त न हो उसके बाहु में (कूर्पर सन्धि में) सिरा वेध कर रक्त निकाले तो ज्वर शीघ्र शान्त होता हैं।

विश्लेषण – शाखा नुसारी का तात्पर्य यह हैं कि त्वचा, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा तथा शुक्र को दोष दूषित कर ज्वर उत्पन्न किया हैं। अतः रक्त माक्षेण से दोष निकल जाते हैं और शीघ्र ही शान्त होता हैं।

सूत्र – विषम ज्वर में वातादि दोषों का विभाग कर ऊपर बतायी गयी चिकित्सा करनी चाहिए और जो बाद में आगे बतायी जायेगी वह चिकित्सा करनी चाहिए।

सूत्र - 1. परवल की पत्ती, कुटकी, नागरमोथा, 2. परवल की पत्ती, कुटकी, नागर मोथा तथा गुडची, 3. परवल की पत्ती, कुटकी, नागर मोथा गुडूची तथा मुलेठीसमभाग इन सभी का विधिवत् सिद्ध तीनों क्काथ विषम ज्वर को नाश करते हैं।

1. त्रिफला, 2. अभया(हर्रे) 3. गुडूची तथा 4. पीपर, अलग -अलग विधिपूर्वक बनाये क्काथ में गुड़ मिलाकर अथवा शुद्ध मिलाकर क्काथ बनाकर तथा गुड़ मिलाकर विषम ज्वर में पीने को दे।

सूत्र – विषम ज्वर जिस दिन आता हो उस दिन कफ -पित्त दोष में लंघन तथा वात में बृंहण करना चाहिए। प्रातःकाल तेल के साथ लहसुन अथवा भोजन के पहले पुराना घृत पान कराये।

इसी प्रकार दधि, दूध, मट्ठा तथा षट् पल घृत, कल्याणक घृत पचगव्य घृत, तिलक घृत तथा अडूसा से सिद्ध घृत पान कराये। अथ वा त्रिफला(हर्रे, बहेड़ा, आँवला वनश्ज़ैर जयन्ती तथा लोघ

का कल्क मिलाकर, समभाग इन सभी के क्वाथ और दही तथा लोध का कल्क मिलाकर विधिपूर्वक सिद्ध घृत पान कराये। यह विषम ज्वर को नाश करने में उत्तम हैं।

सूत्र – अथवा पुनः घी की बड़ी मात्रा पीकर वमन करें। अथवाज्वर के आगमन के पहले स्नेहल-स्वेदन करने के बाद नीलनी, अजगन्धा(अनमोदा) निशोथ तथा कुटकी समभाग इन सबों का क्वाथ पान कराये।

विश्लेषणः सिर कण्ठ, हृदय तथा सन्धि में संचित कफ आमाशय में आकर ज्वर, उत्पन्न करता हैं। जब तक कफ आमाशय में नही पहुँच जाता हैं उसके पहले सो जाना तथा वमन करना इन क्रियाओं से कफ का सर्वथा नाश हो जाता हैं। इससे पुनः -पुनः ज्वर का वेग नहीं आता हैं।

सूत्र – अशुद्ध मैनसिल, सेन्धा नमक तथा पीपर समभाग इन सभी का तेल के साथ पीसकर नेत्र में विषम का वेग आने के पहले अंजन करें।

सूत्र – हींग तथा सेंधा नमक को मिलाकर ज्वर का वेग आने के पूर्व नस्य दें। अथवा पुराना घी तथा सेंधा नमक मिलाकर पूर्वोक्त प्रकार से ज्वर वेग आने से पहले नस्य दें।

सूत्र – गुग्गुल, निम्बपत्र, बालवच, कडुला छूट तथा हरी ताकि इन सभी के साथ पीला सरसों, यव तथा घी मिलाकर ज्वर में धूप दें। अथवा गुग्गुलु, सुगन्ध तृण, घोड़ वच, राल नीम का पत्र, मदार का फूल, अगर तथा देवदारू समभाग इन सभी का अपराजित नामक धूप सभी प्रकार के ज्वरों में प्रयोग करें।

विश्लेषण - ज्वर का वेग आने के एक घण्टा पूर्व इन धूपों का प्रयोग करने पर ज्वर का वेग नहीं आता। अथवा किसी भी ज्वर के वेग अधिक होने पर प्रथम धूप को देने से ज्वर में स्वेद उत्पन्न होकर शीघ्र ही वेग शान्त हो जाता हैं। यह बार -बार का अनुभव किया हुआ योग हैं।

सूत्र - उन्माद प्रकरण में कहे गये धूप, नस्य, अज्जन, भय दिखाना आदि दैवी चिकित्सा तथा औषधि सभी विषय ज्वरों को दूर करती हैं। विशेष कर विषम ज्वर आगन्तुक(भूत, प्रेत, पिशाच

आदि) सम्बन्ध वाले होते हैं। विषम ज्वर के शान्त न होने पर जिस दोष की प्रधानता हो इसके अनुसार सिरा वेध करें।

सूत्र - केवल वात ज्वर, विसर्पजन्य ज्वर, विस्फोट(शीतल) ज्वर, तथा अभिघात ज्वर में घृत पान, शीतल लेप तथा अभिषेक के साथ भोजन करे था उक्त सभी रोग में जो रक्त मोक्षण आदि साधन बताये गये हैं उनका प्रयोग करें।

सूत्र – औषध गन्ध से उत्पन्न ज्वर में पित्तनाशक औषधों का प्रयोग करे। विषजन्य ज्वर में विषनाशक औषधों का प्रयोग करे। क्रोध, शोथ, काम, भय आदि से उत्पन्न ज्वर में मनोनुकूल अभिलषित पदार्थो से, दोषों के अनुसार दोष शामक उपायों से तथा हित -अहित आहार विहार आदि के विचार से ज्वर की चिकित्सा करे। क्रोधजन्य ज्वर कामोत्पादक विषयों से तथा काम जन्य ज्वर क्रोधोत्पादक विषयों से शान्त होता हैं। भय तथा शोक से उत्पन्न ज्वर काम तथा क्रोधजन्य ज्वर भय तथा शोक से शान्त होता हैं। शापजन्य ज्वर तथा अथर्ववेद में बताये हुए मन्त्रों के प्रभाव से उत्पन्न ज्वर में दैवव्यापाश्रय (मन्त्र जपादि) विधि को करे। ये सभी ज्वर पहले शरीर में उत्पन्न होते हैं और बाद में मलों (दोषों -वात, पित्त, कफ) से सम्बन्धित होते हैं। अतः इन ज्वरों में वातादि दोषों के अनुसार आहार -विहार आदि का प्रयोग करे। वात -पित्त कफ के बिना ज्वर नहीं होता हैं।

सूत्र- ज्वर काल का स्मरण होने से जो ज्वर उत्पन्न होता हैं उसे मन को हरण करने वाले विषयों से समृति को नष्ट कर ज्वर को दूर करे। करूणा से आर्द्र हृदय तथा शुद्ध मन होने से सभी ज्वर दूर होते हैं।

सूत्र – ज्वरमुक्ति के बाद भी जब तक शरीर में पूर्ण बल न हो जाये तब तक व्यायाम, स्नान, मैथुन, गुरू, असात्म्य तथा विदाही आहार और अन्य जो ज्वर के कारण हैं उनको त्याग दे।

सूत्र – ज्वर के छूट जाने के बाद भी सहसा सभी प्रकार के गुरू, विदाही आदि अन्नों का सेवन न करे। क्योंकि ज्वर छूट जाने पर भी दुर्बल व्यक्तियों को मार डालता हैं।

सूत्र – ज्वर शीघ्र ही प्राण को हरने वाला हैं। इसलिए ज्वर की विभिन्न अवस्थाओं में जो जो चिकित्सा बनायी गयी हैं उनको उन अवस्थाओं में प्रयोग करें।

सूत्र – औषधियाँ (ज्वर नाशक औषधि), मणियाँ, ज्वर नाशक मन्त्रों का धारण साधु, गुरू, ब्राह्मण तथा देवताओं को पूजा तथा मन को प्रसन्न करने वाले पदार्थ और विष्णु सहस्र नाम का पाठ भयंकर ज्वर को दूर करते हैं।

विश्लेषण - बताये गये नियमों का पालन यदि ज्वर छूटने के बाद न किया जाये तो ज्वर पुनः आ जाता हैं उसे पुनरावर्तक ज्वर कहते हैं। यह ज्वर लगातार कुछ दिन बना रहता हैं। अल्पदोष होने पर नियमों का पालन न करने से यह होता हैं और अल्पदोष होने पर अनुचित आहार विहार के सेवन से विषम ज्वर भीहोते हैं। किन्तु विषम ज्वर के वेग छूटते तथा आते रहते हैं। पुनरावर्तक ज्वर लगातार बना रहता हैं। यह विषम ज्वर से इसका भेद हैं।

द्वितीय अध्याय

रक्तपित्त चिकित्सा

अथातो रक्तपित्तचिकित्सिंत व्याख्यास्यामः।

इति ह समाहुरात्रेयादयो महर्षयः।।

अर्थ – ज्वर चिकित्सा व्याख्यान के बाद रक्त-पित्त चिकित्सा का व्याख्यान करेंगे ऐसा आत्रेयदि महर्षियों ने कहा था।

सूत्र - बलवान व्यक्तियों के वेग रहित, एक दोष से उत्पन्न, नवीन तथा उपद्रवरहित ऊर्ध्वग रक्तपित्त शीतकाल में साध्य होता हैं। अधोग तथा दो दोषों से उत्पन्न रक्त पित्त या प्य होता हैं और बार-बार शान्त होकर पुनः कुपित हो जाये तथा एक मार्ग से निकल कर दूसरे मार्ग से भी निकले (अर्थात् मुख से निकल कर नाक, कान आदि से निकले) यह याप्य होता हैं। मन्दाग्नि वाले व्यक्ति को तीनों दोषों के प्रकोप से ऊर्ध्वग तथा अधोग मार्ग से अधिक रक्त नि कलता हो वह रक्तपित्त असाध्य होता हैं।

सूत्र- संतपंण से उत्पन्न बलवान तथा बहुत दोष वाले व्यक्ति के ऊर्ध्वग रक्त -पित्त को विरेचन से साध्य करे और आधो भाग से निकलने वाले रक्त -पित्त को वमन से साध्य करे। लंघन करने

योग्य तथा वृहण करने योग्य देखकर दुर्बल रोगी के ऊर्ध्वग तथा अधोग रक्त -पित्त को शमन तथा वृहण के द्वारा चिकित्सा करे।

सूत्र – दुर्बल व्यक्तियों के ऊर्ध्वगामी रक्त -पित्त में तिक्त तथा कषाय रस शमन करते हैं और उपवास तथा सोंठ निकाल कर षडग (नागर मोथा, खस, पित्त पापड़ा, रक्त चन्दन तथा सुगन्ध वाला) का पानी पिला ना रक्त पित्त को शमन करते हैं। दुर्बल व्यक्तियों के अधोग रक्तपित्त में मधुर रस बृंहण करता हैं। ऊर्ध्वग रक्तपित्त में पहले तर्पण करना चाहिए और अधोग रक्त पित्त में पहले पेया देनी चाहिए।

सूत्र – भोजन करते हुए बलवान रोगी के अशुद्ध रक्त को पहले नहीं रोकना चाहि ए। क्योंकि वह रोग को बढ़ाता हैं। उसके अतिरिक्त दुर्बल तथा भोजन करने वाले व्यक्तियों के रक्त को तत्काल रोकना चाहिए। क्योंकि वह अग्नि के समान शीघ्र ही मारक होता हैं।

विश्लेषण – बलवान रक्तपित्त के रोगियों का रक्त अधोमार्ग या ऊर्ध्वमार्ग से निकलता हो तो तत्काल उसे नहीं रोकना चाहिए। किन्तु पित्त नाशक और पाचन औषध खिलाकर धीरे-धीरे रक्त को बंद करना चाहिए क्योंकि रूका हुआ अशुद्ध रक्त अन्य रोगों को उत्पन्न करता हैं । उसका पाचन हो जाये तब किसी उपद्रव को न करते हुए शान्त हो जाता है। दुर्बल व्यक्तियों के तत्काल रक्त को बंद करना चाहिए । पाचन करने में विलम्ब होता हैं और रक्त अधिक निकल जाने से रोगी की मृत्यु होती हैं।

सूत्र – उर्ध्वग रक्त पित्त में काले निशोथ के क्वाथ तथा कल्क में शक्कर मिलाकर अवलेह सिद्ध करे और एक कर्ष (10 ग्राम) की मात्रा में चठाये। अथवा निशोथ, त्रिफला, (हर्रे, बहेड़ा, आँवला) काला निशोथ तथा पीपर के चूर्ण का शक्कर तथा मधु मिला मोदक बनाये। यह सन्निपातज ऊर्ध्वग रक्त-पित्त, शोथ तथा ज्वर को दूर करता हैं। अथवा निशोथ एक भाग मिश्री एक भाग तथा पीपर का चूर्ण चौथाई भाग मिलाकर मोदक बना ले और 10 ग्राम की मात्रा में प्र योग करें।

सूत्र – मदन-फल के तर्पण में (सत्तु के घोल में) शक्कर तथा मधु मिलाकर या शक्कर, जल तथा मधु मिलाकर या मुलेठी का क्वाथ मिलाकर या दूध मिलाकर अथवा गन्ने का रस मिलाकर पिलाये और वमन कराये। वमन विरेचन के द्वारा शुद्ध होने पर विधिपूर्वक बल की रक्षा करते हुए प्रकृति के अनुकूल मन्थ पेया आदि का प्रयोग करे।

सूत्र - रक्त-पित्त में ज्वर प्रकरण में कहे हुए द्राक्षादि मन्थ, अथवा पित्तनाशक द्रव्यों से निर्मित फल (द्राक्षा, फालसा, आँवला आदि) से निर्मित मन्थ अथवा मुलेठी, खजूर मुनक्का, फालसा, मिश्री तथा जल से निर्मि त मन्थ या पच्चसार (वठ, पीपर पकड़ी, गूलर तथा पारिस पीपर) के पकाये हुए जल से निर्मित मन्थ अथवा घृत तथा लावा की सत्तु से निर्मित मन्थ, अथवा खट्टे अनार तथा आँवला के रस से निर्मित मन्थ मन्दाग्नि व्यक्ति और अम्ल पदार्थ चाहने वाले व्यक्ति के लिए प्रयोग करे।

सूत्र – अधोग रक्त-पित्त में (1) लाल कमल तथा नील कमल का केशर, पिठवन तथा फूल प्रियंगु (2) खस, सावर लोध, सोंठ तथा लाल चन्दन, (3) हाड बेर, धाय का फूल, बेलका गुदा तथा दुरालभा (यवासा) इन आधे श्लोक से कहे गये द्रव्यों की जड़ से निर्मित पेया का प्रयोग करे। इसके बाद श्लो क के एक -एक पाद निर्मित पेया को कहेंगे। (1) चिरा -यता, खस तथा नागर मोथा, (2) मसूर तथा पिठवन, (3) विदारीकन्ध तथा मूँग, (4) बारियार की जड़ तथा हरेनु इन द्रव्यों के जल से निर्मित पेया रक्तपित्त में प्रयोग करे।

सूत्र – ऊपर बताये गये सात योगों से सात पेयां का विघात किया गया हैं। इन योगों के द्रव्य निर्मित 10 ग्राम को लेकर तथा कूटकर 640 ग्राम जल में पकायें। जब जल 320 ग्राम रह जाये तब उसमें पेया का निर्माण करें।

सूत्र – अन्न स्वरस विज्ञानीय अध्याय में जो शुक धान्य, शिम्बी धान्य तथा शाक लघु एवं शीत वीर्य वाले कहे गये हैं वे रक्तपित्त में प्रशस्त हैं।

सूत्र – पूर्वोक्त सोठरहित षडग पानी अथवा लघुपच्चमूल से पकाया हुआ शीतल अथवा गरम कर ठण्डा किया हुआ या मधु मिलाकर जल अथवा मीठे फल रस रक्तपित्त में पिलायें।

सूत्र – अडूसा के रस के साथ फूल प्रियंगु या भूनी मिट्टी या पाठानी, शावर लोध या सौवीराञ्जन, पिष्टी या स्वर्णमाक्षिक भसम पीने से रक्तपित्त को शान्त करता हैं। अथवा अडूसा का क्वाथ पीने से रक्त-पित्त को शान्त करता हैं।

सूत्र – केवल अडूसा का रस या शक्कर तथा मधु मिश्रित अडूसा का रस अथवा अडूसा का क्वाथ शीघ्र ही रक्त-पित्त को शान्त करता हैं । यह अडूसा रक्त -पित्त का उत्तम औषध हैं।

(1) परवल की पत्ती, मालती की पत्ती, नीम की पत्ती, रक्त चन्दन, सफेद चन्दन तथा पद्माख, (2) शाबर लोध, अडूसा चौराई का शाक, काली मिट्टी तथा मेंहदी (3) या शतावरी, सारिवा, काकोली, क्षीर काकोली तथा मुलेठी समभाग इन तीन योगों को तीन क्वाथ मधु तथा शक्कर मिलाकर पीने से रक्त-पित्त को दूर करते हैं।

सूत्र – पलास के छाल का क्वाथ शीतल कर उसमें शक्कर मिलाकर रक्त -पित्त का रोगी पान करे। अथवा गाय का गोबर का रस मधु तथा शक्कर मिलाकर पान करें।

सूत्र – बरियार के शीढ कषाय में चन्दन, खस, नागरमोथा, लावा, मूँग तथा यव का चूर्ण रात को भिगोंकर तथा प्रातः छान कर पीये और प्रातः भिगोकर और शाम को छानकर पीये। यह रक्त – पित्त को दूर करता हैं।

सूत्र – चन्दन, कमल, खस तथा आग में पकाया मिट्टी का ढेला समभाग इन सभी का चूर्ण बनाकर रात को जल में भिगोकर तथा ऊपर का जल निथार कर प्रातः मधु एवं मिश्री मिलाकर पान करे तथा प्रातः भिगोकर शाम को छानकर मधु तथा मिश्री मिलाकर पान करे। यह रक्त - पित्त में अधिक रक्त स्राव को रोकता हैं।

सूत्र – नये मिट्टी के घड़े में गन्ने की गड़ेरियों को कुचलकर तथा पानी भर कर और घड़े का मुख बन्दकर खुले आकाश में रातभर रहने दे और प्रातः काल छानकर तथा मधु मुनक्का का रस एवं कमल के पत्तों का रस मिलाकर पान करें। यह रक्त -पित्त में अधिक रक्त स्राव को रोकता हैं।

सूत्र – पित्त ज्वर में जिन-जिन कषायों के पान करने का निर्देश किया गया हो इन कषायों को रक्त-पित्त में प्रयोग करें।

सूत्र – ऊपर बताये गये अनेक प्रकार के कषायों के सेवन से अग्नि के प्रदीप्त होने तथा कफ शान्त होने पर रक्त -पित्त शान्त न हो और वात की प्रधानता हो तो, निम्नलिखित दूध का प्रयोग करें। बकरी का पकाया दूध, लघुपच्चमूल में (सरिवन, पिठवन, भटकटैया, वनभंटा तथा गोखरू) के पाँच गुने क्वाथ में पकाया गाय का दूध अथवा उस दूध में मिश्री तथा मधु मिलाकर या जीवका, ऋषभक, मुनक्का, बरियार, गोखरू तथा सौंठ इन सभी में एक -एक से पकाये हुए दूध में घृत तथा मिश्री मिलाकर पीने को दें।

सूत्र - गोखरू तथा शतावरी के कल्क के साथ विधिपूर्वक पकाया हुआ दूध तथा पर्णीचतुष्टय (शालपर्णी, पृशिनपणी, माषपर्णी, मुद्गपर्णी) के कल्क के साथ विधिपूर्वक पकाया दूध पीड़ायुक्त रक्त-पित्त का शीघ्र ही नष्ट करता हैं और विशेष कर पीड़ायुक्त मूत्रमार्गगामी रक्तपित्तको शीघ्र ही नष्ट करता हैं।

सूत्र – गुदमार्गगामी रक्त-पित्त में विशेषकर मोथ रस के कल्क के साथ विधिवत सिद्ध दूध या वट के वरोही या वट की टूसा के कल्क के साथ विधिवत् सिद्ध दूध अथवा सौंठ, सुगन्धवाला तथा कमल केशर के कल्क के साथ विधिवत् सिद्ध दूध का प्रयोग करें।

सूत्र – रक्त-पित्त में गुदामार्ग से रक्त निकलने पर रक्तातिसार तथा रक्तार्श में बतायी गयी चिकित्सा का प्रयोग करें। रक्तातिसार तथा रक्तार्श में बताये गये कषायों को दूध के साथ पीकर दूध के साथ पीकर दूध ही के साथ भोजन करें। अथवा उन्हीं कषायों के योग से विधिपूर्वक सिद्ध घृत पाक कराये।

सूत्र – अडूसे के पचांग को लेकर तथा यव कूट कर आठ गुने जल में पकावे और अष्टांशावशेष इस क्वाथ तथा अडूसा के फूल के कल्क के साथ विधिपूर्वक घृत पकावे। शीतल हो जाने पर मधु मिलाकर पान कराये। यह घृत रक्त -पित्त, पित्तजगुल्म, ज्वर, श्वास, कास, हृदयरोग, कामला, तिमिर रोगभ्रम(चक्कर), विसर्प तथा स्वरनाश को दूर करता हैं।

सूत्र - पलास वृन्त के स्वरस में पलाश वृन्त के कल्क के साथ विधिपूर्वक घृत पकावे और शहद मिलाकर पान कराये । यह रक्तपित्त को नाश करता हैं । इसी प्रकार त्रायमाणा के क्वाथ तथा कल्क के साथ विधिपूर्वक घृत पकावे और मधु के साथ पान करें।

सूत्र – रक्त-पित्त में मुखमार्ग से पिच्छा, कफ तथा गाँठदार रक्त के निकलने पर पलासक्षार तथा कमलनाल का क्षार तथा अलग-अलग कमल, रेणुका, निशोथ और महुआ का क्षार मधु तथा घृत के साथ चटायें।

सूत्र – नासिका से शुद्ध रक्त के निकलने पर पूर्वोक्तकषायों में दूध, गन्ने का रस, आदि मिलाकर नासिका में छोडें। अथवा दूध, मिश्री तथा जल मिलाकर नाक में छोड़ें या केवल ठंडा जल छोड़ें। अथवा अनार के फूल का रस, आम की मज्जरी का रस या दूब का रस छोड़े और प्रदेह (लेप) अभ्यज्जन आदि में शीत वर्ग के द्रव्यों का प्रयोग करें ।

सूत्र – जो पित्तज्वर तथा क्षत क्षीणअन्तः प्रयोग तथा बाह्य प्रयोग औषधों को बताया गया हैं वह औषध प्रयोग रक्तपित्त में हितकर हैं।

तृतीय अध्याय

कास (खाँसी) चिकित्सा

अथाऽ: कासचिकित्सितं व्याख्यास्यामः।

इति ह स्माहुरात्रेयादयो महर्शयः।।

अर्थ - रक्तपित्त चिकित्सा व्याख्यान के बाद कास चिकित्सा (खांसी की चिकित्सा) का व्याख्यान करेंगे ऐसा आत्रेयादि महर्षियों ने कहा था।

सूत्र – केवल वातज कास (खांसी) में वातघ्न औषधों से सिद्ध स्नेह (घृत-तैलादि) से पहले चिकित्सा करे। स्नेहन के बाद वातघ्न औषधों से सिद्ध पेययूष तथा रस आदि से चिकित्सा करे। इसी प्रकार वातघ्न औषधों से विधिपूर्वक सिद्ध अवलेह अभ्यगं, स्वेद, सेक तथा अवगाहन आदि चिकित्सा करे। मल तथा वात विबन्ध से बस्ति के द्वारा चिकित्सा करे। पित्त के साथ यदि वातज हो तो भोजन के बाद घृत तथा दूध पिलाये और कफयुक्त वातज कास की स्नेह विरेचन (एरण्डादि तैल) के द्वारा चिकित्सा करे।

सूत्र – गुडूची का रस 30 पल (1 कि. 500 ग्राम) तथा कण्टकारी का रस 300 पल में घृत एक प्रस्थ (750 ग्राम) विधिपूर्वक सिद्ध करे। यह घृत सेवन करने से वातज कास को दूर करता हैं तथा अग्नि को प्रदीप्त करता हैं।

सूत्र – जब क्षार, रास्ना, वंच, हींग, पाठा, मुलेठी, धनियां तथा पच्चकोल (पीपर, पिपरामूल, चव्य, चित्रक तथा सोंठ) दो-दो शाण (6-6 ग्राम) के कल्क के साथ घृत के चौगुना दशमूल के क्वाथ में एक प्रस्थ (750 ग्राम) घृत विधिपूर्वक सिद्ध करे और 10 ग्राम कीमात्रा में पान करे। बाद में मण्ड पीये। यह कास, श्वास, हृदयरोग, पार्श्वशूल, ग्रहणी रोग तथा गुल्म रोग को दूर करता हैं।

सूत्र – रास्ना दशमूल (वेल का गूदा, अरणी, गम्भारी, सोथपाठा, पाढल, सरिवन, पिठवन, भटकटैया, वनभंटा, गोखरू) तथा शतावरी एक-एक पल (प्रत्येक 50 ग्राम), कुरथी, वैर तथा यव दो-दो कुडव (प्रत्येक 500 ग्राम) इन द्रव्यों को लेकर जल एक द्रोण (12 सेर या 12 किग्रा) में क्वाथ करे। चौथाई शेष रहने पर छान ले, दूध एक आढक (3 किग्रा) जीवनीयगण (जीवन्ती काकोली क्षीर काकोली मेदा, महामेदा, मृदुपर्णी, भाषपर्णी, जीवक, ऋ षभक, मुलेठी) के द्रव्य एक एक पल का कल्क बनाकर पूर्वोक्त क्वाथ दूध जीवनीयगण के द्रव्यों का कल्क मिला कर घी एक आढ़क घृत निर्माण विधि के अनुसार घृत सिद्ध करे। इसको वात रोगों में पान, मावन तथा बस्ति कर्म के लिए प्रयोग करे। यह पाँच प्रकार के कास, शिराकम्प, योनि तथा वंक्षण प्रदेश की वेदना, सर्वाग वात, एकागवात, प्लीहा रोग तथा ऊर्ध्व वात (उद्गार) को दूर करता हैं।

सूत्र – कास रोग से पीडित व्यक्ति अशोक का बीज, क्षवक (नक छिकनी), वाय बिंडग, रसाञ्जन, पद्मकाठ तथा विडनमक समभाग इन सभी के क्वाथ तथा कल्क घृत सिद्ध करे। इस घृत को या पूर्वेक्त द्रव्यों के चूर्ण को घृत में मिलाकर चाहें और ऊपर से बकरी का दूध पीये।

सूत्र – वायविडींग, सोंठ, रास्ना, हींग, पीपर सेन्धा नमक, वमनेठी तथा यव क्षार समभाग इन सभी का चूर्ण घृत में मिलाकर चाटें या उत्तममात्रा घी में मिलाकर कफयुक्त वातज कास, श्वास, हिक्का तथा मन्दाग्नि में पान करे।

सूत्र – जवास, अभ्रक, कचूर, मुनक्का, मिश्री, काकड़ा सिंधी समभाग इन सभी का चूर्ण वातज कास में सरसों के तेल में मिलाकर चाटे।

सूत्र – जवासा, पीपर, नागर मोथा, वमनेठी, काकड़ा सिंधी, कचूर समभाग इन सभी का चूर्ण पुराना गुड़ तथा सरसों के तेल में मिलाकर अवलेहवत् चाटें। इसी प्रकार पीपर तथा सोंठ के चूर्ण को पुराना गुड़ तथा सरसों के तेल के साथ चाटें। अथवा वमनेठी के चूर्ण को गुड़ तथा तेल में मिलाकर चाटें।

सूत्र – कास में पीपर के चूर्ण में सेंधा नमक मिलाकर पान करे अथवा सोंठ के चूर्ण में चीनी मिलाकर मस्तु (दही) के जल से पान करे या पीपर तथा रेणुका का चूर्ण दही के साथ चाटे।

अथवा वनपैर का गूदा दही या दही के पानी के साथ पान करें। अथवा पीपर के कल्क को घी में भून कर तथा सेंधा नमक मिलाकर दही या दही के जल के साथ पान करें।

सूत्र – कास के रोगी को ग्राम्य, आनूप तथा जड़हन धान तथा साठी धान का भात और गेहूँ का रोटी खिलाये। अथवा उड़द तथा केवाछ के रस या यूष के साथ हितकर पूर्वोक्त भोजन कराये।

सूत्र – अजवायन, पीपर, बेल की गिरि, सोंठ, चित्रक, रास्ना, जीरा, पृश्निपर्णी (पिठवन) प्लास बीज, कचूर तथा पुष्करमूल समभाग इन सभी के पकाये जल से पेया सिद्ध करे और उसमें घी, खट्टा अनार तथा सेन्धा नमक मिलाकर कटिशूल, हृदयशूल, पार्श्वशूल, उदरशूल, श्वास तथा हिचकी को नष्ट करने वाली पेया को वातज कास में पान करे।

सूत्र - पूर्वोक्त प्रकार से दशमूल के पकाये जल से सिद्ध पे या में पच्चकोल का चूर्ण तथा गुड़ मिलाकर कास रोग में पान करे। अथवा समान भाग तिल से सिद्ध क्षैरेयी (खीर) में सेन्धा नमक मिलाकर पान करें । बथुआ का शाक काली मकोय की पत्ती का शाक तथा सुनिष्षणक (चौपत्तियाँ) का शाक कास नाशक हैं । कण्टकारी का कोमल फल तथा पत्ती, सू खी मूली तथा घी, तेल, दूध, गन्ना का रस, गुड़ से बने पदार्थ, वात कास के लिए भक्ष्य पदार्थ हैं । वात कास में दही, दही का जल, कांज्जी, खट्टे अनार के फल का रस पान करे ।

सूत्र – कफ युक्त पितजकास में घृत योग से वमन हितकर होता है । अथवा मदन फल, गम्भारी फल तथा मुलेठी के क्वाथ से वमन कराना हितकर है । अथवा मदनफल तथा मुलेठी के कल्क के विदारीकन्द तथा गन्ने के रस में मिलाकर वमन कराना हितकर होता हैं ।

सूत्र – पित्तज कास में काफ के पतला हो ने पर मधुर पदार्थ मिलाकर निशोथ चूर्ण विरेचन के लिए प्रयोग करे, और कफ के गाढा होने पर तिल पदार्थ मिलाकर निशोथ का चूर्ण विरेचन के लिए प्रयोग करें ।

सूत्र – कास रोग में विरेचन के द्वारा दोषों का संशोधन हो जाने के बाद शीतल, मधुर तथा स्निग्ध संसर्जन विधि के अनुसार पथ्य सेवन करें । कास में गाढा कफ होने पर विरेचन द्वारा दोषों के संशोधन ही जाने के बाद, शीतल, रूक्ष तिक्त द्रव्य मिलाकर संसर्जन (पेया आदि) का प्रयोग करें ।

सूत्र – पैत्तिक कास में मिश्री, आँवला, मुनक्का, सफेद-चन्दन तथा नीलकमल की पत्ती समभाग इन सबों को पीस कर तथा शहद में मिलाकर अवलेह तैयार कर लें और प्रयोग करें । कफयुक्त पैतिक कास में पूर्वेक्त द्रव्यों के साथ नागरमोथा तथा मरीच का चूर्ण मिलाकर और वात यु क्त पैतिक कास में पूर्वेक्त द्रव्यों के साथ घृत मिलाकर अवलेह का प्रयोग करे।

सूत्र – दाना रहित मुनक्का पचास नग, तीस बडी पीपर का चूर्ण तथा शक्कर एक पल (50 ग्रा) मिलाकर (3 ग्राम की मात्रा में) कास में शहद के साथ चाटें । अथवा दूध पीने वाले गाय के गोबर का रस शहद के साथ कास में चाटें ।

सूत्र – दाल चीनी, इलायची, व्योष (सोंठ, पीपर, मरिच) मुनक्का, पिपरामूल, पुष्करमूल, धानका, लावा, नागरमोथा, कचूर, रास्ना, आँवला तथा बहेड़ा समभाग इन सबों के चूर्ण का शक्कर, मधु तथा घृत के साथ अवलेह बनाकर प्रयोग करें । यह हृदयावरोध तथा सभी प्रकार के कास को नष्ट करता हैं ।

सूत्र – पित्तज कास में यव, साँवा तथा कोदो का रोटी तथा भात मधुररस प्रधान द्रव्य, मूँग आदि का रस, तथा तिक्त रस प्रधान द्रव्यों के शाक के साथ मात्रा पूर्वक सेवन करने में हितकर होता हैं ।

सूत्र – गाढ़ा कफ युक्त पित्तज कास में तिक्तरस प्रधान द्रव्यों का मधु -मिश्रित अवलेह हितकर होता हैं तथा तनु कफ युक्त पित्तज कास में जड़हन धान तथा साठी धान का भात के साथ सेवन करना हितकर होता हैं । भोजन के बाद शक्कर का शर्बत, मुनक्का तथा गन्ना का रस तथा दूध पीने के लिए प्रयोग करे ।

सूत्र – काकोली, क्षीर-काकोली, भटकटैया, वन भंटा, मेदा, महामेदा, अडूसा तथा सोंठ समभाग इन सभी के पकाये जल से रस, दूध, पेया तथा यूष का निर्माण कर पित्तज कास में प्रयोग करें ।

सूत्र – पित्तज कास में मुनक्का, पीपर तथा तृण पच्चमूल के पकाये जल के दूध विधिवत् सिद्ध करें और शीतल कर उसमें मधु तथा शक्कर मिलाकर पान करें । अथवा पूर्वोक्त द्रव्यों के पकाये जल से पेया बनाकर तथा शीतल कर उसमें मधु मिलाकर पान करें ।

सूत्र – पित्तज कास में कचूर, हाडबे र, वनभंटा तथा सोंठ समभाग इन सभी को जल के साथ पीसकर तथा वस्त्र से छानकर और उसमें शक्कर तथा घृत मिलाकर पान करें ।

सूत्र – पित्तज कास में शक्कर, जीवक, मुद्गपर्णी, माषपर्णी तथा यवासा समभाग इन सभी का कल्क बनाकर उसके साथ (घृत के चौथाई) तथा दूध, घृत के आठगुना मिलाकर विधिवत घृत सिद्ध करे । इस को पीने, भोजन तथा अवलेह में प्रयोग करें । अथवा पूर्वोक्त द्रव्यों का चूर्ण घृत के साथ चाटे या पूर्वोक्त द्रव्यों का कषाय घृत मिलाकर पान करें ।

सूत्र – कफज कास का रोगी पहले जलते हुए ताजे देवदारू का स्नेह (तेल) में व्योष चूर्ण (सोंठ, पीपर, मरिच, तथा यव क्षार) मिलाकर पान करें ।

सूत्र – कफज कास में स्नेहल करने के बाद विधिपूर्वक ऊर्ध्वविरेचन(वमन), विरेचन तथा नस्य देकर संशोधन करे । यदि रोगी बलवान हो तो तीक्ष्ण विरेचन द्रव्यों से विरेचन कराये । इसके बाद रोगी के लिए संसर्गी का प्रयोग करें । पेया आदि का निर्माण निम्न प्रकार से करें । यव, मूँग तथा कुरथी तथा ऊष्ण एवं रूक्ष अन्न के साथ कटु प्रधान रस मिलाकर और उसमें करौंदी, वनभंटा, भटकटैय्या, यवक्षार तथा पीपर का चूर्ण एवं तिल, सरसों तथा निम्बा का तेल मिलाकर पेया या अन्न का प्रयोग करें ।

सूत्र – कफज कास में रोगी दशमूल का पकाया जल, धूप में गरम किया जल अथवा मधु मिला जलपान करें अथवा पुष्कर मूल, अमल तास तथा परवल समभाग इन सभी का चूर्ण जल में राम भर रख तथा छान कर और उसमें शहद मिलाकर भोजन के पहले, मध्य तथा अन्त में या प्यास लगने पर पान करें ।

सूत्र – (1) पीपर, पीपरामूल, अदरक तथा बहेड़ा, (2) यवक्षार, (3) इन्द्रायण, पिपरामूल तथा निशोथ का चूर्ण इन आधा श्लोक से समाप्त होने वाले तीन अवलेह द्रव्यों को मधु में मिलाकर चाटें । ये अवलेह कफकास को दूर करने वाले हैं ।

सूत्र – (1) मरिच का चूर्ण मधु के साथ, (2) अगर का चूर्ण मधु के साथ, (3) कण्ठकारी का रस मधु के साथ, (4) वन भण्ठा का रस मधु के साथ, (5) भृंगराज का रस मधु के साथ, (6) कासघ्न (कसौंदी) का रस मधु के साथ, (7) काली तुलसी का रस मधु के साथ कफकास का रोगी चाटे ।

सूत्र – वातकफजकास में (1) देवदारू, कचूर, रास्ना, तथा काकड़ासिंघी, (2) पीपर, सोंठ, नागरमोथा, हर्रे, आँवला तथा मिश्री, (3) धान का लावा, मिश्री, घी, काकड़ा, सिंघी तथा आँवला समभाग इन आधा श्लोक से समाप्त होने वाले द्रव्यों का चूर्ण, इन तीनों अवलेहों को मधु तथा तेल मिलाकर चाटें ।

सूत्र – अनार फल के छिलका का चूर्ण दो पल (100 ग्राम) पुराना गुड आठ पल (400 ग्राम), तथा व्योष (सोंठ, पीपर, मरीच चूर्ण) तीन पल (150 ग्राम) इन सभी को एकत्र मिलाकर वटी बनायें, यह रूचिकर, जठरग्नि दीपक, स्वर के लिए हितकर पीनस रोग, श्वासरोग तथा कास को दूर करता हैं ।

सूत्र – कफज कास में पाचन के लिए ज्वर प्रकरण में कहे गये पथ्यादि पाचन योग में काकड़ा सिंघी का चूर्ण मिलाकर पान करें ।

सूत्र – कफज कास में पचन के लिए अजवायन, निशोथ, इन्द्रायण की जड़, नागरमोथा तथा पुष्कर मूल समभाग इन द्रव्यों को गौमूत्र में क्वाथ कर तथा पीपर का चूर्ण मिलाकर कफज कास

का रोगी पान करे ।अथवा पूर्वोक्त द्रव्यों को शुद्ध जल में पकाकर तथा छानकर और उसमें पीपर का चूर्ण मिलाकर पान करे ।

सूत्र – दशमूल का क्वाथ एक आढक (4 किलो) में घृत एक प्रस्थ (1 किलो) पुष्करमूल कचूर, बेल का गूदा, तुल सी, व्योष (सोंठ, पीपर, मरिच) तथा हिंगु एक -एक अक्ष (प्रत्येक 10 ग्राम) इन सभी के कल्क के साथ विधिवत् घृत सिद्ध करें और इस घृत को पान करने के बाद पेया पीवे । यह वात-कफज रोग को तथा विशेष कर कास को नष्ट करता है ।

सूत्र – निगुण्डी (सम्भालु) पत्र के क्वाथ मेंविधिवत् सिद्ध घृत कास को दूर करता हैं अथवा विडगं के क्वाथ में त्रिकटु (सोंठ, पीपर, मरीच) के कल्क के साथ विधिवत् सिद्ध घृत कास को नष्ट करता हैं ।

सूत्र – श्वेत पुनर्नवा, रक्त पुनर्नवा, चीढ़ का बुरादा, कसौंदी, गुडूची, परवल का पत्ता, वनभण्टा की जड़ तथा मरूआ समभाग इन सभी के क्वाथ में समभाग गाय का दूध मिलाकर त्रिकुट (सोंठ, पीपर, मरीच) के कल्क के साथ विधिवत् घृत सिद्ध करे । इसका उपयोग करने का कास विषमज्वर, क्षय रोग तथा अर्श रोग का भय नहीं होता हैं अर्थात् ये रोग नष्ट हो जाते हैं ।

सूत्र – मूल, फल तथा पत्र सहित कण्टकारी (भठकटैया) के क्वाथ एक आढक (4 किलो) में घृत एक प्रस्थ (1 किलो) बला (बरियार) , व्योष (सोंठ, पीपर, मरिच) विडंग, कचूर, अनार, सौवर्चल नमक, यवक्षार, पिपरामूल, आँवला पुष्कर मूल, लाल पुनर्नवा, वनभण्टा, हर्रे, अजवायन, चित्रक, ऋद्धि, मुनक्का, चव्य, सफेद -पुनर्नवा, यवासा, अम्लवेंत, काकड़ा सिंघी, भूई आँवला, वमनेठी, रास्ना तथा गोखरू समभाग सम्मिलित द्रव्य 250 ग्राम के कल्क के साथ विधिवत् घृत सिद्ध करे और इसका प्रयोग सभी प्रकार के कास, श्वास तथा हिचकी में करे ।

विश्लेषण – यह घृत कास श्वास में अधिक लाभकारी हैं । इनका प्रयोग विशेष रूप से किया जाता हैं । यर्थाथ औषध का मान कुछ दिया हैं और कुछ नहीं दिया हैं । सामान्य नियम से कल्क से चौगुना घृत, और घृत से चौगुना क्वाथ देकर घृत पकाया जाता हैं । आयुर्वेद में सामान्य सेर चौसठ रूपये भरकर होता हैं और आ ढ़क चार सेर का इस नियम से कण्टकारी एक किलो

लेकर 16 किलो जल में पकावे जब चार किलो शेष रह जाये तो उसमें 1 किलो घृत बला आदि समभाग द्रव्यों को 250 ग्राम लेकर तथा पीसकर कल्क बनावे और घृत सिद्ध करें ।

सूत्र – कण्टकारी का पचांग एक तुला (5 किलो) जल एक वाह (4 द्रो ण – 64 किलो) में पकावे और एक आढ़क (4 किलो) शेष रहने पर छान ले तथा उसमें व्योष (सोंठ, पीपर, मरिच) रास्ना, गुडूची, चित्रक काकड़ा सिंघी, वमनेठी, नागरमोथा, पिपरा मूल तथा यवासा समभाग आधा – आधा पल प्रत्येक 25 ग्राम द्रव्यों का चूर्ण बनाकर छोड़ दे और घृत सोलह पल (1 किलो 600 ग्राम) तथा शुद्ध शक्कर 2 किलो मिलाकर पुनः पकाये । इसके बाद जब कलछुल में चिपकने लगे तब उतार कर तथा शीतल कर पीपर का चूर्ण 2 कुडव (500 ग्राम), वंशलोचन दो कुडव (500 ग्राम) तथा एक वर्ष का पुराना शहद दो कुडव (500 ग्राम) मिला दें और अवलेह तैयार कर लें । यह अवलेह गुल्मरोग, हृदय रोग, अर्शरोग, श्वास रोग तथा कास रोग को दूर करता हैं ।

सूत्र – कास में कफ की अधिकता होने पर मैन सिल, हरताल, मुलेठी, जटामांसी, नागरमोथा तथा इङ्गुदी (हिंगोट) के छाल का शमन तथा शोधन धूम्रपान करे और कासघ्न विधि से धूम्र का पान कर कफ के निकल जाने पर गुड़ मिश्रित ईषदुष्ण दूध पान करें । यह धूम्रपान वात -कफ प्रधान पुराने कास को शीघ्र ही नष्ट करता हैं ।

विश्लेषण – विभिन्न द्रव्यों का धूम की मात्रा यहाँ नहीं लिखी गयी हैं । सममात्रा में लेने से हरताल तथा मैनसिल विषकारक हो जायेगा । अतः मुलेठी आदि चार द्रव्यों को दश -दश ग्राम तथा मैनसिल हरताल को ढाई-ढाई ग्राम लेकर चूर्ण बना ले तथा प्रातः -सायं चिलम पर आग रखकर आग के ऊपर 5 ग्राम चूर्ण को रखकर धूम्रपान करें ।

सूत्र – कफज कास में पित्त संसर्ग से तमक श्वास होने पर पैत्तिक कास शामक चिकित्सा अवस्था के अनुसार अधिक काल तक करें ।

सूत्र – कफानुबन्धी वात कास में कफनाशक चिकित्सा करे । पित्तानुबन्धी व कफज कास में पित्त कास नाशक चिकित्सा करें ।

सूत्र – वात-कफ जन्य शुषक कास में स्निग्ध उपचार तथा आर्द्रकास में रूक्ष उपचार करे । पित्तयुक्त कफ कास में तिक्तरस युक्त उपचार (आहार – विहार तथा औषध) करे ।

सूत्र – उरः प्रदेश के भीतरी भाग में क्षत होने पर तत्काल लाख का चूर्ण मधु मिलाकर दूध के साथ पान करे । उसके पच जाने पर दूध के ही साथ जड़हन धान का भात शक्कर मिलाकर खाये । रोगी को पार्श्वशूल, वस्ति आदि मलाशय में पीड़ा, पित्त तथा अग्नि की अल्पता होने पर लाक्षाचूर्ण को मद्य के साथ पान करें । टूट-टूट कर पखाना के होने पर नागरमोथा, अतीस, पाठा तथा कोरैया का छाल के चूर्ण केसाथ लाक्षा चूर्ण को घी तथा मधु मिलाकर चाटें । अथवा जीवनीय गण के द्रव्यों के चूर्ण को लाक्षा तथा मिश्री मिलाकर पान करें । क्षतज कास का रोगी जाठराग्नि के प्रदीप्त रहने पर वंशलोचन का चूर्ण तथा घी में भूनी गेहूँ के आटा को दूध में पकाकर पान करे ।

सूत्र – उरक्षत का रोगी सन्धान के लिए तालमखाना, कमलनाल की ग्रंथियाँ (कमल का केशर तथा चन्दन समभाग इन सभी के साथ विधिवत् पकाया दूध पान करें । यदि उसके साथ ज्वर तथा दाह हो तो कच्चे यव के चूर्ण (दलिया) को दूध में पकाकर तथा घृत मिलाकर पान करें । अथवा सत्तू को मिश्री तथा मधु मिलाकर दूध के साथ पान करे ।

सूत्र – कास का रोगी मधुर रस वाले औषधों (मुलेठी आदि औषधों) से विधिवत् सिद्ध घृत पान करे । अथवा गुड़ का क्वाथ शीतल होने पर मरीच का चूर्ण तथा मधु मिलाकर पान करें । अथवा आँवला का चूर्ण दूध में पकाकर तथा घृत मिलाकर पान करे । अथवा पीपर को रसायन विधि से विभिन्न रूप में प्रयोग करे ।

सूत्र – क्षतज कास का रोगी पर्वो तथा अस्थियों में शूल होने पर महुआ का फूल, मुलेठी, मुनक्का, वंशलोचन, पीपर तथा वरियार समभाग इन सभी का चूर्ण घृत तथा मधु मिलाकर चाटें ।

सूत्र – त्रिजात, (दान चीनी, इलायची, तेजपात), आधा -आधा कर्ष (प्रत्येक 5 ग्राम), पीपर आधापल (25 ग्राम), मिश्री, मुनक्का, महुआ का फूल तथा खजूर एक-एक पल (प्रत्येक 50 ग्राम) इन सभी का महीन चूर्ण बनाकर मधु के साथ वटिका बनाये। यह वृष्य होती हैं तथा रक्तपित्त को

नष्ट करती हैं । इसके अतिरिक्त कास, श्वास, अरूचि, वमन, मूर्च्छा, हिचकी, मद, चक्कर, उरःक्षत क्षयरोग, स्वरभ्रंश, प्लीहारोग, शोथ, आढयवात (वात रक्त), थूक से खून निकला, हृदय पार्श्व शूल, भूख, प्यास तथा ज्वर को भी नष्ट करती हैं ।

सूत्र – पुनर्नवा चूर्ण, शक्कर, लालधान के चावल का चूर्ण इन सभी को मुनक्का का रस, दूध तथा घृत में सिद्ध कर क्षतज कास में रक्त निकलने पर पान करे । अथवा महुआ का फूल, मुलेठी तथा दूध में सिद्ध चौलाई का शाक भक्षण करे । मूत्राशय आदि विभिन्न मार्गों से रक्त निकलने पर रक्त-पित्त में बताये हुए औषध का प्रयोग करे ।

सूत्र – क्षतज कास में वात की गति विलोम होने पर बकरी का मेदा (दूध का मावा) भूनकर तथा सेंधा नमक मिलाकर साथ खाये । क्षतज कास का रोगी, क्षाम, क्षीण, अनिद्रा वाला तथा प्रदीप्ताग्नि वाला हो तो घी, मधु तथा मिलाकर पके दूध की मलाई खाये । क्षीण, क्षत तथा कृश रोगी यव, गेहूँ जीवक तथा ऋषभक के चूर्ण को मधु तथा शक्कर मिलाकर चाटें और ऊपर से दूध पीये । अथवा क्षीण, क्षत तथा कृश रोगी पीपर का चूर्ण तथा शहद मिलाकर पान करें । यह मांस तथा रक्त को बढ़ाने वाला हैं ।

सूत्र – उरःक्षत का रोगी बल तथा इन्द्रिय के क्षीण (दुर्बल) होने पर वट, गूलर, पीपर, पाकड़ शाल, प्रियंगु, तालमस्तक, जामुन का छाल, चिरौंजी, पद्यकाठ तथा पलाश समभाग इन सभी के क्वाथ तथा कल्क के साथ विधिवत् पकाये दूध के दही से निकाले घृत के साथ जड़हन धान का भात खाये ।

सूत्र – क्षतज कास के रोगी के शरीर में वात-पित्त के प्रकोप से भेदन जैसी पीड़ा हो तो घृत का मालिश करे, और यदि केवल वात के प्रकोप से वेदना हो तो वातनाशक तेल का मालिश करे । हृदय तथा पार्श्व पीड़ा में जीवनीय गण के द्रव्यों से विधिवत् सिद्ध घृत का पान करे । अथवा रक्तपित्त की अविरोधी वातनाशक चिकित्सा करे । उरःक्षत में मुलेठी तथा नागबला के क्वाथ में समभाग दूध मिलाकर विदारी कन्द, पीपर तथा वंशलोचन के कल्क के साथ विधिवत् सिद्ध घृतपान हितकर होता हैं ।

सूत्र – गोखरू, खस, मजीठ, बरियार, गम्भारी, सुगन्धतृण, डाभ की जड़, पिठ वन, पलास, ऋषमक तथा शालपर्णी समभाग एक -एक पल (प्रत्येक 50 ग्राम) इन सभी को विधिवत् क्वाथ में चौगुना दूध मिलाकर, केवाछ, जीवन्ती, मेदा, ऋषभक, जीवक, शतावरी, ऋद्धि, मुनक्का, शक्कर गोरखमुण्डी तथा विस (कमल का नाल) समभाग इन सभी के कल्क (घृत के चतुर्थांश) के साथ घृत एक प्रस्थ (1 किलो) विधिवत् सिद्ध करें । यह वातरोग, हृदय रोग तथा शूल को दूर करता हैं और मूत्र कृच्छ् प्रमेह अर्श, कास, शोष तथा क्षयरोग को नष्ट करता हैं । इनके अतिरिक्त धनुष एवं व्यायाम जन्य तथा स्त्रीप्रसंग, भारवहन तथा मार्गगमन से खिन्न व्यक्तियों को बल तथा मांस को बढ़ाने वाला हैं ।

सूत्र – मुलेठे आठपल (400 ग्राम) तथा मुनक्का एक प्रस्थ (1 किलो) इन सभी के विधिवत बनाये क्वाथ में तथा पीपर आठ पल के कल्क में घृत एक प्रस्थ विधिवत् सिद्ध करें और शीतल होने पर शहद आठ पल (400 ग्राम) तथा शक्कर आठपल मिलाकर रख लें । इसके बाद उसमें मात्रा के अनुसार समभाग यव का सत्तू मिलाकर खाये । यह क्षतक्षीण तथा रक्तगुल्म के रोगी के लिए हितकर है ।

सूत्र – आँवला का रस, विदारी कन्द का रस, गन्ना का तथा जीवनीयगण के द्रव्यों का रस एक –एक प्रस्थ (प्रत्येक 1 किलो), गाय का घृत एक प्रस्थ, गाय का दूध एक प्रस्थ तथा बकरी का दूध एक प्रस्थ इन सभी के साथ विधिवत् घृत सिद्ध करें । घृत सिद्ध हो जाने पर छान कर उसमें शक्कर एक प्रस्थ तथा मधु एक प्रस्थ मिला दें । यह अवलेह राजयक्ष्मा रोग, अपस्मार, रक्त – पित्त, कास, प्रमेह, तथा यक्ष्मा रोग को नष्ट करता हैं और अवस्था को स्थिर रखने वाला, आयु को देने वाला, मांस शुक्र तथा बल को बढ़ाने वाला हैं।

सूत्र – पित्त के अधिक होने पर घृत चाटें और वात के अधिक होने पर घृत पीवे । घृत चाटने से पित्त को शान्त करता हैं और थोड़ी मात्रा में होने से अग्नि को नाश नही करता हैं । पीने पर वायु को दबाता है और ऊष्मा (पित्त की गर्मी) को रोक देता हैं ।

सूत्र – क्षाम(कान्ति हीन), क्षीण तथा कृश व्यक्तियों के लिए इन्हीं घृतों में वंशलोचन, शक्कर, पीपर चूर्ष तथा लावा का चूर्ण मिलाकर प्रयोग करें । घृत में वंशलोचन धान का लावा का चूर्ण

तथा शहद मिलाकर मोदक बनाये और खाकर ऊपर से दूध पीवे । इसके सेवन से शुक्र, पराक्रम, बल तथा पुष्टि की प्राप्ति शीघ्र ही होती हैं ।

सूत्र – त्वचा तथा बीज रहित सफेद कोहड़ा एक तुला (1 किलो) को उबाल लें और घृत एक प्रस्थ (1 किलो) में कलछुल से चलाते हुए पकावें । लालिमा आ जाने पर उसमें शक्कर 100 पल (5 किलो), पीपर, सोंठ तथा जीरा का चूर्ण दो -दो पल (प्रत्येक 100 ग्राम) त्रिजात (दालचीनी, इलायची, तेजपात), धनिया तथा मरिच आधा -आधा पल (प्रत्येक 25 ग्राम) का चूर्ण मिला दें और उतारने के बाद शीतल होने पर मधु घृत के आधा (500 ग्राम) देकर मथानी से मथ कर घृत स्निग्ध पात्र में रख दें । यह प्रयोग करने से कास, हिचकी, ज्वर, श्वास, रक्त -पित्त तथा उरःक्षत को नाश करता हैं । यह उरःसंधान कारक,मेधा, स्मृति तथा बल को देने वाला हैं । यह कुष्माण्डक रसायन अश्विनी कुमारों के द्वारा कहा गया हृदय को बल देने वाला हैं ।

सूत्र – नागबला मूल की छाल का चूर्ण आधा कर्ष (5 ग्राम) की मात्रा में प्रतिदिन बढ़ाते हुए एक पल की मात्रा तक बढ़ाकर एक मास तक दूध के साथ खाये और केवल दूध इच्छानुसार पीवे, अन्न न खाये । यह योग उत्तम पुष्टि, बल तथा वर्ण को बढ़ाने वाला हैं । इसी प्रकार मण्डूकपर्णी, मुलेठी तथा सोंठ का कल्प करे ।

सूत्र – नागबल का मूल एक तुला (5 किलो), जल एक द्रोण (16 किलो) में पकावे तथा (4 किलो) चौथाई शेष रहने पर छान लें और घृत तथा दूध क्वाथ के समभाग (प्रत्येक 4 किलो) मिलाकर उसमें अतिबलाबला, मुलेठी, पुनर्नवा, प्रपौण्डीक, गम्भारी चिरौंची , केवाछ, असगन्ध शक्कर, शतावरि, मेदा, महामेदा, गोखरू, काकोली, क्षीरकाकोली, विदारी कन्द, सफेद जीरा तथा स्याह जीरा एक-एक पल (प्रत्येक 50 ग्राम) के कल्क के साथ विधिवत् घृत सिद्ध करे । यह नागबला घृत रक्तपित्त, क्षतजकास, क्षयजकांस, प्यास, चक्कर तथा दाह को दूर करता हैं तथा अच्छी तरह बल तथा पुष्टि को बढ़ाता हैं । बलि तथा पलित (बाल का पकना) को नाश करता हैं । इस घृत का प्रयोग कर वृद्ध भी छः मास में तरूण हो जाता हैं । अर्थात् तरूण के सदृश शक्तिशाली हो जाता हैं ।

सूत्र – क्षतज कास में जाठराग्नि के प्रदीप्त रहने पर पूर्वोक्त से (रसायन घृत आदि से) चिकित्सा करे । जाठराग्नि के मन्द होने पर यक्ष्मा रोग के प्रकरण में कहे गये दीपन पाचन योगों का प्रयोग करे और क्षतज कास के रोगी के मल पतला होने पर ग्राही औषध का प्रयोग करे ।

सूत्र – दशमूल (बेल, जम्भारी, सोना पाठा, अरली, पाढ़ल, शालपर्णी, पृश्निपर्णी, भटकटैया, बन भंटा तथा गोखरू) केवाछ बीज, शंखपुष्पी, कचूर बला, पीपर, अपामार्ग, पिपरा मूल, चित्रक, भार्डी तथा पुष्कर मूल प्रत्येक दो -दो पल (प्रत्येक 100 ग्राम), यव एक आढ़क (4 किलो)स हर्रे का एक सौ फल इन सभी को जल पाँच आदक (लगभग 20 किलो) में पकावे । यव के पक जाने पर क्वाथ को छान ले और उसमें हर्रे एक सौ, गुड़ दो तुला (10 किलो) घृत एक कुडव (250 ग्राम), तैल एक कुडव (250 ग्राम), पीपर का चूर्ण एक कुडव (250 ग्राम) मिलाकर विधिवत् पकावे । शीतल हो जाने पर मधु 250 ग्राम मिला दे । इस रसायन में से दो हर्रे लेकर प्रतिदिन भक्षण करे । यह रसायन बली पलित को नष्ट करता हैं तथा वर्ण, आयु एवं बल को बढ़ाता हैं । इनके अतिरिक्त पाँच प्रकार के कास, क्षयरोग, श्वास रोग, हिचकी, विषम ज्वर, प्रमेह, गुल्म, रोग, ग्रहणी अर्शा, हृदय रोग, अरूचि तथा पीनस रोग को नष्ट करता हैं । अगस्त्य मुनि का बनाया हुआ यह अगस्त्य हरीतकी रसायन धन्य तथा सबसे उत्तम हैं ।

सूत्र – दशमूल, बला, मूर्वा, हल्दी, दारू हल्दी, पीपर, गजपीपर, पाढा, अश्वगन्धा, अपामार्ग, केवाछबीज, अतीस, गुडूची, कच्चा बेल, निशोथ, दन्तीमूल, तेजपत्र, चित्रक, विदारी कन्द, कुटजछाल, हिस्रा, वियसार का फूल तथा सार, वोट (मुण्डी) स्थाविर (शैलय -छड़ीला), भल्ला – तक, विकगत (बबूर की छाल) शतावरी, पूतिकराज्ज, अमलतास, चन्द्रलेखा (वाकुची), सहचर, सहिजन, नीम की छाल था तालमखाना समभाग एक -एक पल (प्रत्येक 50 ग्राम) हर्रे ग्यारह सौ नग, यव दो आढ़क (8 किलो) इन सभी को आठ गुने जल में पकावें और यव के पक जाने पर छान ले । इसके उसमें पूर्वोक्त हर्रे ग्यारह सौ, पुराना गुड़ दो तुला (10 किलो), तैल, घृत तथा आंवला का रस एक-एक प्रस्थ (प्रत्येक 1 किलो) मिलाकर पुनः मन्द आँच में दर्वी लेप पकावें । तदन्तर उतार कर शीतल होने पर उसमें मधु दो प्रस्थ (2 किलो) तथा पीपर का चूर्ण 250 ग्राम और त्रिजात (इलायची, दालचीनी, तेजपत्र) का चूर्ण 150 ग्राम मिलाकर चला दे । इसके बाद उसको पुराने स्निग्ध मिट्टी के पात्र में रख कर धन की ढेर में एक मास रखे और निकाल कर उसमें से दो-दो हर्रे पूर्वोक्त प्रकार से (हर्रे 2 तथा अवलेह 20 ग्राम) भक्षण करें । यह वशिष्ठ का कहा हुआ रसायन अगस्त्य हरीतकी रसायन से गुण में अधिक हैं । व्यक्तियों के लिए सभी ऋतुओं में प्रशस्त है । इसमें किसी प्रकार का परहेज की आवश्यकता नहीं हैं ।

सूत्र – सेन्धा नमक 50 ग्राम, सोंठ 100 ग्राम, सौवर्च नमक 100 ग्राम, विषमिल 250 ग्राम खद्य अनारदाना 250 ग्राम, सूखा तुलसी का फल एक कुडव 250 ग्राम, मरिच तथा सफेद जीरा 50 ग्राम, धनियाँ दो चातुर्थिक 100 ग्राम इन सभी का चूर्ण बनाकर उसमें शक्कर 600 ग्राम मिला दें । इसमें से मात्रा पूर्वक अन्न -पान में प्रयोग करे । यह रूचिकारक जाठरग्निदीपक, बलकारक, पार्श्व पीडा श्वास तथा कास को जीत लेता हैं ।

सूत्र – धनियाँ एक 50 ग्राम, जीरा तथा अजवायन प्रत्येक 100 – 100 ग्राम, अनारदाना तथा वृक्षाम्ल चार-चार सौवर्चल नामक 50 ग्राम सोंठ एक कर्ष 10 ग्राम**,** षोडशिका (प्रत्येक 200 ग्राम) कैथ का गूदा पाँच पल (250 ग्राम) इन सभी का चूर्ण बनाकर उसमें शक्कर सोलह पल (800 ग्राम) मिला दे । इस खाण्डव को पूर्व प्रकार से अन्न -पान में प्रयोग करे ।

सूत्र – जिस कास के रोगी का उरःक्षत के दोष समाप्त हो जाने पर कफ के बढ़े रहने पर उरः प्रदेश तथा सिर में फटने के समान पीड़ा रहे उसको निम्नलिखित धूम्रपान करावें ।

1 – मेदा, महामेदा, बला, नागबला तथा मुलेठी सम्भाग इन सभी का कल्क बनाकर उससे कपड़े पर लेप करें और उसकी वर्ती बनाकर सूखने पर धूम्रपान करे और बाद में जीवनीय घृत का पान करें ।

2 – मैनसिल, पलास, अजमोदा, दालचीनी, दूध तथा सोंठ समभाग इन सभी के कल्क का वस्त्र के ऊपर लेप लगाकर वर्ती बनावें और सुखाकर उसका धूम्रपान करें तथा शक्कर का शर्बत, गन्ने का रस या गुड़ का शर्बत पीवें ।

3 – गीले वट के टूसा के साथ समभाग मैनसिल को पीस कर तथा घृत मिलाकर कपड़े के ऊपर लेप लगाकर वर्ती बनावें और सूखने पर उसका धूम्रपान करें ।

विश्लेषण – इन द्रव्यों को कपड़े पर लपेटकर सूख जाने के बाद बत्ती बनावे । इन बत्तियों को एक-एक इच्छ का टुकड़ा कर रख ले । पीते समय चीलम के ऊपर से ढक दें । इस चीलम को धूमनेत्र पर रखकर आग रखे और चीलम को ऊपर से ढक दें । इस चीलम को धूमनेत्र पर रखकर गुड़गुडे से धूम्रपान करें । धूमनेत्र के लम्बाई की अनुसार धूमकी तेजी कम हो जाती हैं । अतः धूम मृदु हो जाता हैं अथवा हुक्का जिसके नीचे के भाग से जल भरा रहता हैं, उससे धूम जल से आकर मृदु हो जाता हैं । यह श्वास कास हिक्का में लाभकर होता हैं ।

सूत्र – क्षयज कास में सर्वप्रथम बृंहण तथा अग्निवर्द्धकर चिकित्सा करें । शरीर दोषों की अधिकता तथा मेद क्षीण होने पर घृतयुक्त मृदु विरेचन का प्रयोग करें । इसके लिए अमल तास के कल्क या निशोथ के कल्क तथा मुनक्का के रस साथ अथवा तिल्वक (लोध) के कषाय के साथ अथवा विदारी कन्द रस के साथ विधिवत् सिद्ध करे और इस विशोधन घृत को युक्ति पूर्वक पान करें ।

सूत्र – क्षयज कास के रोगी पित्त, कफत तथा धातुओं के क्षीण होने पर काकड़ासिंधी, बला तथा नाग बला के कल्क और गोदुग्ध के साथ विधिवत् सिद्ध घृत पान करें ।

सूत्र – क्षयज कास में विदारी कन्द, कदम्ब अथवा ताल (तड़कुल) के बाल के साथ विधिवत् सिद्ध घृत तथा दूध पीवें । मूत्र की विवर्णता, मूत्रकृच्छ, मूत्रेन्द्रिय, गुदा, श्रेणि प्रदेश तथा वंक्षणदेश में वेदनायुक्त शूल होने पर हल्का घृत मण्ड या मिश्रक (घृत-तेल मिश्रण) से अनुवासन वस्ति का प्रयोग करें ।

सूत्र – क्षयज कास से पीडित व्यक्ति चव्य, त्रिफला, वमनेठी, दशमूल, चित्रक, कुलथी, पिपरामूल, पाठा, वनवेर तथ्ज्ञा यव समभाग इन सभी के क्वाथ तथा सोंठ, यवासा, पीपर, कचूर पुष्कर मूल एवं काकड़ा सिंघी समभाग इन सभी के कल्क के साथ विधिवत् सिद्ध घृत में दोनों क्षार, तथा पाँचों लवण उचित मिलाकर बलाबल के अनुसार मात्रापूर्वक घृत पान करें।

सूत्र – कसौंदी, हर्रे, नागरमोथा, जायफल, सोंठ, पीपर, कुटकी, गम्भारी तथा तुलसी समभाग एक-एक कर्ष (10 ग्राम प्रत्येक) के कल्क के साथ दूध मुनक्का के रस एक-एक आढ़क (प्रत्येक लगभग 4 किलो) में घृत एक प्रस्थ (1 किलो) विधिवत् सिद्ध करें । यह घृत शोष, प्लीहा वृद्धि तथा सभी प्रकार के कास को दूर करता हैं और आरोग्यकारक हैं।

सूत्र – अडूसा, कण्टकारी तथा गुडूची के पत्र, मूल, फल तथा अंकुर के रस तथा कल्क के साथ विधिवत् घृत सिद्ध करें । यह कास, ज्वर तथा अरूचि को नष्ट करता हैं । अथवा क्षयज कासका

रोगी घृत के दुगुना अनार का रस तथा व्योष (सोंठ, पीपर, मरिच) के कल्क के साथ विधिवत् घृत सिद्ध करें । ये घृत क्षयज कास के रोगियों के जाठराग्नि को बढ़ाने के लिए तथा बद्धदोष, कण्ठ उर तथा स्त्रोतसों को शुद्ध करने के लिए उत्तम होते हैं ।

सूत्र – यव का क्वाथ एक प्रस्थ (750 ग्राम) में बीस हर्रे पकावें । पक जाने पर उसको बीज निकाल कर मसल ले और उसमें पुराने गुड़ 150 ग्राम पीपर का चूर्ण 100 ग्राम, शु मैनसिल 12 ग्राम तथा रसाञ्जन आधा अक्ष (6 ग्राम) मिलाकर पुनः अवलेहवत् पकावें । यह अवलेह श्वास कास को दूर करता हैं ।

सूत्र – साही के कण्टकों को अन्तर्धूम जलाकर उस भस्म को घृत, मधु तथा शक्कर के साथ मात्रापूर्वक चाटने से श्वास तथा कास दूर होते हैं । अथवा एरण्ड पत्र का क्षार, व्योष (सोंठ, पीपर, मरिच) के चूर्ण, तैल तथा गुड़ मिलाकर चटायें या केवल क्षार चटाये अथवा तुलसी तथा एरण्ड पत्र का क्षार चटाये, अथवा त्र्यूषण (सों ठ, पीपर, मरिच) का चूर्ण पुराना गुड़ तथा घृत के साथ चटाये । यह उत्तम कास -नाशक हैं । हर्रे, सोंठ तथा नागर मोथा के समभाग के चूर्ण में गुड़ मिलाकर वटिका बनाये और मुख में धारण करें । अथवा केवल बहेड़ा सभी प्रकार के श्वास कास में लाभदायक हैं ।

सूत्र – लोध के पत्तों का कल्क बनाकर घी में तल ले तथा शक्कर मिलाकर पेया बना ले अथवा उलटा (पपड़ा) बना लें । यह वमन, प्यास, कास तथा आमातिसार को दूर करती हैं ।

सूत्र – कण्टकारी के रस में सिद्ध मूंगयूष अच्छी तरह हींग, जीरा आदि से संस्कृत तथा पका हुआ पीली आँव की खटाई युक्त मूंग का यूष सभी प्रकार के कास को जीत लेता हैं।

सूत्र – क्षतज कास में अनुपान सहित जिन धूमों का निर्देश किया गया हैं उन सबको क्षयजकास में भी प्रयोग करना चाहिए । राजयक्ष्मा प्रकरण में जो बृंहण, दीपन तथा एवं स्त्रोतसों के संशोधन का निर्देश करेंगे उनको व्यत्यासक्र म से (दीपन-बृंहण बृंहण – दीपन पुनः दीपन-बृंहण-दीपन) तथा सभी प्रकार के बलर्द्धक पदार्थों का सेवन प्रशस्त होता हैं । क्षयजकास त्रिदोषज होता हैं अतः जिस दोष की प्रधानता हो उसके अनुसार चिकित्सा करे ।

चतुर्थ अध्याय

श्वास (दमा, अस्थमा) चिकित्सा

श्वासहिध्माचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ।

इति ह समाहुरात्रेयादयो महाकार्यः ।

अर्थ - कास चिकित्सा के व्याख्यान के बाद श्वास -हिध्मा चिकित्सा व्याख्यान करेंगे ऐसा आत्रेयादि महर्षियों ने कहा था –

सूत्र – श्वास रोग तथा हिक्का रोग के कारण उत्पत्ति स्थान तथा दोषतुल्य(समान) होते हैं अतः उनको दूर करने के साधन भी समान ही होते हैं । श्वास तथा हिक्का से पीड़ित रोगी को वक्ष प्रदेश पर तैल तथा नमक लगाने के बाद पहले स्वदेन कराये । इससे स्त्रोतसों में चिपका भी गाँठदार कफ विलीन होकर कोष्ठ में आ जाता हैं और सुगमता से निकालने योग्य हो जाता हैं । कफ जाने से स्त्रोतस मुलायम हो जाते हैं और वायु का अनुलोमन हो जाता हैं । स्वेदन करने के बाद रोगी को स्निग्धभोजन के साथ या दही के मलाई के साथ दें । इसके बाद रोगी को मृदु वमन कारक औषध दें ।

सूत्र – श्वास तथा हिक्का रोग के साथ कास, वमन, हृदय की गति में रुकावट तथा स्वर भेद हो तो पीपर का चूर्ण तथा सेन्धा नमक मधु मिलाकर जो वातवद्धक न हो ऐसा अन्न दें । इस प्रकार दूषित वातादि दोषों द्वारा रूका हुआ कफ निकल जाने पर आराम मिलता हैं और स्त्रोत सों के शुद्ध हो जाने पर श्वास-हिक्का में वायु बिना रूकावट भ्रमण करने लगता है ।

सूत्र – आध्मान तथा उदावर्त से युक्त तमक श्वास में बिजौरा नींबू का रस, अम्लवेत, हींग, पीलु तथा विड नमक मिलाकर अन्न दे । वह अनुलोमन करने वाला होता हैं। अथवा सेन्धा नमक तथा खट्टा अनारदाना के साथ निशोथ आदि विरेचन द्रव्यों को गरम कर दे । ये श्वास हिक्का रोग कफ से गति के रूक जाने से प्राणवायु के प्रकोप से उत्पन्न होते हैं । अतः ऊर्ध्व तथा अधोमार्ग की शुद्धि के ऊर्ध्व तथा अधः शोधन (वमन -विरेचन) हितकर होता हैं । बहता हुआ जल मार्ग के अवरोध हो जाने से जैसे अधिक बढ़ जाता हैं, उसी प्रकार कफ द्वारा वायु का मार्ग अवरूद्ध होने

पर वायु अधिक बढ़ जाता हैं । अतः वायु के मार्ग का ऊर्ध्वाधः (वमन -विरेचन के द्वारा) शोधन करें ।

विश्लेषण – हिक्का-श्वास रोग प्राण वायु तथा उदान वायु के प्रकोप से होता हैं । प्राणवायु का मार्ग श्वासनली, फुफ्फुस तथा वक्ष प्रदेश हैं । जब इन स्थानों में कफ की वृद्धि और वायुद्वारा उनका शोषण होता हैं तो शोषित कफ वायु के मार्ग को रोकता हैं । जिससे प्राण वायु अधिक प्रकुपित होकर श्वास या हिक्का को उत्पन्न करता हैं । ऐसी अवस्था में वक्ष प्रदेश पर स्नेहन तथा नमक का मालिस कर वमन देते हैं । इससे कफ के निकल जाने के बाद वायु का प्रकोप शान्त हो जाता हैं । अथवा घी तथा नमक का मालिश कर गर्म कपड़ा से सेक करने पर आराम मिलता हैं । यदि श्वास या हिक्का रोग में आध्मान हो तो अपानवायु की विकृति होती हैं। इसमें बिजौरा निंबू के साथ बनाये हुए चूर्ण को भोजन में मिलाकर पहले देने से अपानवायु शान्त हो जाता हैं । यदि शान्त न हो तो मृदु विरेचन देना चाहिए ।

सूत्र – पूर्वोक्त प्रकार से संशोधन करने के बाद भी श्वास के शान्त न होने पर फुफ्फुस में चिपके हुए दोष को विविध धूमों से निर्हरण करे । हल्दी का पत्र, एरण्डमूल, मुनक्का, मैनसिल, देवदारू, हरताल तथा जटामांसी समभाग इन सभी को पीसकर वर्ति बनावे और घी में डुबोकर उसका धूम्रपान करे । अथवा यव का चूर्ण घृत मिलाकर या मो म सर्जरस तथा घृत या श्रेष्ठ अगरू घृत मिलाकर या चन्दन घृत मिलाकर या गाय का सींघ बाल अथवा गुग्गुल या मैनसिल या शल्लकी का गोंद गुग्गुल, लोह (अगरू) तथा पद्मकाठ का चूर्ण घृत मिलाकर धूम्रपान करें ।

सूत्र – श्वास रोग में स्वेदन के योग्य हो या न हो उसको उरःस्थल या कण्ठ का मिश्री युक्त दूध या घृत आदि स्नेह के सेचन से या उत्कारिका (पपड़ा) तथा उपनाह (पोल्टिस) से या स्वराध्यायय में कहे गये स्वेदन औषधों से थोड़ी देर मृदु स्वेदन करे । आमदोष हो तो आम पचाने वाले औषध का प्रयोग करे ।

सूत्र – संशोधन के अतियोग होने पर प्रकुपित वायु को देखकर वात शामक स्निग्ध भोजनों से तथा थोड़ा उष्ण अभ्यगों से शान्त करे ।

सूत्र – जिनका कफ उमड़ा न हो तथा स्वदेन न किया गया हो और जो दुर्बल हो उनका संशोधन करने से वायु अपने स्थान को प्राप्त कर तथा मर्मस्थल(हृदय) को सुखाकर शीघ्र ही प्राणों को नष्ट करता हैं । अतः कषाय लेप तथा स्नेह पान आदि श्वास के शमन के लिए प्रयोग करें ।

विश्लेषण – श्वास तथा हिक्का में उरः प्रदेश और कण्ठ वायु से सूखकर चिपका रहता हैं । अतः स्नेहन, स्वेदन के बाद कफ ढीला होने पर वमन द्वारा निकाला जाता हैं । यदि स्नेहल-स्वेदन करने पर भी ढीलन हो और निकलने योग्य न हो तो पुनः स्नेहल -स्वेदन कर उसके ढीला होने पर निकाले । किन्तु बिना स्नेहन-स्वेदन किया कभी भी वमन न करायें । विशेषकर दुर्बल व्यक्तियों के कफ के ढीला न होने पर वमन नहीं कराना चाहिए । यदि असावधानता वश वमन दिया जाये तो कुपित वायु कफ के चिपके रहने वाले स्थान को नष्ट कर मर्मस्थान में जाकर रोगी के प्राण को नष्ट कर देता हैं । अतः बिना स्नेहन -स्वेदन किये हुए व्यक्ति को वमन नहीं करना चाहिए । ऐसी अवस्था में उसको कषाय, लेप, स्नेह आदि से संशमन उपचार करना चाहिए ।

सूत्र – क्षीण, क्षत, अतिसार, रक्तपित्त, दाह आदि से अनुबन्धित हिक्का तथा श्वास रोग का उपचार मधुर, स्निग्ध तथा शीतल औषध तथा अन्न पान आदि से करना चाहिए ।

सूत्र – श्वासरोग से पीडित व्यक्ति के लिए कुलत्था तथा दशमूल के विधिवत् क्वाथ में रस देना चाहिए । अथवा सहिजन, वनभं टा, कसौंदी, अडूसा तथा मूली या नीम, परवल, वनभण्टा तथा विजौरा नींबू की पत्तियों अथवा कण्टकारी, काकड़ा, सिंघी, बेलगिरी तथा गोखरू के पकाये जल से यूष तैयार कर श्वास के रोगी को दे ।

सूत्र – चित्रक, जीरा तथा काकड़ा सिंघी समभाग इन सभी के पकाये जल में पेया बनाकर तथा सौवर्चल नमक मिलाकर अथवा दशमूल के पकाये जल में पेया बनाकर पान कराये । यह कास, श्वास तथा हिक्का रोग को दूर करती हैं । अथवा दशमूला कचूर, रास्ना, वमनेठी, बेलगिरि, ऋद्धि, पुष्कर मूल, काकड़ा सिंघी, पीपर, भूई आँवला गुडूची तथा सोंठ समभाग इन सबका विधिवत् क्वाथ बनाकर पान कराये और पच जाने पर इन्हीं द्रव्यों के पकाये जल में विधिवत् पेया बनाकर पान कराये ।

सूत्र – कास, हृद्ग्रह, पार्श्वशूल, हिक्का तथा श्वासरोग की शान्ति के लिए जड़हन तथा साठी धान के चावल का भात, गेहूँ तथा यव की रोटी और मूंग तथा कुरथी का दाल खाये ।

सूत्र- मदार के दूध से भावित यव का सत्तू मधु मिलाकर तथा दशमूल के विधिवत् क्वाथ में घोलकर कास, हृदग्रह, पार्श्वशूल, हिक्का तथा श्वास का रोगी पान करे ।

सूत्र – श्वासरोगी के आहार में जवाखार, हींग, घृत विडनमक, अनारदाना, पुष्कर मूल, कचूर, व्योष (सोंठ, पीपर, मरिच) बिजौरा नींबू का रस तथा अम्लवेंत का प्रयोग विविध प्रकार से करे अथवा प्यास लगने पर हिध्मा तथा श्वास का रोगी दशमूल का क्वाथ या वारूणीमण्ड पान करें ।

सूत्र – पीपर, पिपरामूल, हर्रे, वायविडंग तथा चित्रक समभाग इन सभी के कल्क से लिप्त मजबूत मिट्टी के घृत पात्र में एक मास तक तक्र (मट्ठा) रखकर पान कराये । यह मट्ठा जाठराग्नि को प्रदीप्त करता हैं तथा श्वास एवं कासरोग को दूर करता हैं ।

सूत्र – सुरामण्ड में पाठा, गुडूची , देवदारू तथा सरल समभाग इन सबका चूर्ण एक रात्रि तक रखकर तथा थोड़ा नमक मिलाकर एक प्रसृति (100 ग्राम) की मात्रा में श्वास का रोगी पान करे अथवा वमनेठी तथा सोंठ के थोड़े गर्म जल में क्षार तथा मरिच का चूर्ण मिलाकर पान कराये । अथवा बाष्पिका (हिंगुपत्री) को उसी के क्वाथ के साथ पीस पान कराये ।

सूत्र – पित्त – कफानुबन्धी हिक्का तथा श्वास रोग में सप्तपर्ण या सिरीष के फूल का रस मधु तथा पीपर का चूर्ण मिलाकर पान कराये । पित्तानुबन्धी हिक्का श्वास में वंशलोचन, पीपर, गोंद तथा सोंठ के चूर्ण का घृत से पपड़ा बनावे और रोगी को भक्षण कराये । वातानुबन्धी हिक्का श्वास के रोगी को साही तथा खरहा का मांस पीपर का चूर्ण तथा साही के रक्त का घृत में पपड़ा बनाये और रोगी को दे अथवा चौगुना जल में विधिवत् सिद्ध दूध में गुड तथा सोंठ का चूर्ण मिलाकर पिलाये अथवा वात तथा पित्तानुबन्धी हिक्का श्वा स में हुर-हुर के स्वरस तथा कल्क से सिद्ध दूध जडहन धान के चावल का भात खाने के बाद पिलाये ।

विश्लेषण – उत्कारिका वंशलोचन, पीपर चूर्ण गेहूँ का आटा तथा सोंठ के चूर्ण को जल में गाढ़ा घोल बना कर तवे के ऊपर घी फैलाकर पतला फैला दिया जाये और कुछ पकने के बाद उसे

उलटा दिया जाये । जैसे परौठा बनाया जाता हैं उसी प्रकार जब दोनों तरफ पक जाये तो निकाल ले और श्वास के रोगी को खाने के लिए दे । इसी प्रकार अन्य उत्कारिका बनाई जाती हैं ।

सूत्र – पिपरा मूल तथा मुलेठी चूर्ण और गाय के गोबर का रस इन सभी को मधु तथा घृत मिलाकर चाटें । यह हिक्का, अभिष्यन्द तथा कास को नाश करने वाला हैं ।

सूत्र – जिस श्वास के रोगी का कफ बढ़ा हो वह गाय के गोबर का रस मधु के साथ चाटें या पीवे । जिसका कफ बढ़ा हो ऐसा श्वास का रोगी भस्म, काली भस्म अथवा अश्वगन्धा का अन्त धूम भस्म (काली भस्म) शहद के साथ चाटे । अथवा कचूर, पुष्कर मूल तथा आँवला का चूर्ण पीपर का चूर्ण मिलाकर शहद में चाटे । अथवा गेरू तथा कृष्णाञ्जन का या कपित्थ का रस मधु के साथ चाटें अथवा कैथ के रस, आँवला, सेन्धानमक त था पीपर का चूर्ण चाटें । अथवा हर्रे, वायविंडग, काली मिर्च तथा पीपर का चूर्ण घृत तथा मधु के साथ चाटें अथवा बैर का गूदा, लावा आँवला, मुनक्का, पीपर तथा सोंठ का चूर्ण अथवा गुड़, तैल, हल्दी, मुनक्का, पीपर, रासन तथा कालीमिर्च का चूर्ण मांस रस, जल मद्य तथा अम्लरस के साथ पान करें । अथवा सोंठ का चूर्ण आदि के साथ पान करे ।

सूत्र – जीवन्ती, नागरमोथा, तुलसी, दालचीनी, इलायची बड़ी, इलायची छोटी, पुष्कर मूल, चण्डा, भूँई आँवला, अगर, वमनेठी, सोंठ, सुगन्ध वाला, काकड़ा सिंघी, कचूर, पीपर, नागकेशर तथा चोरक समभाग इन सभी के चूर्ण के बराबर शक्कर मिलाकर रख लें । इस चूर्ण का प्रयोग अपनी इच्छा के अनुसार आहार तथा अनुपान के साथ करे । यह पार्श्व पीड़ा, ज्वर तथा कास को नष्ट करता हैं, हिक्क तथा श्वास को अच्छी तरह दूर करता हैं ।

सूत्र – कचूर, भूँई, आँवला, भारंगी, नकछिकनी, सुगन्ध बाला तथा पुष्कर मूल समभाग इन सभी के चूर्ण के आठगुना शक्कर मिलाकर रख ले । यह उचित मात्रा में प्रयोग करने से हिक्का तथा श्वास रोग को अच्छी तरह दूर करता हैं ।

सूत्र – श्वास तथा हिक्का रोग में सोंठ का चूर्ण तथा गुड़ समभाग लेकर भक्षण करे या नस्य ले । लहसुन या पलाण्डु के मूल का रस या गाजर के मूल का रस या चन्दन का रस का नस्य स्त्री के दूध में मिलाकर दे । अथवा महावर के रस में मिलाकर नस्य दे ।

सूत्र – पीपर, सौवर्चलनमक, यवक्षा र, वयस्या, हींग, चोरपुष्पी तथा हर्रे समभाग इन सभी के कल्क के साथ मस्तु (दही का पानी) तथा दशमूल के क्वाथ में विधिवत् घृत सिद्ध करे । इस घृत को हिक्काश्वास में पान करें । अथवा जीवनीय द्रव्यों के कल्क के साथ सिद्ध घृत में शहद मिलाकर चाटे।

सूत्र – तेजबल, हर्रे, कूट, पीपर, कुटकी, अजवायन, पुष्कर -मूल, पलास बीज, चित्रक, कचूर, सेन्धानमक, सौवर्चल नमक, भूई आँवला, जीवन्ती, बेलगिरि, वच तथा तालीसपत्र समभाग एक - एक कर्ष (प्रत्येक 10 ग्राम) हींग चौथाई भाग (2 ग्राम) इन सभी के कल्क के साथ घृत एक प्रस्थ (1 किलो) विधिवत सिद्ध करें । यह पीने से शीघ्र ही शाखा गत वायु, अर्शरोग, ग्रहणीरोग, हिक्का, हृदयशूल तथा पार्श्व पीड़ा को नष्ट करता हैं ।

सूत्र – हिक्का – श्वास में घृत के आधाभाग यवक्षार मिलाकर या सेन्धानमक मिलाकर घृतपान करें । अथवा धान्वन्तर घृत या वृषघृत या दाधिकघृत अथवा हपु षादिघृत पान करें ।

सूत्र – हिक्का रोग में सहसा शीतल जल का छींटा देना, भय देना, घबड़ाहट उत्पन्न करना, डराना, शोक उत्पन्न करना, हर्ष उत्पन्न करना श्वास, प्रश्वास को रोकना तथा अविषैले कीटों से कटाना ये सब हिक्का के वेग को शान्त करता हैं ।

विश्लेषण – कफ से वा यु के अवरोध होने पर हिक्का उत्पन्न होती हैं । इन क्रियाओं के द्वारा वायु प्रबल वेग से कफ को भेदनकर आने प्राकृतिक गति में हो जाता हैं । अतः वेग की शान्ति हो जाती हैं । यह चिकित्सा हेतु विपरीतार्थकारी होती हैं ।

सूत्र – हिक्का तथा श्वासरोग में जो आहार -विहार कफवात नाशक, उष्ण तथा वातानुलोमक और जो अच्छी तरह वायु का नाश करने वाला हो उसके सेवन करें ।

सूत्र – सभी श्वास-हिक्का रोग में बृंहण क्रिया करने में अल्प शक्य अर्थात् आसानी से रोग दूर होता हैं । शमन चिकित्सा अधिक उपद्रव नहीं करता हैं और कर्षण क्रिया अत्यन्त अशक्य अर्थात् अधिक कठिन होती हैं । अतः शमन तथा बृंहण से श्वास तथा हिक्का की चिकित्सा करें । कास,

श्वास, क्षय, वमन तथा हिक्का तथा अन्य रोगों की चिकित्सा करना अपने – अपने प्रकरणों में बताई गयी चिकित्सा एक दूसरे में करनी चाहिए ।

पंचम् अध्याय

राजयक्षा चिकित्सा

राजयक्ष्मादिचिकित्सतं व्याख्यास्यामः।

इति ह स्माहुरात्रेयादयो महर्षयः ।

श्वास – हिक्कारोग चिकित्सा व्याख्यान के बाद राजयक्षा आदि की चिकित्सा का व्याख्यान करेंगे ऐसा आत्रेयादि महर्षियों ने कहा था ।

सूत्र – बलवान्, अधिक दोष वाले स्नेहल तथा स्वदेन किये हुए राज्यक्ष्मा के रोगी का स्नेह युक्त ऊर्ध्व (वमन) अधः (विरेचन) शोधन करे किन्तु वह शो धन कृशताकारक न हो ।

सूत्र – राज यक्ष्मा रोग में मदन फल के साथ पकाया दूध, या मधुर रस (गन्ना का रस -चीनी का शर्बत) या वमन द्रव्यों से विधिवत् सिद्ध प्रचुर घृतयुक्त यवागु से वमन कराये और निशोथ तथा

श्यामानिशोथ और अमलतास की गूदी इन सभी का चूर्ण शक्कर, मधु तथा घी मिलाकर दूध से या यव के सत्तू के घोल से अथवा मुनक्का का रस या विदारी कन्द का रस या गम्भारी का रस या मिलाकर विरचेन दे ।

सूत्र – जीवन्ती, मुलेठी, मुनक्का, इन्द्रयव, पुष्करमूल, कचूर पीपर, कण्टकारी, गोखरू, वरियार, नीलकमल, भूंई आँवला, त्रायमाणा तथा यावासा समभाग इन सभी के कल्क के साथ विधिवत् पकाया घृत सेवन करने से राजयक्ष्मा रोग को अच्छी तरह दूर करता हैं ।

सूत्र – खजूर, मुनक्का, मुलेठी, फालसा तथा पीपर समभाग इन सभी के कल्क के साथ विधिवत् सिद्ध घृत सेवन करने से राजयक्ष्मा के रोग स्वर विकृति, कास, श्वास रोग तथा ज्वर को दूर करता हैं ।

सूत्र – दशमूल के क्वाथ मिलाकर पकाये दूध के दही से निकाला हुआ नवीन घृत पीपर का चूर्ण तथा मधु मिलाकर पिलाने से राजयक्ष्मा के रोगी के शिरशूल, पार्श्वशूल, अंसशूल, कास, श्वास तथा ज्वर दूर होते हैं । अथवा पाँचों पच्चमूल के क्वाथ के साथ पकाये दूध के दही से निकाला घृत पूर्वेक्त शिरःशूल आदि यक्ष्मा के उपद्रवों को दूर करता हैं ।

सूत्र – पाँच पच्चमूलों के क्वाथ तथा घृत से चौगुना दूध में पकाया घृत राजयक्ष्मा रोगी के सातों बलों को जीत लेता हैं ।

सूत्र – पच्चकोल (पीपर, पिपरामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ) तथा यवक्षार समभाग एक -एक पल (प्रत्येक 50 ग्राम) सम्मिलित छः पल (300 ग्राम) के कल्क के साथ दूध एक किलो में घृत एक किलो सिद्ध करें । यह स्त्रोतसों को शुद्ध करनेवाला हैं । इसके अतिरिक्त गुल्मरोग, ज्वर रोग, प्लीहा, वृद्धि, ग्रहणी रोग, पाण्डु रोग, पीनस रोग, श्वास, कास, मन्दाग्नि, शोथ तथा ऊर्ध्व वात को दूर करता हैं ।

सूत्र – रास्ना, बला, गोखरू, शालपर्णी तथा पुनर्नवा के क्वाथ में जीवन्ती तथा पीपर के कल्क के साथ दूध मिलाकर विधिवत् सिद्ध घृत शोष रोग को दूर करता हैं । अथवा अश्व गन्धा के क्वाथ के साथ पकाये दूध के दही से निकाला घृत शक्कर तथा दूध मिलाकर पीने से शेष रोग दूर होता हैं ।

सूत्र – इलायची, अजमोद, त्रिफला फिटकरी, व्योष (सोंठ, पीपर, मरिच), चित्रक, नीम, खैर, शाल तथा विजयक्षार का सार, शुद्ध भल्लातक तथा वायविंडग आठ-आठ पल (प्रत्येक 400 ग्राम) लेकर जल सोलह गुना में पकावे और सोलहवाँ भाग शेष रह जाने पर छान ले और उसमें घृत एक किलो विधिवत् सिद्ध करे । इसके बाद उसमें वंशलोचन 300 ग्राम, मिश्री 1 किलो 500 ग्राम और मधु घृत से दुगुना (1 किलो) और त्रिजात (दालचीनी, इलायची, तेजपात) 150 ग्राम का चूर्ण इन सभी को एकत्र मथनी से मथकर मिला दें तथा घृत सिद्ध पात्र में रख ले । इसमें से 150 ग्राम की मात्रा में प्रातःकाल दूध के साथ पा न करें । यह रसायन बिना किसी परहेज के सेवन करे । यह रसायन मेधावर्द्धक, नेत्र के लिए हितकर, आयुवर्द्धक तथा दीपन हैं और यह प्रमेह, गुल्म रोग, क्षय रोग, पाण्डु रोग तथी भगन्दर रोग को शीघ्र ही नष्ट करता हैं । जो सर्पिगुड क्षयज कांस तथा क्षयज कास में कहे गये हैं उनका भी प्रयोग राजक्ष्मा रोग में करें ।

सूत्र – दालचीनी एक ग्राम, इलायची दाना दो ग्राम, पीपर 4 ग्राम, वंशलोचन 8 ग्राम तथा शक्कर 16 ग्राम इन सभी को एकत्र कर चूर्ण बना ले और मधु तथा घृत के साथ चाटें । यह चूर्ण स्वर के लिए हितकर, कास, क्षय रोग, श्वास, पार्श्व शूल तथा कफ को नाश करने वाला हैं । इस चूर्ण का दूसरा नाम सितोपलादि हैं क्योंकि चरकोक्त सितोपलादि से मिलता हैं ।

सूत्र – राजयक्ष्मा रोगी के स्वरसाद में सामान्य चिकित्सा का निरूपण होने पर भी विशेष कर नस्य धूमादि का प्रयोग करें । विशेष चिकित्सा में वा तज स्वरसाद (स्वर क्षय) में भोजन के बाद कसौंदी, वनभण्टा तथा भृंगराज के स्वरस से विधिवत् सिद्ध घृत थोड़ा गर्म -गर्म पान करे । यह कास को दूर करता हैं तथा स्वर के लिए हितकारी हैं । कण्टकारी के रस से विधिवत् सिद्ध घृत पान करे । अथवा बेर की पत्ती का कल्क घी में भून कर तथा सेन्धानमक मिलाकर भक्षण करे । अथवा मुलेठी, मुनक्का, पीपर तथा वायविडगं के फल और हंसपादी (हंस) मूल कल्क के साथ विधिवत् पकाये तैल का नस्य दे । और बाद में घी के साथ गुड़ तथा भात खाकर गरम जल पान करे और खीर में घी मिलाकर खाये । इसके बाद कण्ट तथा वक्षस्थ ल को स्निग्ध स्वेदन करे ।

सूत्र – पित्तज स्वरभेद में क्षीरिवृक्ष (बरगद, गूलर, पकड़ी, पीपर, पारिस, पीपर) के तूसा का क्काथ तथा कल्क के साथ सिद्ध घृत शहद मिलाकर पान करे और खीर में मुलेठी का चूर्ण घी मिलाकर खाये । बरियार तथा विदारी गन्धा या विदारी कन्द तथा मु लेठी के क्काथ एवं कल्क से सिद्ध घृत नमक मिलाकर नस्य देने से स्वर के लिए उत्तम हितकर होता हैं । प्रपौण्डरीक, मुलेठी, पीपर, वनभण्टा तथा बला इनके कल्क तथा क्काथ में दूध मिलाकर विधिवत् घृत सिद्ध करे । यह स्वर को ठीक करने वाला उत्तम नस्य हैं । इसके बाद शतावरी, मुलेठी आदि मधुर द्रव्यों का चूर्ण मधु तथा घृत मिलाकर चाटें ।

सूत्र – कफज स्वर भेद में त्रिकुट (सोंठ, पीपर, मरिच) का चूर्ण गौमूत्र के साथ पीवें और रूखा भोजन (कोदों, साँवा, वजडी यव आदि) करे । जायफल, आँवला तथा व्योष (सोंठ पीपर, मरिच) इन सभी का चूर्ण तैल तथामधु मिलाकर चाटें । अथवा व्योष (सोंठ पीपर, मरिच) यवक्षार, चित्रक, चव्य वमनेठी तथा हर्रे का चूर्ण मधु के साथ चाटें । अथवा घी तथा तैल में जब का यवागू बनाकर उसमें पीपर एवं आँवला का चूर्ण बनाकर पान करे। खाने के बाद पीपर तथा सोंठ का चूर्ण भक्षण करे या तीक्ष्ण वमन करे ।

सूत्र – जिसका स्वर भेद उच्च भाषण से हो गया हो उसको मधुर द्रव्यों (मुलेठी, शतावरि आदि) के क्काथ के साथ दूध पकाकर और शक्कर तथा मुधमिलाकर पान कराये ।

सूत्र – भोजन की अरूचि में हितकर द्रव्यों से मिला हुआ विभिन्न प्रकार (पूड़ी, कचौरी,खीर आदि) का अन्न हितकर होता हैं । बाहर तथा भीतर सफाई करे, चित्त को शान्त करे, हृदय को बल देने वाला औषध खाये, दोनों समय तक भोजन करे, क्षीरी वृक्षों का दातून करे, कषाय द्रव्यों के क्काथ से मुख का प्रक्षालन करे । तालीसपत्र के चूर्ण को मिश्री तथा कपूर मिलाकर तथा उसका बटी बनाकर चूसे और रूचिकारक शशाडकिरण नामक भक्ष्य पदार्थ (दही बड़ा आदि) भक्षण करें ।

सूत्र – वात जन्य अरोचक में हरेणु (रेणुका), पीपर, वायविडगं, मुनक्का, सेंधा नमक तथा सोंठ का चूर्ण मदिरा के साथ पान करे । अथवा इलायची, वमनेठी, यवक्षार तथा घृतभृष्ट हींग के चूर्ण को घी के साथ खाये ।

सूत्र – पित्तज अरोचक में कडुआ वचके क्वाथ से या गुड़ के शर्बत से वमन कराये और शक्कर, घी, नमक तथा मधु मिलाकर चटायें ।

सूत्र – कफज अरोचक में नीम के क्वा थ से वमन करायें और अजवायन तथा अमलतास का क्वाथ मधु मिलाकर पान करे और मुनक्का तथा महुआ का तीक्ष्ण अरिष्ट पान करे । अथवा पूर्वोक्त हरेणु आदि का चूर्ण गर्म जल के साथ पान करें ।

सूत्र – इलायची 50 ग्राम, दालचीनी 100 ग्राम , नागकेशर 150 ग्राम, मरिच चाल 200 ग्राम, पीपर पाँच 250 ग्राम तथा सोंठ 300 ग्राम इन सभी के चूर्ण में सभी चूर्ण के समान मिश्री मिलाकर रख ले । यह चूर्ण लाल, स्राव, अरूचि, हृदय रोग, पार्श्व शूल, कास, श्वास तथा गला के रोग को नष्ट करता हैं ।

सूत्र – अजवायन, इमली, अम्लवेत, सोंठ, अनारदाना तथा बैर समभाग प्रत्येक 10 ग्राम, मिश्री 200 ग्राम, धनियाँ, सौवर्चल, नमक, लावा, जीरा तथा दालचीनी आधा – आधा कर्ष (प्रत्येक 5 ग्राम) पीपर, एक सौ नग तथा मरिच 200 नग इन सभी का चूर्ण बनाकर अरोचक में प्रयोग करे । यह चूर्ण उत्त म रूचिकारक, ग्राही तथा हद्य हैं और यह विबन्ध, कास, हृदय रोग, पार्श्व क्षूल, प्लीहा, अर्श तथा ग्रहणी रोग को नष्ट करता हैं ।

सूत्र – तालीस पत्र 50 ग्राम, मरिच 10 ग्राम सोंठ 150 ग्राम, पीपर 200 ग्राम, दालचीनी 25 ग्राम तथा इलायची 25 ग्राम और मिश्री पीपर के आठ गुना (1 किलो 600 ग्राम) इन सभी का चूर्ण बना लें । यह चूर्ण रूचिकारक तथा जाठराग्नि दीपक हैं और कास, श्वास, अरूचि, वमन, प्लीहा वृद्धि, हृदयशूल, पार्श्वशूल, पाण्डु, ज्वर तथा अतिसार को नष्ट करता हैं और मूढ़ बात का अनुलोमन करता हैं ।

सूत्र – मदार तथा गुडू ची के क्षारीय जल में एक रात यव को रखकर उसका सत्तू बनावे और बलवान रोगी मुख में पानी आने पर उस सत्तू को खाये और वमन करे ।

सूत्र – कफ के अधिक निकलने से वायु बढ़कर कफ को बाहर निकालता हैं । इसको प्रसेक या कफ प्रसेक कहते हैं । इसको विद्वान चिकित्सक स्निग्ध तथा उष्ण उपचार से दूर करे ।

सूत्र – विशेषकर पीनस रोग में विभिन्न प्रकार के स्निग्ध अभ्यंग, स्नेहन तथा स्वेदन, सिर, पार्श्व तथा गला में उत्कारिक (उल्टा – पपड़ा) तथा पिण्डों से करे और स्नेह से युक्त लवण, अम्ल तथा कटु द्रव्य का सेवन करे ।

सूत्र – राजयक्ष्मा में सिर, अंत प्रदेश पार्श्व प्रदेश में शूल होने पर दोषानुसार चिकित्सा करे । यहाँ पर चारों प्रकार के स्नेह (घृत, तैल, वसा, मज्जा) का प्रयोग अभीष्ट हैं । दोषों के संसर्ग होने पर तगर, मुलेठी, सोया, कूट तथा चन्दन लेप करे । अथवा बला, रास्ना, तिल, मुलेठी तथा कमल को पीसकर तथा घी में मिलाकर लेप करे । अथवा पुनर्नवा कृष्णगन्धा (सहिजन) बला, शतावर तथा विदारी कन्द इन सभी का लेप करे । नस्य कर्म, भोजन के बाद स्नेह पान, अभ्यगं के योग्य नारायण आदि तैल का प्रयोग तथा वस्ति कर्म करे । पीनस आदि में यदि रक्त दूषित हो गया हो तो सिंघी जलौका पातन आदि के द्वारा रक्त का निर्हरण करे । पद्मकाठ, केशर तथा चन्दन को पीसकर घृत के साथ लेप करना श्रेष्ठ हैं । अथवा दूर्बा, मुलेठी, मंजीठ तथा केशर के चूर्ण को घृत में मिलाकर प्रलेप करना श्रेष्ठ हैं । अथवा वट आदि पच्च क्षीरी वृक्षों के कल्क तथा क्काथ से सिद्ध तैल से या शतघौत घृत से, अभ्यगं दूध से या मुलेठी के कषाय से सेवन करना प्रशस्त हैं ।

सूत्र – राजयक्ष्मा में मन्दाग्नि हो जाने से प्रायः पिच्छयुक्त अतिसार हो जाता हैं । अतः उसमें अतिसार तथा ग्रहणी में हितकर औषध का प्रयोग करे ।

सूत्र – सूखते हुए राजयक्ष्मा के रोगी के पुरीष की रक्षा यत्न पूर्वक करना चाहिए । क्योंकि सभी धातुओं के क्षीण हो जाने से पीडित राजयक्ष्मा के रोगी का केवन पुरीष ही बल होता हैं ।

सूत्र – मुनक्का का आसव पीने और मूत्र पुरीषादि का वेग न धारण करने से व्यक्ति के शरीर में राजयक्ष्मा का रोग नही होता हैं ।

सूत्र – स्त्रोतो विबन्ध से मुक्त होने तथा बल एवं ओज की पुष्टि के लिए मण्ड के साथ सुरा, मुनक्का का मद्य, अरिष्ट, सीधु तथा माधवासव (महुआ का शराब) पान करे ।

सूत्र – राजयक्ष्मा के रोगी को तैल मर्दन के बाद तैल, दूध तथा थोड़ा उष्ण जल के टब में अबगाहन कराये और निकलने के बाद मिश्रक स्नेह से अभ्यगं कर सुखकर हल्के हाथ से मर्दन करे और मर्दन के बाद सुख पूर्वक बैठे हुए रोगी को सुखकारक उद्वर्तन करे ।

सूत्र – जीवन्ती, शतावरि, मजीठ, पुनर्नवा, अश्वगन्धा, अपामार्ग, अरणी, मुलेठी बला, विदारी कन्द, सरसों, कूट चावल अलसी, माष, तिल तथा किण्व (खली) समभाग इन सभी को एकत्र कूट कर चूर्ण बनावे और इस चूर्ण के तीन गुना यव का चूर्ण मिलाकर दही तथा घृत के साथ उबटन तैयार कर ले तथा इसका उबटन राजयक्ष्मा के रोगी को लगावे । यह पुष्टि, वर्ण तथा बलको बढ़ाने वाला हैं ।

विश्लेषण – राजयक्ष्मा रोगी को पीले सरसों के उवटन से उवटन लगाकर स्नान करने योग्य खस आदि औषधियों के योग से सिद्ध जल से या ऋतु के अनुसार शीत या उष्ण जल से अथवा जीवनीयगण की औषधियों से सिद्ध जल से स्नान कराये ।

सूत्र – स्नान के बाद सुगन्धित इत्र तथा सुगन्धित पुष्प की माला स्वच्छ वस्त्र आदि से सिंगार करना अशोभा को नाश करने वाली हैं । इसके बाद मित्रों का दर्शन गीत, वाद्य आदि उत्सव स्त्रोत का पाठ करना चाहिए ।

सूत्र – राजयक्ष्मामें बलवर्द्धक वास्तिका प्रयोग दूध, घी, सदाचार , बलि, मंगल, होम तथा जप आदि दैवव्यपाश्रय चिकित्सा अथवा वेदोक्त यज्ञ यागादि कर्म का अनुष्ठान उत्तम होता हैं ।

शष्ठम् अध्याय

हृदय रोग और तृष्णा रोग

अथाडतश्छर्दि ह्रद्रोगतृष्णाचिकित्सितं व्याख्यास्यामः ।

इति ह स्माहुरात्रेयादयो महर्षयः ।।

अर्थ – राजयक्ष्मा आदि चिकित्सा व्याख्यान के बाद छर्दि, हृद्रोग ता तृष्णा चिकित्सा का व्याख्यान करेंगे ऐसा आत्रेयादि महर्षियों ने कहा था ।

सूत्र – प्रायः सभी प्रकार छर्दि रोग में आमाशय में एकत्रित दोष उभड़कर ऊपर आते हैं तो वमन होता हैं । अतः आमाशय की शुद्धि के लि ए तथा दोषों के पाचन के लिए उपवास कराना चाहिए, किन्तु वात प्रधान छर्दि रोग में उपवास नहीं कराना चाहिए । बलवान् अधिक दोष वाले लगातार वमन करते हुए रोगी को वमन कराना चाहिए । वमन के बाद क्रमशः हृदय को बल देने वाले मद्य, मुनक्का आदि फलों के रस अथवा दूध के साथ विरेचन देना चाहिए । वह विरेचन ऊर्ध्वगत दोषों को नीचे ले जाता हैं । रूक्ष प्रकृति वाले तथा दुर्बल व्यक्तियों को उसी पूर्वोक्त फल आदि शमन औषध, शुष्क, रूचिकर, सात्म्य तथा हल्का अन्न हितकर होता हैं । छर्दि रोग में उपवास यूष, काम्बलिक, खल, शाक, लेह्म पदार्थ, भोज्य पदार्थ, राग, खडव, पानक, शुष्क भक्ष्य पदार्थ (भून चना आदि) विभिन्न प्रकार का फल, स्नान, घर्षण, अभिष्ट गन्ध, सुगन्धित गन्ध, फल, पुष्प,अन्न तथा पान प्रशस्त होते हैं । भोजन के बाद सहसा मुख पर शीतल जल का सेवन हितकर हैं ।

विश्लेषण – सभी वमन रोगों में आमाशय की विकृति होती हैं । जब दोष उभड़कर ऊपर आते हैं तो मुख के द्वारा निकलने लगते हैं ऐसी अवस्था में रोगी को उपवास कराना चाहिए और रूखा अन्न तथा फल का रस देना चाहिए । जब इससे शान्ति न मिले लगातार वमन होता रहे, रोगी बलिष्ठ हो तो व्याधि विपरीतार्थकारी वमन रोग में वमन का प्रयोग करना चाहिए । इससे आमाशय में संचित दोष वेग से बाहर निकल आते हैं और वमन शान्त हो जाता हैं । यदि इससे भी वमन थोड़ा होता हो तो विरेचन देना चाहिए । इससे स्त्रोतसों का मुख तथा दोष अधः (नीचे) चले जाते हैं । यह किसी अन्य कारण से उत्पन्न वमन की चिकित्सा नहीं हैं किन्तु स्वतंत्र वमन हो तो उसकी चिकित्सा हैं ।

सूत्र – सेंधा नमक मिलाकर थोड़ा गर्म घृत पीने से वातज छर्दि तथा विशेषकर कास तथा हृदय में घबड़ाहट उत्पन्न करने वाली छर्दि को नष्ट करता हैं । अथवा व्योष (सोंठ, पीपर, मरिच) तथा त्रिलवण (सेन्धा, सौर्वचल, साभर) मिला हुआ घृत पूर्ण मात्रा में पीने से वातज छर्दि को नष्ट करता हैं । अथवा सोंठ, दही तथा धनियाँ मिलाकर पकाया हुआ जल अथवा बराबर जल मिलाकर पकाया हुआ दूध अधिक सेन्धा नमक मिला घृत, अम्ल फल रस, सोंठ, दही तथा अनार के रस से सिद्ध थोड़ा गर्म, सेन्धा नमक मिला हुआ तथा स्निग्ध भोजन हितकर होता हैं और इस वातज छर्दि में एरण्ड आदि तैल का स्निग्ध विरेचन हितकर हैं ।

सूत्र – पित्तज छर्दि में विरेचन के लिए मुनक्का का रस तथा गन्ना के रस के साथ निशोथ का चूर्ण तथा तैल्वक घृत का प्रयोग करे । बढ़ा हुआ पित्त यदि कफ के स्थान में गया हो तो स्वादु तथा तिक्त रस से युक्त वमन कारक द्रव्यों से वमन करायें । इसके बाद वमन विरेचन से शुद्ध पित्तज छर्दि का रोगी धान की लावा से बना मन्थ या यवागू को मधु तथा शक्कर मिलाकर पान करे । मूँग का यूष तथा व्यजंन शाक आदि के साथ जड़हन तथा साठी धान के चावल का भात खाये और आग में पके मिट्टी के ढेले का बुझाया हुआ शीतल जल पीवे । अथवा मूँग, खस, धनियाँ तथा पीपर मिलाकर घड़ा में रात भर का रखा हुआ जल पान करे । अथवा मुनक्का का रस या गन्ना का रस गुडूची का रस अथवा दूध पान करे ।

सूत्र – जामुन तथा आम के कोमल पल्लव, खस, वट का टूसा तथा वरोही इन सभी का क्वाथ या शीत कषाय या स्वरस मधु मिलाकर पीने से वमन, ज्वर, अतिसार, मूर्च्छा तथा भयंकर प्यास को दूर करता हैं ।

सूत्र – पित्तज छर्दि में आंवला के रस के साथ शीतल जल या मूँग के पत्तों का जल आँवला के रस के साथ पान करे अथवा बेर की मज्जा, मिश्री, लाबा, मधुमक्खी का पुरीष, पीपर तथा रसाञ्जन समभाग इस सभी के चूर्ण को मधु के साथ चाटें या हर्रे का चूर्ण मधु के साथ या मुनक्का का रस मधु के साथ या बेर का चूर्ण मधु के साथ चाटें ।

सूत्र – कफज छर्दि में यदि बलवान् रोगी हो तो नीम, पीपर, पीडित (मदन फल) तथा सरसों के कल्क में थोड़ा गर्म जल मिलाकर वमन कराये । यदि रोगी दुर्बल हो तो उपवास कराये । आरग्वबधादि गंण के शीतल क्वाथ में मधु मिलाकर पान कराये । अथवा अनेक छर्दि नाशक औषधों से भावित यव के सत्तू का मन्थ पिलाये । अथवा अनेक छर्दि नाशक औषधों से भावित

यव के सत्तू का मन्थ पिलाये । हृदय के लिए हितकारी कफ नाशक अन्न खिलाये । काली तुलसी तथा सुगन्धित तृण का राग खिला वे । शुद्ध मैनसील, पीपर तथा मरिच का चूर्ण बिजौरा नींबू के रस या कैथे के रस के साथ शहद मिलाकर चाटने से वमन को दूर करता हैं । अथवा कपित्थ के गूदा को व्योष (सोंठ, पीपर, मरिच) का चूर्ण मिलाकर शहद के साथ खिलायें । अथवा यवासा के चूर्ण को शहद के साथ खिलाये ।

सूत्र – दिष्ट (अप्रिय) शद्वादि से या अप्रिय भोजन से उत्पन्न छर्दि अनुकूल शब्दादि तथा भोजन से शान्त हो जाती हैं । कृमिज छर्दि कृमि रोग तथा हृदय रोग में कहे गये औषधों से शान्त हो जाती हैं । अन्य विसूचिकादि जन्य छर्दि तत्तत् मूल रोग शामक औषधों से शान्त हो जाती हैं ।

सूत्र – छर्दि रोग उत्पन्न होने पर धातुओं के क्षय होने से वायु अवश्य ही प्रकृपित हो जाता हैं । अतः उसमें वम नाति योग प्रकरण में कहे गये स्तम्भन तथा बृहण चिकित्सा विधि को कहा गया हैं । कास तथा राजयक्ष्मा प्रकरण में कहे गये जीवनादि – घृत, कल्याणक घृत , आयुष्य घृत हितकर योगों से सिद्ध दूध तथा लेह योग छर्दि जन्य वात के उपद्रव को शान्त करते हैं ।

सूत्र – वातज हृद रोग में दही का पानी, कांज्जी या मट्टा मिलाकर तथा थोड़ा गरम कर पान करे । यदि तैल में विडनमक मिलाकर पान करे तो गुल्म तथा आनाह रोग को दूर करता हैं । पच्च लवण से सिद्द तैल में गौमूत्र तथा कांज्जी मिलाकर पान करे तो हृद रोग आदि को नष्ट करता हैं ।

सूत्र – बेल, रास्ना, यव, कोल, खैर, देवदारू, पुनर्नवा, कुरथी, लघुपच्चमूल, सरिवन, पिठवन, वनभण्टा, कटेरी तथा गोखरू समभाग इन सभी का क्काथ बनावे और उस क्काथ में विधिवत् तैल सिद्ध करे । इस तैल को हृदयरोग में नस्य, पान तथा वस्ति कर्म में प्रयोग करें ।

सूत्र – सोंठ, शतावरि, सेन्धा नमक, कायस्था (काकेली), हींग, पुष्कर मूल तथा हर्रे समभाग इन सभी के कल्क तथा क्काथ से विधिवत् सिद्ध घृत पार्श्व शूल, हृदय रोग तथा गुल्म रोगको दूर करता हैं ।

सूत्र – सौर्वचल नमक 100 ग्राम तथा हर्रे पच्चास नग का कल्क तथा घृत एक किलो लेकर विधिवत् घृत सिद्ध करे । यह घृत हृदय रोग, श्वास, तथा गुल्म रोग को दूर करता हैं ।

सूत्र – पुष्कर मूल, कचूर, सोंठ, बिजौरा नींबू की जड़ तथा हर्रे समभाग इन सभी का कल्क बनाकर तथा यवक्षार, घृत, अम्ल रस (खट्टे अनार आदि) तथा सेन्धा नमक मिलाकर पीने से हृदय में कैची के समान काटने की पीड़ा तथा शूल को दूर करता हैं । इसी प्रकार पूर्वोक्त द्रव्यों का थोड़ा गर्म क्काथ पूर्वोक्त यवक्षार – घृत आदि के साथ पीने से विकर्तिक तथा हृदय शूलको नाश करता हैं ।

सूत्र – अजवायन, सेन्धानमक, यवक्षार, वच, जीरा तथा सोंठ समभाग इन सभी का कल्क या पूतिकरंज्ज, देवदारू, विजयसार, हर्रे, कचूर तथा पुष्करमूल समभाग इन सभी का कल्क अथवा पच्चकोल, (पीपर, पिपरा मूल, चव्य, चित्रक तथा सोंठ), कचूर, हर्रे, गुड़, विजयसार तथा पुष्करमूल समभाग इन सभी का मद्य के साथ बनाया कल्क तैल तथा घी में भून कर और सेन्धा नमक मिलाकर हृदयशूल, पार्श्वशूल, योनिशूल, गुल्म रोग तथा उदार रोग में खायें । इस वातज हृदोग में स्निग्ध स्वेदन तथा वात शामक औषधों से संस्कृत घृत हितकर होता हैं ।

सूत्र – हृदरोग जन्य प्यास में लघु पच्चमूल (सरिवन, पिठवन, भटकटैया, वनभण्टा तथा गोखरू) मिलाकर पकाया जल या सोंठ मिलाकर पकाया जल या वारूणी तथा दही का पानी या कांज्जी पिलाये ।

सूत्र – वात प्रकोप से उत्पन्न तनाव, जकड़न शूल, घबडाहट तथा मोह युक्त हृदय रोग में पूर्वोक्त चिकित्सा, स्नेह पान आदि हितकर हैं । हृदय रोग से पीड़ित व्यक्ति बलातैल या सुकु मारक तैल या यष्ट्याहव शतपाक तैल या उत्तम महा स्नेह पान करे ।

सूत्र – रास्ना, जीवक, जीवन्ती, बरियार , कण्टकारी, पुनर्नवा, वमनेठी, शतावरी, वच तथा व्योष (सोंठ, पीपर, मरिच), समभाग इन सभी के क्काथ तथा कल्क के साथ महास्नेह (घृत, तेल, वसा,

मज्जा), महा स्नेह के चौथाई दही तथा यथोपलब्ध अम्ल वर्ग के कल्क मिलाकर पकावे । यह सेवन करने से तृप्ति कारक बृंहण, बल्य तथा वातज हृदय रोग का नाश करता हैं । हृदय रोग में पथ्य तथा निषेध –

सूत्र – जाठराग्नि के प्रदीप्त रहने पर घबड़ाहट तनाव से युक्त वातिक हृदय रोग में दूध, दही, गुड़, घृत हितकर होता हैं । किन्तु ये सब पित्तज, कफज, सन्निपातज तथा क्रिमिज चारों प्रकार के हृदय रोग में निषिद्ध हैं । यदि वातिक हृदय रोग में भी जकड़न, जड़ता तथा आम दोष हो तो पूर्वोक्त पदार्थो को नहीं देना चाहिए । कफानुबन्धी वातज हृदय रोग में रूक्ष तथा उष्ण आहार विहार का प्रयोग करना चाहिए ।

सूत्र – पैत्तिक हृदयरोग में मुनक्का तथा गन्ने का रस, मिश्री, शहद, फालसा इन सभी से हृद्यविरेचन दे और शुद्ध होने के बाद पित्त नाशक क्रम (पेया आदि सैम्य आहार -विहार) का प्रयोग करे । क्षातज कास तथा पित्तज्वर में कहे गये बाह्य तथा आभ्यन्तर शुद्धि करे और कुटकी तथा मुलेठी का कल्क मिश्री मिलाकर जल से पान करे ।

सूत्र – गजपीपर, शक्कर, मुनक्का, जीवक, ऋषभक, नीलकमल, बला, खजूर, काकोली, मेदा तथा महामेदा समभाग इन सभी के क्वाथ तथा कल्क के साथ समभाग दूध मिलाकर विधिवत् दूध सिद्ध करे । यह पित्तज हृद्रोग को नाश करता हैं ।

सूत्र – पित्तज हृद्रोग में प्रपौण्डरीक (पुण्डेरिया), मुलेठी, नीम, पिपरामूल, कसेरू, सोंठ तथा सेवाल समभाग इन सभी के क्वाथ तथा कल्क के साथ समभाग दूध मिलाकर विधिवत् घृत सिद्ध करे और शीतल कर तथा मधु मिलाकर प्रयोग करे अथवा स्वादु वर्ग के द्रव्यों से विधिवत् सिद्ध घृत का प्रयोग करे । मुलेठी से सिद्ध तैल में मधु मिलाकर वस्तिकर्म में प्रयोग करे ।

सूत्र – कफज हृद्रोग में स्वेदन करने के बाद नीम तथा कडुआ वच के क्वाथ को पीकर वमन करे । वमन के बाद कुरथी का यूष के साथ यव की रोटी खाकर पान करे ।

सूत्र – वच, हींग, सेन्धा नमक, सौवर्चल नमक, सोंठ, इलायची, अजवायन, पीपर तथा यव क्षार का चूर्ण थोड़ा गर्म जल या फलों के अम्लरस या कांज्जी या कुरथी का यूष या गोमूत्र अथवा

आसव के साथ पान करे । अथवा पुष्कर मूल हर्रे, सोंठ, कपूर, रास्ना, बच तथा पीपर समभाग इन सभी क चूर्ण पूर्वोक्त रसादिकों के साथ पान करे ।

सूत्र – हर्रे, सोंठ, दारूहल्दी तथा जायफल का क्काथ पान करे । अथवा रोहेड़ा, पीपर, खैर, गूलर, अर्जून, पलास तथा वट समभाग इन सभी के क्काथ में व्योष (सोंठ, पीपर, मरिच) तथा निशोथ का चूर्ण मिलाकर अवलेह बनावे और खाकर ऊपर से थोड़ा गरम जल पान करे । यह कफजन्य विकार (कफज हृद्रोग) को नष्ट करता हैं ।

सूत्र – कफज हृद्रोग में कफज गुल्म रोग में कहे जाने वाले अनेक प्रकार के घृत तथा क्षारीय योग को प्रयोग करे । इस रोग में शिलाजतु रसायन या ब्रह्म रसायन का प्रयोग करे । अथवा आमल कावलेह (च्यवनप्रास), या अगस्ति निर्मित प्रा श्य (आगस्त्यावलेह) का प्रयोग करे ।

सूत्र – जिस के अन्न खाने के बाद या पचते समय या पचने के बाद शूल होता हैं वह कूट, विडगं, सेन्धानमक, सौवर्चल नमक, लोध, देवदारू तथा अतीस समभाग इन सभी का चूर्ण थोड़ा गरम जल के साथ भोजन के बाद पान करने से शान्त होता हैं । जिसको भोजन पच जाने के बाद अधिक शूल हो उसको स्नेह (एरण्ड तेल) से विरेचन कराये । अन्न के पचते समय शूल हो तो फलों (मुनक्का आदि) से विरेचन कराये । यदि हमेश अधिक शूल रहे तो तीक्ष्ण विरेचन द्रव्य दन्तीमूल, श्यामा निशोथ आदि से विरेचन कराये । इन शूल रोगों में गति के रूक जाने से वायु आमाशय में प्रकुपित होता हैं । अतः उसका अनुलोम विरेचन के द्वारा संशोधन, उपवास तथा पाचन औषधों से करे ।

सूत्र – क्रीमी जन्य हृदय रोग में सभी कृमिनाशक औषधों का प्रयोग करना चाहिए ।

सूत्र – सभी प्रकार के तृष्णा रोगों में वात-पित्त शामक चिकित्सा का प्रयोग किया जाता हैं । सभी प्रकार के तृष्णा में बाह्य तथा आभ्यन्तर शीत प्रयोग शामक तथा शोधन औषधों का प्रयोग शीतल आकाशीय (वर्षा का) जल मधु के साथ या कूआँ आदि का शीतल जल मधु के साथ प्रयोग करे । अथवा मिट्टी का ढेला, खपड़ा या बालू तपा कर बुझाया हुआ शीतल जल चीनी मिलाकर या लघु पच्चमूल तथा डामकी जड़ के क्कथित जल में चीनी मिलाकर प्रयोग करे । अथवा धान के लावा सत्तू का मन्थ पिलाना प्रशस्त होता हैं । अथवा भूसी निकाले कच्चे यव की दलिया जल में

पकाने के बाद शीतल होने पर शक्कर तथा मधु मिलाकर पिलाये । पुराने जड़हन धान के चावल या पुराने कोदो के चावल का शीत वीर्य वाले द्रव्यों में सिद्दयवागू शीतल पदार्थ के साथ खिलाये । अथवा शीतल जल से स्नान कराने के बाद शक्कर तथा मधु मिलाकर यवागू खिलाये । अथवा जीवनीयगण के द्रव्यों से पकाये हुए जल में मूँग का यूष बना कर उसके साथ यवागू खि लाये ।

सूत्र – तृष्णा रोग में नस्य, शीतल द्रव्यों से सिद्ध दूध का घृत तथा गन्ना का रस पान करे । दाह तथा ज्वर प्रकरण में कहे गये लेप आदि का प्रयोग करे । सभी चेष्टाओं से रहित मन को शान्त रखे और बड़े-बड़े नदी-तालाब आदि का दर्शन तथा स्मरण करे ।

सूत्र – वातज तृष्णा में गुड़ मिलाकर दही पीवे । अथवा विदार्यादि गण के द्रव्यों को पकाकर शीतल किया हुआ जल पान करे ।

सूत्र – पित्तज तृष्णा में पके गूलर का रस शक्कर मिलाकर या गूलर के छाल का क्वाथ या हिम पान करे । इसी प्रकार सारिवादिगण के पकाये हुए जल पान करे । उसी प्र कार शीतद्रव्यों के गण के शीत कषाय को मिश्री तथा मधु मिलाकर पान करे । इसी प्रकार मधुर औषधों से या क्षीरी वृक्षों के बनाये गये शीत कषाय को मिश्री तथा मधु मिलाकर पान करे । अथवा बिजौरा नींबू, मुनक्का, वट तथा वेतस से पल्लवों को, या कुश कासदि के मूल को या मुली को जल में पकाकर पान करे । अथवा ज्वर प्रकरण में कहे गये द्राक्षादि का क्वाथ या हिम अथवा पच्चसार योग का जल पान करे।

सूत्र – कफज तृष्णा में नीम के पत्तों के रस से वमन कराये । बेलपत्र, अरहर के पत्र, पच्चकोल (पीपर, पिपरामूल, चव्य, चित्रक, सोठ, बेर, दर्भपच्च क), कुश, कास गन्ने की जड़, डाम तथा सरपत के पकाये जल या हल्दी का पकाया जल मधु तथा शक्कर मिलाकर पिलाये । व्योष (सोंठ, पीपर, मरिच), पटोल पत्र तथा नीम के पकाये जल से सिद्ध मूँग का यूष या जव की दलिया खिलाये तथा तीक्ष्ण द्रव्यों के क्वाथ का कवल धारण करे और नस्य तथा लेह का प्रयोग करे ।

सूत्र – त्रिदोषज तथा आमज तृष्णा में त्रिदोष शामक तथा आमशामक पाचन क्रिया उत्तम हैं और त्र्यूषण (सोंठ, पीपर, मरिच) शुद्ध भिलावा, वच, अम्ल फलों के रस उष्ण जल तथा मस्तु (दही के जल) से वमन कराये ।

सूत्र – अन्नात्यय (उपवास) जन्य तृष्णा में कास एवं सात्म्य के अनुसार उष्ण या शीतल मन्थ का प्रयोग करे ।

धूप लगने से उत्पन्न तृष्णा में यव के सत्तू को बेर के जल में घोल कर तथा मिश्री मिलाकर पीवे । और तिल की खली तथा कांज्जी मिलाकर सम्पूर्ण शरीर में लेप लगाये ।

शीतल जल में स्नान करने से प्यासा व्यक्ति जल मिलाकर मद्य या गुड़ का शर्बत पान करें।

मद्य पान से उत्पन्न तृष्णा में स्नान करने के बाद मद्य में आधा जल नींबू का रस तथा नमक मिलाकर पान करे ।

स्नेह पान से जाठराग्नि के तीव्र होने पर तृष्णा हो तो स्वभाव से शीतल जल (कूआँ आदि के जल) पान करे ।

स्नेह न पचने पर यदि तृष्णा हो तो उष्ण जल तथा स्नेह के पच जाने पर तृष्णा हो तो मण्ड (दही का पानी) पान करे ।

स्निग्ध अन्न (मालपुआ, हलुआ) खाने से तृष्णा उत्पन्न होने पर गुड़ का ठंडा शर्बत पान करे।

गरिष्ठ अन्न खाने से उत्पन्न तृष्णा में गरम जल पीकर वमन करे ।

धातु क्षयज तृष्णा में क्षय रोग में हितकर सभी बृंहण औषधों का सेवन करे । कृश दुर्बल तथा रूक्ष प्रकृतिवाले मनुष्यों को क्षीर पिलायें ।

ऊर्ध्व वात से तृष्णा होने पर क्षय तथा कास हर औषधों से सिद्ध दूध पान करे ।

रोगों में उपद्रव स्वरूप तृष्णा होने पर धनियाँ का जल मि श्री तथा मधु मिलाकर पान करे । रोगों के अनुसार सभी क्रियायें जल पीने में प्रशस्त हैं ।

सूत्र – किसी पूर्व रोग से क्षीण व्यक्ति के प्यास लगने पर यदि जल न मिले तो वह शीघ्र ही मर जाता हैं या बहुत दिन चलने वाले भयंकर रोग को प्राप्त करता हैं । अतः सबसे पहले प्र कृति के अनुकूल अन्न, पान तथा औषध से तृष्णा को शान्त करे । प्यास के शान्त हो जाने पर अन्य सब व्याधियाँ चिकित्सा के योग्य होती हैं ।

सप्तम अध्याय

मद्यपान से होने वाले रोगों की चिकित्सा

अथातो मदात्ययचिकित्सतं व्याख्यास्यामः ।

इति ह स्माहुरात्रेयादयो महर्षयः ।

अर्थ - छर्दि हृद्रोग तथा तृष्णा चिकित्सा व्याख्यान के बाद मदात्यय चिकित्सा का व्याख्यान करेंगे ऐसा आत्रेयादि महर्षियों ने कहा था ।

सूत्र – मदात्यय में जिस दोष की अधिकता देखें उसकी पहले चिकित्सा करें । मदात्यय में समान दोष होने पर आमाशय तथा सिर आदि कफ के स्थानों की आनुपूर्वी क्रम से चिकित्सा करे । प्रायः मदात्यय में पित्त तथा वात का अन्त में प्रभाव पड़ता हैं अर्थात् पहले कफ की प्रधानता रहती हैं बाद में पित्त तथा वात की प्रधानता होती हैं । अर्थात् पित्त तथा वायु का प्रकोप जब तक रहता हैं तभी तक मदात्यय रोग रहता हैं ।

सूत्र – अम्ल विदाह करने वाले तीक्ष्ण और उष्ण मद्य अधिक मात्रा में पीने से अन्न का रस विदग्ध क्षारीय हो जाता हैं और जिन मद, प्यास, मोह, ज्वर, अन्तदहि तथा विभ्रम को उत्पन्न करता हैं तथा मद्य के द्वारा उत्क्लिष्ट दोष से स्त्रोत में रूका हु आ वायु सिर, अस्थि तथा सन्धियों में तीव्र वेदना उत्पन्न करता हैं । मद्य तथा आमदोष के पच जाने से शरीर के हल्का होने पर अन्न खाने की इच्छा करता हैं तब उस समय दोषानुसार जो मद्य जिस दोष के लिए हितकर हो उसे सममात्रा में मद्य ही पीने से उन उपद्रवों को शान्त करता हैं। क्षार अम्ल के संयोग होने पर मधुर हो जाता हैं । अम्ल पदार्थों में मद्य श्रेष्ठ होता हैं और दोषों के द्रवित कर निकलने में समर्थ होता हैं ।

विश्लेषण – सम मात्रा में अर्थात् जिस व्यक्ति के लिए जितनी मात्रा उपयोगी हो उस मात्रा से विधिपूर्वक पीने से मद्य अन्न के समान हितकारी है । किन्तु जब वह विधिहीन तथा कभी अधिक मात्रा में कभी हीन मात्रा में पान किया जाता हैं तो उपद्रव कारक होता हैं । इस मद्य का प्रभाव खाये हुए अन्न पर पड़ता हैं । अन्न अर्ध परिपक्व होकर क्षारीय हो जाता हैं । वह क्षारीय शरीर के

रसादि धातुओं में जाकर विभिन्न उपद्रव्यों को उत्पन्न करता हैं । आम दोष या मद्य के पच जाने पर युक्तिपूर्वक पान किया गया मद्य ही उन सभी उपद्रवों को दूर करता हैं । क्योंकि अम्ल पदार्थों में मद्य श्रेष्ठ होता हैं । अतः मद्य ही मद्य जनित उपद्रव्यों में क्षारीय अन्न से मिलकर मधुरता को प्राप्त होकर सम्पूर्ण उपद्रवों को दूर करता हैं । जैसे राजा से दण्ड पाये हुए व्यक्ति को राजा ही दण्ड से मुक्त करता हैं । इसी प्रकार अम्लों में राजमद्य से जो उपद्रव होते हैं उसे मद्य ही शान्त करता हैं ।

सूत्र – पूर्वोक्त तीक्ष्ण, उष्ण तथा दीपन पा चन आदि गुणों से युक्त मद्य होता हैं । उन गुणों के आधार पर जिस व्यक्ति को जो सात्म्य (अनुकूल) हो ऐसे अनुकूल मद्य पीने से धातुएं सम मात्रा में रहती हैं ।

सूत्र – सात दिन या आठ दिन तक मदात्य रोग की चिकित्सा करनी चाहिए । इस अवधि में विमार्ग में गया हुआ मद्य पच जाता हैं । इसके बाद जो रोग इसके सम्बन्धी होते हैं उनकी चिकित्सा करे । मद्य पानात्यय के जो-जो औषध विहित हैं उनका प्रयोग विधिवत करे ।

सूत्र – वात प्रधान मदात्यय में चावल की पीठी से बनाया मद्य विजौरा नींबू, विषामिल, वेर, अनार, अजवायन, अजमोदा, हाउबेर, जीरा, व्योष, (सोंठ, पीपर, मरिच), त्रिलवण (सेंधा नमक, सौवर्चल नमक, विड नमक), तथा अदरक इन सभी के यथोपलब्ध चूर्ण मिलाकर, हरित वर्ग के द्रव्य (अदरक, मूली आदि) तथा स्नेह युक्त सत्तू के साथ पान करे । इस मदात्यय में उष्ण, स्निग्ध, अम्ल तथा लवण पदार्थों के साथ सेवन करना हितकर हैं । आम या आमड़ा की टुकड़ा से बनाया राग खाण्डव, गेहूँ तथा उड़द का बनाया कोमल तथा विभिन्न प्रकार के भक्ष्य पदार्थ (खस्ता, समोसा, कचौड़ी आदि) जिनमें हरा धनियाँ, अदरक, कुल्माष (उड़द की घुघुरी), सिरका हितकर होते हैं । अथवा मदात्यय में सुगन्धित पदार्थ तथा नमक मिला हुआ शीतल स्वच्छ वारूणी लाभदायक होता हैं । अथवा अनार का रस या लघु पच्चमूल का क्काथ लाभदायक होता हैं । या सोंठ तथा धनियाँ क्काथ मसतु, शुक्त मिश्रित ज ल, अच्छ तथा अम्लकांज्जी हितकारक हैं । वात मदात्यय में अभ्यगं, (मालिश), उबटन स्नान, उष्ण मोटा वस्त्र, कपूर तथा अगर का धूप, अगर तथा केशर का लेप प्रशस्त हैं ।

सूत्र – पित्त प्रधान मदात्यय में चीनी के पतले शर्बत में मधु मिलाकर पान करे । अथवा अनार, खजूर, कमरख तथा फालसा के शीतल रस में शक्कर तथा मधु मिलाकर पान करे । इसी प्रकार शीत सत्तू के घोल में चीनी मिलाकर पानक का प्रयोग करे । अथवा स्वादु वर्ग के कषाय तथा मधु से युक्त मद्यपान करे और जड़हन धान के चावल या साठी धान के चावल का भात खरह, अथवा मटर या मूंग के दाल में आँवला, परवल तथा अनार मिलाकर उसके साथ खायें ।

सूत्र – मदात्यय रोग में कफ -पित्त के उभड़े रहने के कारण प्यास तथा विदाह से पीड़ित रोगी अधिक शीतल जल या गन्न का रस मिलाकर अधिक मद्य या मुनक्का रस अधिक मात्रा में पीकर वमन करें । वमन के बाद संतर्पण आदि संसर्गी (पेया, बिलेपी आदि) क्रम हितकर होता हैं । इससे रोगी की अग्नी प्रदीप्त हो जाती हैं और शेष दोष तथा अन्न का पाचन हो जाता हैं ।

सूत्र – मदात्यय में कास के साथ रक्त निकलने पर या पार्श्व प्रदेश तथा स्तन प्रदेश में पीड़ा होने पर या विदाह युक्त प्यास लगने पर अथवा हृदय तथा उरप्रदेश में उल्केश (उबकाई प्रतीत होना) होने पर गुडूची तथा नागरमोथा का रस या परवल का रस अदरक का रस मिलाकर प्रयोग करे।

सूत्र – अधिक बलवान वात-पित्त के बढ़े रहने पर यदि प्यास लगे तो दोषों को अनुलोमन करने वाले शीतल मुनक्का का रस पान करे ।

सूत्र – मद्य के पच जाने पर मधुर तथा अम्ल रस के साथ भोजन करे और प्यास लगने पर मादकता की रक्षा करते हुए अधिक जल मिलाकर थोड़ा मद्य पीवे । अथवा नागर मोथा, अनार तथा धान का लावा का जल या पार्णिनी (शालपर्णी, पृश्नपर्णी माषपर्णी तथा मूद्गपर्णी) का पकाया शीतल जल या परवल तथा कमल कन्द का पकाया शीतल जल अथवा स्वभाव से ही शीतल जल (कूआँ का जल) पान करे ।

सूत्र – मद्य के अधिक पान करने से शरीर की जलीय धातु के क्षी ण होने तथा पित्त के बढ़ जाने पर जो रोगी गला, तालु तथा ओष्ठ के सूखने से जिह्वा को निकाल कर काँपता हैं उसको रातभर बाहर हवा में रखा हुआ जल इच्छानुसार पिलाये । कोल, अनार, वृक्षाम्ल (विषामिल), सिरका तथा

चौपतिया इस पच्चाम्लक का लेप मुख के अन्दर तथा बाहर करने सेशीघ्र ही प्यास को दूर करता हैं ।

सूत्र – मद्यपान की उष्मा पित्त तथा रक्त से मिलकर तथा त्वचा में जाकर भयंकर दाह को उत्पन्न करती हैं । वहाँ त्वचा के ऊपर अति शीतल क्रिया करनी चाहिए । इस प्रकाश शीतल रस पिलाकर तृप्त करने पर भी यदि दाह शान्त न हो तो रोहिणी सिरा का वेध करे ।

सूत्र – कफ प्रधान मदात्यय रोग को वमन तथा उपवास के द्वारा दूर करे और सोंठ, शालपर्णी, सुगन्ध वाला तथा यवासा इन सभी में किसी एक द्रव्य से पकाया हुआ जल शीतल कर पान करे । आम दोष के नष्ट होने से भूख लगने पर अधिक मधु पिलाये । या शक्कर का बना मद्य में मधु मिलाकर या पुराना अरिष्ट या सीधु पि लाये । रूक्ष संतर्पण तथा अजवायन और सोंठ का चूर्ण मिलाकर गेहूँ या यव की रोटी पतले यूष से खिलाये । अथवा अम्ल, कटु तथा तिक्त रस युक्त थोड़ा घृत मिलाकर गर्म कुरथी के रस से गेहूँ या यव की रोटी खिलाये । अथवा सूखी मूली के शाक के रस अम्लर्वेत विषमिल, परवल, व्योष (सोंठ, पीपर, मरिच) तथा अनारदाना का चूर्ण मिलाकर भोजन कराये । कफ मदात्यय रोग में अधिक सोंठ तथा मरिच का चूर्ण और अदरक का टुकड़ा बिजौरा नींबू का रस से अम्ल या उसके रस में तलकर सुखाया हुआ, करीर तथा करौंदा के फलों को मिलाकर स्वादिष्ट बनाया हुआ, अधिक भावन मसाला (धनियाँ, जीरा आदि) मिलाकर पकाया हुआ अधिक मात्रा में अष्टांगलवण (मिश्री, सौवर्चल नमक, जीरा, इमली, अम्लवेंत एक-एक भाग तथा दालचीनी, इलायची, मरिच का चूर्ण) महुआ का मद्य पीवे । यह स्त्रोतसों को शुद्ध करने वाला तथा जाठरग्नि को बढ़ाने वाला हैं । मिश्री, सौर्वचल नम क, धनियाँ, जीरा, इमली एक -एक भाग, अम्लबेंत, दालचीनी, इलायची तथा मरिच आधा -आधा भाग ये अष्टागंलवण हैं तथा कफमय मष्दात्यय में हितकर हैं । रूखा तथा उष्ण उबटन मलना, स्नान, भोजन, उपवास तथा जागरण से कफज मदात्यय शान्त होता हैं ।

सूत्र – पूर्वोक्त प्रकार से अलग-अलग वात प्रधान, पितप्रधान तथा कफ प्रधान मदात्यय की जो चिकित्सा बतायी गयी हैं । वही चिकित्सा अन्य अवशिष्ट दश सन्निपातज मदात्यय में भी विकल्पित कर करनी चाहिए ।

सूत्र – दालचीनी, नागकेशर, पीपर, मरिच, धनियाँ, फालसा, महुआ, इलायची तथा देवदारू समभाग इन सभी का चूर्ण में समभाग मिश्री मिलाकर और कैथ के रस का पानक बनाकर तथा उसमें कपूर मिलाकर रख ले । इसके बाद चूर्ण खाकर पानक पीवे । यह हृदय को बल देने वाला, रूचिकारक, जाठराग्नि दीपक हैं तथा सभी प्रकार के मदात्यय में पीने योग्य हैं ।

सूत्र – मद्य मन को विक्षुब्ध किये बिना या शरीर को विघ्न किये बिना मदात्यय नहीं उत्पन्न करता हैं । अर्थात् मद्य मन को क्षुब्ध कर तथा शरीर को विकृत कर मदात्यय रोग उत्पन्न करता हैं । अतः उसमें मन को प्रसन्न करने वाला आहार -विहार करना चाहिए ।

सूत्र – पूर्वोक्त प्रकार से संशोधन तथा शमन आदि क्रियाओं को करने पर भी यदि मदात्यय न शान्त हो और कफ के क्षीण होने तथा दुर्बलता एवं शरीर के हल्का होने पर उस वात -पित्ताधिक मद्य विदग्ध रोगी के लिए जैसे गर्मी से झुलसे हुए पेड़ के लिए वर्षा लाभदायक होती हैं वैसे ही फलदायक होता हैं । मद्य पीने से क्षीण रोगी के अंग को दूध शीघ्र ही पुष्ट करता हैं । क्योंकि मद्य के दश गुणों के विपरीत दूध के सभी दश गुणों के समान गुण वाला ओज हैं ।

सूत्र – दुग्ध पान से मदात्यय के निवृत्त हो जाने पर तथा बल के आ जाने पर दूध का प्रयोग छोड़ देना चाहिए और थोड़ा -थोड़ा क्रमशः मद्यपान प्रारम्भ करते हु ए छोड़ देना चाहिए । किन्तु मद्य का प्रयोग इतना ही करना चाहिए जितने से विक्षम तथा ध्वंसक रोग न हो । विक्षय तथा ध्वंसक रोग की शान्ति घृत, क्षीर, पुष्टिकारक वस्तियाँ, अभ्यंग, उबटन, स्नान वात शामक आहार -विहार तथा पान से होता हैं ।

विश्लेषण – मद्यपान छोड़ने के बाद सहसा अधिक मद्य पान करने से विक्षय तथा ध्वंसक रोग होता हैं । अतः दूध से शान्त होने पर थोड़ा -थोड़ा मद्य पीते हुए इसे त्याग कर देना चाहिए ।

सूत्र – युक्ति पूर्वक (विधिपूर्वक) मद्यपान करने से मद्यजन्य रोग नहीं उत्पन्न होता हैं । अतः मद्य का प्रयोग कहेंगे जो केवल सुख के लिए ही होगा ।

विश्लेषण – जो मद्य अश्विनी कुमारों के महान् तेज को, सरस्वती के बल को, इन्द्र के वीर्य को और विष्णु के प्रभाव को धारण करता हैं, जो मद्य कामदेव का अस्त्र हैं, बलभद्र का पुरूषार्थ हैं और सौत्रामणी यज्ञ में ब्राह्मण के मुख में तथा अग्नि में आहुति के रूप में हवन किया जाता हैं, जो

मद्य सभी औषधियों से परिपूर्ण समुद्र के मंथन करने से देवताओं तथा असुरों के सहित लक्ष्मी, चन्द्रमा तथा अमृत के साथ मधु माधव ऐरेय सीघु शौद्र तथा आसव आदि के अनेक रूपों में मद्यशक्ति से युक्त उत्पन्न हुआ हैं, जिस मद्य को पानकर विलासिनी स्त्रियाँ अपने विलासिनी नाम को सार्थक करती हैं और कुलीन स्त्रियाँ भी जिसको पीने के बाद उद्धत-चंचल मनवाली हो जाती हैं और काम परिपूर्ण अपने अगों के प्रदर्शन से मुनियों के चित्त को भी विचलित कर देती हैं, जो मद्य एक के पान करने पर भी म द तरगों के टेढ़ी भृकुटी के तर्जनों से भाविनी के मन को प्रसन्न कर तथा दोनों(नर -नारी) के मन को प्रसन्न कर निवृत्त हो जाता हैं और अप्सराओं के समूह में अपनी इच्छा के अनुसार विजय प्राप्त करता हैं, जिसको पान कर मनुष्य योद्ध समर में तृण के समान प्राणों को त्याग दे ता हैं, जिस मद्य को अनेक प्रकार से अनेक बार अधिक दिन तक पीने के बाद भी प्रत्येक बार नवीन आनन्द के साथ उसको पूर्ववत् सेवन करते हैं, जिस मद्य को देखकर मनुष्य शोक, उद्वेग तथा अरित के भय से पराजित नहीं होता हैं, जिसके बिना गोष्ठी, महोत्सव तथा उद्यान सुभोभित न हीं होता हैं, जिस मद्य के बिना मनुष्य बार -बार स्मरण कर वियोगी के समान सोचने लगता हैं, जो अप्रसन्न होने पर भी प्रीति से प्रसन्न होकर स्वर्ग का अनुभव करता हैं, जिसके हृदय में स्थित होने पर मनुष्य दूर स्थित होने पर भी अपने को इन्द्र ही मानता हैं, जो अलौकिक स्वाद को आस्वादन कराने वाली उत्तम स्वयं वैद्य हैं, जो विचित्र अवस्था में होने पर भी प्रिया का अनुसरण करता हैं । जो मद्य विशेष रूप से मद्य प्रिय मनुष्य को सर्वप्रिय वस्त समझकर स्त्री से भी अधिक प्रिय होता हैं, मद्य प्रीति हैं, रति हैं, वाणी हैं तथा पुष्टि स्व रूप हैं, जिसकी स्तुति देव-दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस तथा मनुष्य करते हैं, मद्य पान में इस प्रकार मानव की प्रवृत्ति होने पर भी विधिपूर्वक शास्त्रोक्त एवं आयुर्वेदोक्त रीति से पान करे ।

सूत्र – जो भयंकर मेदोरोग, वात रोग तथा कफरोग हैं वे विधिपूर्वक मद्यपान से उत्पन्न नहीं होते हैं किन्तु वे रोग अविधिपूर्वक मद्यपान करने से शान्त नहीं होते ।

सूत्र – शरीर की एक वह अवस्था होती हैं जिसमें मद्यपान का निषेध किया गया हैं, किन्तु उस अवस्था में भी अनेक औषधियों से सम्पन्न निर्दोष निगदनाम मद्य का निषेध नहीं किया गया हैं ।

सूत्र – विधिपूर्वक बनाया हुआ आनूप मद्य के बिना पीये कैसे पच सकता हैं? अर्थात् बिना मद्यपान के अच्छी तरह नहीं पच सकता हैं । भयंकर वात व्याधि का नाश करने वाला लहसुन का मद्य कितना गुण करता हैं ? अर्थात् लहसुन की गुणात्मकता मद्य की सहायता से होती हैं । रोगी मद्यपान करने पर ही गहरे शल्य के निकालने, शस्त्रकर्म, क्षारकर्म तथा अग्निकर्म में चिकित्सक द्वारा दिये गये कष्ट को सुख पूर्वक सहन कर लेता हैं । अर्थात् सुखपूर्वक चिकित्सक

ने शल्यारण किया यह प्रं शसा मात्र हैं, दुःख न होने में मद्य पान सहायक हैं । मद्य जाठरग्नि को बढ़ाने वाला रूचिकारक और शोक तथा श्रम को दूर करने वाला हैं । इससे बढ़कर दूसरा कोई उत्तम-आरोग्य, बल तथा पुष्टि को करने वाला नहीं हैं । अतः संयमी पुरूष जीवन की रक्षा करता हुआ मद्यपान करे । यह मद्य आश्रितों तथा उपाश्रितों का हित करने वाला उत्तम धर्म का साधन हैं ।

हमसे जुडे लिंक

सब PDF पुस्तक 01

सब PDF पुस्तक 02

Zevyoq +917433906871